Chapter-3

अध्याय-३

डॉ. सूर्यदीन यादव का कहानी साहित्य : तात्त्विक विवेचन

सूर्यदीन यादवजी कहानियों की संक्षिप्त कथावस्तु

डॉ. सूर्यदीन यादव का साहित्य व्यक्तित्व गहन अनुभूतियों एवं तीव्र संवेगों द्वारा निर्मित हैं । डॉ. यादवजी उन रचनाकारो में नहीं है । जिनका साहित्य कॉफी हाउस या क्लबो में कल्पना के आधार पर रखा गया है । यादवजी ने समाज के सुख-दु:ख को अपनी रचना के पात्रो के बीच में रहकर स्वयं भोगा है । 'जा के पाँव न फटी वियाई सो क्या जाने पीर पराई, जो उक्ति इनके साहित्यकार को सार्थक करती है । इन्होंने समाज से कटु संत्रासों को भोगा है । दीन, दु:खी, श्रमिक, कुली, आश्रयहीन, भूखे, नंगो के साथ जीवन बिताया है । अत: इनकी कहानियों में इन पात्रों के दु:खों संवेदनाओं को मार्मिक रूप में यादवजी ने प्रस्तुत किया है ।

डॉ. सूर्यदीन यादवजी मूलत: कथाकार थे । यों वे एक कवि, उपन्यासकार और एक अच्छे निबंध लेखन की भूमिका में भी अपने समग्र साहित्य के माध्यम से हमारे सामने आते है, लेकिन उनका एक विशिष्ट लेखकीय व्यक्तित्व मूलत: कथाकार सा ही ठहरता है । उनके कथा साहित्य में, उनके कथासंग्रहो और उपन्यासो की संख्या लगभग एक दर्जन या उससे अधिक ही है । उनके कथा साहित्य के अवलोकन से एक बात स्पष्ट होती है, वह है उनके कर्मठ और संघर्षशील व्यक्तित्व के अनुरूप उनके कथा-साहित्य में चित्रित नये और संघर्षशील कथा-पात्रो की उपस्थिति । इन्हीं पात्रों के बल पर यादवजी ने अपनी कुछ अनूठी और दिलचस्प कथा कृतियों का सृजन किया था, जिनके सम्यक विवेचन के उपरांत ही उनके समग्र कथाकार व्यक्तित्व का मूल्यांकन किया जा सकता है। यादवजी की रचनाओं के बारे में श्रीमती शांति अय्यर लिखती है कि ''बहुआयामी अनुभव ही मेरे दृष्टिकोण से अंग बन रचना सृजन करते हैं । परम्पराओं की तह को तोड़ती हुई। नई रचनाशीलता मेरे निजी दृष्टिकोण का प्रतिधान है ।''[१]

सूर्यदीन यादव की कहानियाँ जिन्दगी को जटिलताओं, अभावो और भूख का 'सागर' है । उनके कहे हुए अनुभवो को देखकर लगता है कि वे अपने अनुभवों को जमा करते चले जा रहै हैं । वे जब भी अपना खजाना खोलेगें, अनुभवों और उनकी प्रमाणिकताओं का मोती-मणियो की तरह ढ़ेर लग जायेगा । यादवजी की कहानियों की विलक्षणता और विविधता हमें साफ-साफ दिखाई देती है । क्योंकि उनकी दृष्टि उस अछूते और उपेक्षित तिरस्कृत

वर्ग पर केन्द्रित हो जाती हैं जो अब तक हिन्दी कथा-साहित्य में स्थान नहीं पा सके ऐसे आम आदमी के जीवन का चित्रण उन्होंने किया हैं ।

डॉ. सूर्यदीन यादव के कहानीकार की सबसे बडी खासियत यह है कि उसमें ठीक जीवन की तरह ही तमाम रंग, छवियां और मुद्राएं है, और वे बार-बार अलग ढ़ंग से लुभाती है । उनकी कहानियाँ हर बार पढ़ने पर नई, कुछ और नई लगती है और उनमें नये-नये अर्थ खुलते और जगमगाते नजर आते हैं । डॉ. सूर्यदीन यादव एक ऐसे स्वातंत्र्य कहानीकार हैं, जिन्होंने हिन्दी कहानी क्षेत्र में लगन, निष्ठा, चरित्र, परिश्रम, संघर्ष एवं ताजगी के बल पर अपनी अलग पहचान बनाई हैं । इन्हें गाँव और नगर किसी से भी परहेज नहीं था । लगाव था तो ग्रामीण अंचल से । अंततः इन्होंने अपनी कहानियों में ग्रामांचल का सजीव चित्र खींचा है । दूसरी और अहमदाबाद जैसे महानगर की कुरुपताओं ने भी इनकी कहानियों में स्थान पा लिया है । यादवजी ने गाँव को भरपूर जिया है, भोगा है, लिखा है, तो अहमदाबाद और नड़ियाद की सीमाओं को भी जाना परखा है । इनका अभीष्ठ गाँव में जनजीवन, लोक-संस्कृति एवं परम्पराओं को हिन्दी जगत को अपनी कहानियों के माध्यम से देना रहा है । अतः इनकी ग्रामीण अंचल की कहानियों में वहाँ का पिछड़ापन, आर्थिक तंगी, इससे दुष्परिणाम एवं शोषण को अभिव्यक्ति मिली है । अपना अभीष्ट साकार करने के लिए यादव जी सुल्तानपुर अहमदाबाद तथा नड़ियाद में भटके हैं । अहमदाबाद निवास के दौरान मजबूरी में जिस्म बेचने वाली माँ-बहनों को देखा है । इन्ही बातों का यथार्थ चित्रण इनकी कहानियों में दिखाई देता है ।

डॉ. सूर्यदीन यादव की कहानी संग्रह की कथा का परिचय इस प्रकार है ।

(१) चित्रित नवीन कहानियाँ १९६९

(१) दोस्ती

(२) तमाशा

(३) झगड़ा

(४) शान की खातिर

(५) विद्यार्थी और अध्यापक

(६) हेठी

(७) माँ की लकड़ी

(८) कम्प्यूटर की लड़की

(९) मेरी प्रारम्भिक कहानी

(१०) लेरुवा

(११) लीलार

(२) पहली यात्रा कहानी संग्रह १९९१

(१) जन्म
(२) अपने आदमी
(३) ऊसर जमीन
(४) आम्बे बहार
(५) सच्चा घर
(६) किसानी
(७) पहली यात्रा
(८) इस्तीफा
(९) मंदिर और मस्झिद
(१०) ठनगन
(११) तालाब की मछलियाँ
(१२) बच्चे का बाप कौन ?
(१३) हमजोली

(३) वह रात कहानी संग्रह १९९८

(१) भीड़
(२) किरण
(३) दहशत
(४) ईख की कहानी
(५) गयावर के पेड़
(६) बिना बाप का बच्चा
(७) लौट आती कहानी
(८) दहशत का हथौड़ा
(९) परदेसी की एक रात
(१०) झोपड़ी का झरोखा
(११) जगत जहां गीता रचना
(१२) फाटक खुलने के इंतजार में
(१३) भैया

(४) दूसरा सफर कहानी संग्रह २००५

(१) पूजा
(२) पहली यात्रा
(३) चरण–स्पर्श
(४) दूसरा सफर
(५) चूहे बने साँप
(८) सिंह के बेटे उर्फ इण्टरव्यू एक नाटक
(९) अधूरी डायरी
(१०) काफी कुछ
(११) बदला
(१२) आँखे

(६) पलभर का सफर (१३) फर्ज

(७) बिना माँ का बच्चा (१४) नशा

सूर्यदीन यादव की 'चित्रित नवीन कहानियाँ'

१ - दोस्ती

सूर्यदीन यादव की चित्रित नवीन कहानियाँ कहानी संग्रह की पहली कहानी दोस्ती हैं, इस कहानी में लेखक ने लोटे में फँसी बिल्ली की छटपटाहट मात्र एक जीव की घबराहट और खटपटाहट न होकर बाल कथाकार करण के पूरे परिवार की छटपटाहट बन जाती हैं । लेखक ने इसका बखूबी वर्णन किया हैं ।

'दोस्ती' कहानी में लेखक ने कबरी बिल्ली और करण के बीच रही दोस्ती का वर्णन किया हैं । करन एक किसान पुत्र है । इसलिए पूरा दिन किसानी के काम में व्यस्त रहता है । रात के समय ढबरी के सहारे पढ़ता है । तभी वह देखता हैं । कि कबरी बिल्ली चूहें की तलाश में उसके घर जाती है । और शिकार के रुप में कोई चूहा न मिलने पर लोटे में खट्टा मठ्ठा पीने लगी । लेकिन संजोग वश मठ्ठा पीते समय उसका सिर लोटे में फँस गया । पीतल के लोटे का मुकुट धारण करके कबरी अंधी होकर छटपटाने लगी। बिल्ली की छटपटाहट की आवाज सुनकर करण कमरे में जाकर देखता हैं कि कबरी बिल्ली का सिर पीतल के लोटे में फँस गया हैं और उसमें से अपना सिर निकालने में छटपटा रही हैं । देखते - देखते परिवार के सभी सदस्य आ जाते हैं । और बिल्ली को बचाने के लिए गाँव के लोगो को बुलाने गये । क्योंकि उनका मानना था कि घर में बिल्ली का मरना बडा पाप माना जाता हैं । करण यह देखकर बहुत दुःखी था । जबकि उसकी बहन राजो को मजा आ रहा था । सच ही कहा कि "चिरई का जीव जाये बच्चों का खिलौना ।"[२]

तभी अचानक करन को युक्ति याद आई कि लोटे के गले में ड़ोरी का फन्दा बाँधकर पिताजी कुएँ से पानी भरते हैं । ठीक उसी तरह से लोटे के गले में ड़ोरी का फंदा बाँधकर बिल्ली को लकड़ी के सहारे कहीं लटका दिया जाये । बिल्ली उसमें से निकलने के लिए भरपूर कोशिश करेगी । और बिल्ली लोटे से निकल जायेगी । आखिर कार करन की युक्ति सफल होती हैं तथा बिल्ली लोटे से निकलकर धप से जमीन पर गिरकर बेहोश मुद्रा में पडी रहती है । तब करन अपनी बहन राजो को पानी लाने को कहता है । और पानी का छींटा बिल्ली पर मारता है । बिल्ली न चीखी न चिल्लाई, चुपके से मौका पाकर छत से भाग गई । बिल्ली का लोटे से निकलकर भाग जाते देख माता - पिता

खुश हो जाते हैं । तब से करण और कबरी बिल्ली के बीच गहरी दोस्ती हो जाती है। और जब भी कबरी बिल्ली करन के घर आती करन बड़े प्यार से उसके शरीर पर हाथ फेंर कर प्यांर करता ।

२. - तमाशा

'तमाशा' कहानी में लेखक ने गरीब लोग पापी पेट के लिए क्या - क्या नहीं करते इसका लेखक ने बखूबी वर्णन किया है । दूसरी तरफ तमाशा का मुख्य पात्र बना वह व्यक्ति समाज के समक्ष अपनी मजबूरी और लाचारी को दर्शाता हैं, पापी पेट के सवाल के लिए उसे क्या - क्या नहीं करना । कहानी पाठक के मन को छूती हैं । और आत्मचिन्तन करने के लिए विवश भी करती हैं ।

'तमाशा' कहानी में लेखक ने तमाशा दिखाने वाले उस्ताद और एक छोटे बालक के जीवन को वाणी दी हैं । भूख के कारण ड़मरु की ताल पर दस वर्षीय बालक के नाचने का दृश्य लेखक को झकझोर देता हैं । यह उम्र बालक की विद्यालय जाकर विद्या प्राप्त करना तथा खेलने कूदने की हैं । उस उम्र में वह गडे खडे बाँस पर चढ़ने के लिए कमर कसता हैं । वह हाथ पैर के सहारे बाँस पर चढने की कोशिश करता हैं । कई बार गिरता है फिर बाँस पर चढ़ जाता है । दर्शक हैरान हैं कि यह बाँस पर कैसे चढ़ेगा। लेकिन वह बाँस की नोंक पर बन्दर की तरह जाकर बैठकर तमाशा दिखाने लगा । तमाशा पूरा होने पर पंजो, दसिया, चवन्नी, अठन्नी और रुपये की वर्षा हुई । बिछी चादर पर पैसे बरसते हैं । उस्ताद डमरु बजाते हुए घूमकर पैसा माँगता हैं । तभी एक डरावनी आवाज से सभी अहदंक उठते हैं । लड़के को बिजली के करन्ट ने ऐसे चिपका लिया है कि वह हंमेशा के लिए चला गया । नौकरी आदमी को बिजली के करन्ट की तरह तपाक से खींचती है और पेट के लिए आदमी को आन ड्यूटी होना ही पड़ता है । लेखक सोचते है कि चिकवा से भी बेरहम भगवान कहा जा सकता हैं । चिकवा बकरी की गरदन पर बड़ी बेरहमी से छूरी चलाता हैं और बकरी पैर झटक - पटककर छटपटा मिमिया कर शांत पड़ जाती है । उसी तरह यह आदमी भी झटपटा कर मर गया । लेकिन तमाशबीन लोग कहते है कि शायद भगवान को यही मंजूर था लेकिन यह नहीं सोचते कि हाथ में रबर का दस्ताना पहनकर चढ़ा होता, तो शायद यह हादसा नहीं होता । गाँव या शहर में आये दिन इस प्रकार की घटनाएँ घटती रहती है और लोग हैं कि तमाशे की तरह इस घटना को मूक साक्षी बनते देखते रहते ।

३. – झगड़ा

'झगड़ा' कहानी में मानवीय मूल्यों के अवमूल्यन का सुन्दर चित्रण हुआ है । सताये जा रहे किसी निर्दोष और असहाय के रक्षार्थ बाल कथाकार की विवशता, लाचारी का सुन्दर निरुपण इस कहानी में लेखक ने अपने बाल्यकाल के दौरान उठाये गये गरीबी का वर्णन किया हैं कि जब वे स्कूल जाते थे तब उनके पैरों मे जूते तक नहीं थे । माता जी – पिता जी से जूते लाने की बात करती तब पिताजी कहते कि महुआ खूब फरा हैं । उसे बिनकर लाये और उसे बेचने से जो पैसा मिलेगा उससे जूता ला दूँगा ।

इसलिए लेखक सुबह उठकर महुँआ बिनने जाते तथा महुआ बिनते समय अपनी बहन तथा मित्रों से कई बार झगड़ा भी करना पड़ता । लेकिन वही महुआ जब सूखकर डेलवा भरा महुआ मउनी भर हो जाता तो लेखक का मन बैठ जाता । बचपन में लेखक ने महुए के झगड़े, कुसुली के झगड़े आम के टिकारों के झगड़े, सीपराहे आमों के झगड़े, पके आम के झगड़े । खेल के झगड़े और पता नहीं कैसे – कैसे झगड़े किये । एक बार गुल्ली डंडे के झगड़े में लेखक की आँख फूटते – फूटते बच गयी थी । उसमें लेखक के मित्र झगरु की गलती नहीं थी । फिर भी लेखक के पिताजी ने झगरु को ही डाँटा था।

लेकिन आज कोई गुल्ली डंडा का झगड़ा नहीं था । ककरीले मार्ग पर लेखक के कई सहपाठी जा रहे थे । और झगड़े के बारे में ही बात – चीत कर रहे थे । कि लेखक के मित्र सूरज को एक लड़का साइकल लेकर आया तथा साइकल से नीचे उत्तरकर उसका कोलर पकडकर उसे मारने लगा । लेखक तथा उसके मित्र चाहकर भी सूरज को बता नहीं पाये । जैसे ही लेखक सूरज को बजाने के लिए एक कदम आगे बढ़ा । वैसे ही उस लड़के ने कहा, 'जो भी मेरे झगड़े के बीच में पड़ेगा उसे भी मैं मारुंगा' । रास्ते में चलते – चलते लडको ने पिटे दोस्त को आडे हाथों लिया । क्योंकि उसने अपने प्रतिद्वन्दी को एक भी तमाचा नहीं मारा था । दोस्त काफी शर्मिन्दित था । तिपोसी और कटाक्ष की बोली जब उससे बर्दास्त नहीं हुई तो उसने खीझकर कहा – अरे मैं तो उसे अपना सम्बन्धी समझकर छोड दिया, वरना..... देखना कल उससे बदला लूँगा और उसे मजा चखाउँगा ।

५. शान की खातिर

'शान की खातिर' कहानीकार सूर्यदीन यादव की चित्रित नवीन कहानियाँ संग्रह से ली गई है । इस कहानी में विद्यालय में अपनी शान बढ़ाने के लिए नरेश हाथ में हाँकी लेकर घूमता हैं तो राजन अपनी शान बढ़ाने के लिए उससे हाँकी देखने को माँगता

है । नरेश कहता हैं कि हॉंकी तुमने कभी नहीं देखी यह बात सुनकर एक कहावत जग जाहिर है कि – "जान भले चली जाये, शान कभी न जाये ।"[३] को यथार्थ करती है। राजन कहता हैं कि हॉंकी का दादा मेरी जेब में रखा है । इस बात को सुनकर नरेश तुरन्त ही राजन का हाथ पकड़कर मोड़ देता है । और उसके जेब में हॉंकी का दादा क्या रखा है । यह जानने के लिए जेब में हाथ डालता है । तो जेब में रामपुरी चाकू निकलती है चाकू देखकर सभी आश्चर्य चकित रह जाते है तथा राजन शर्मिदा हो जाता है । नरेश चाहता तो राजन पर वार भी कर सकता था । लेकिन उसने राजन पर वार नहीं किया । सभी बालक सहमी आँखो से देखते हैं कोई भी छुड़ाने की कोशिश नहीं करता है । तभी लेखक स्वयं आगे बढ़कर उन्हें छुड़ाने की कोशिश करते है । और फिर रामपुरी चाकू निकालकर प्रिन्सपल के पास जमा करा देते हैं । प्रिन्सपल साहब राजन को चेतावनी देते हैं कि आज के बाद विद्यालय के प्रांगण में चाकू जैसे हथियार लेकर आये तो तुम्हारा नाम विद्यालय से काट दिया जायेगा । राजन भले ही कमजोर था, पर अच्छे – अच्छों के दाँत खट्टे कर सकता था । वह नरेश के सामने किसी भी संजोग में झुकना नहीं चाहता था । लेकिन नरेश ने उसकी हेकडी निकाल दी । जैसे ही जेब से रामपुरी चाकू उसके निकाल लिया । विद्यालय के प्रांगण में उपस्थित सभी छात्र तालियाँ बजाने लगे । तालियों की आवाज सुनकर नरेश का हौंसला और भी बढ़ गया । इस प्रकार लेखक ने शान की खातिर कहानी में लेखक ने दो बाल योद्धा नरेश और राजन की वीरता का बखूबी वर्णन किया हैं ।

५. विद्यार्थी और अध्यापक

'विद्यार्थी और अध्यापक' कहानी में लेखक ने एक ओर आचार्यत्व का अवमूल्यन और दूसरी तरफ सच्चे शिष्य की महिमा का सांगोपांग वर्णन किया गया है । यह कहानी आज के विद्यार्थी और अध्यापकों को नई राह, नई रोशनी देने में सक्षम है ।

'विद्यार्थी और अध्यापक' कहानी में लेखक ने गाँव के अध्यापको की मानसिकता का वर्णन किया हैं । लेखक जब नवीं कक्षा में पढ़ते थे तब उनके साइन्स के अध्यापक किस प्रकार से अलग – अलग गाँव, अलग – अलग जाति से आये विद्यार्थी को स्वीकार कर लेते हैं । लेकिन कोई छोटी, कोई मोटी, कोई लम्बी, कोई चौड़ी, कोई सादी, कोई सलदार उनकी कापियाँ उन्हें पसन्द नहीं हैं । जब कि कुछ विद्यार्थी गोमती नदी की तराई से कुछ छात्र ऊँचास वाली जमीन की ओर दक्षिण से पढ़ने आते हैं । इसलिए एक जैसी कापियां लाना उनके लिए सम्भव नहीं था । तब अध्यापक साहब छात्रों को कहते हैं कि

आप सब लोग कापियाँ खरीदने के लिए पैसे मेरे पास जमा कर दे । मैं आप सबको काँपियाँ खरीदकर दे दूँगा । छात्र बडी निष्ठा से पैसे इकट्ठा करके अध्यापक साहब को दे देते हैं । ठीक पन्द्रह दिन बाद मास्टर जी ने कापियाँ लाकर छात्रो को दे दिया । सबको दी गई कापियाँ एक जैसी थी । लेकिन सभी लड़को को कापियाँ नहीं मिली । अभी काफी लड़कों को कापियाँ देनी थी । लड़को द्वारा दिये गये कुल रुपयों का योग दो सौ चौवालिस होता था । वर्ग के लड़कों की संख्या चालीस थी, मास्तर साहब ने मात्र बीस लड़को को ही कापियाँ दी । बाकी पैसा चाऊ कर गये । छात्र आँख बिछाये बैठे थे कि अब मास्टर साहब कापियाँ देगे । लेकिन पूरा साल बीत गया । मास्टर साहब ने कापियाँ नहीं दी । छात्रों ने संकोच वश कापियाँ नहीं मांगा । सालाना ईम्तहान बादलों की तरह सिर पर मँडरा रहा था । उस समय भी मास्टर यही कहते थे कि जिन लड़कों को कापियाँ नही मिली, वे घबराये नहीं । शीघ्र ही उन्हें कापियाँ मिल जायेगी । फिर भी छात्रों ने मास्टर जी से कोई शिकायत नहीं की । दसवीं कक्षा का अगस्त महीना आ गया फिर भी मास्टर साहब ने कापियाँ नहीं दी । यहाँ तक मास्तर साहब का ट्रान्सफर हो गया । फिर भी यही चिल्लाते रहे कि जिन छात्रों को कापियाँ नहीं दी गई है । उन्हें शीघ्र ही कापियाँ मिल जायेगी । इस प्रकार से मास्टर साहब ने अपने चरित्र से अध्यापकों का नैतिक पतन किया है ।

६. हेठी

'हेठी' कहानी में कहानीकार ने सामाजिक और मानवीय सम्बन्धो को टूटने तथा उसको बिखरने का जीता जागता वर्णन किया है ।

लेखक के गाँव में एक बूढ़ा बैल अपनी मौत मर जाता हैं लेकिन गाँव के चौधरियों ने एक निर्दोष आदमी पर दोष लगाकर उसका हुक्का पानी बन्द करवा दिया है । मनुष्य ही मनुष्य को स्वयं से जब हेठ समझने लगता है । तब कोई नई क्रान्ति जन्म लेती है। लेखक ने इसका वर्णन किया है । लेखक त्रिवेणी संगम इलाहाबाद में स्वाध्याय परिवार की तरफ से स्नान करने गये । वहाँ पर जिन महाशय के घर रुके थे । गाँव के ब्राह्मणों ने उनका भी हुक्का पानी बन्द करवा दिया था । जब कि ये लोग आत्ममिलन के लिए गये थे । किसी की हेठी करने नहीं । प्रोफेसर छब्बेजी ब्राह्मण होते हुए भी इतिहास के प्रोफेसर क्यों हैं ? ऐसा प्रश्न जब उन्होनें उनसे पूछा तो उन्होनें बताया कि संस्कृत भाषा पढ़ाना यहाँ के लोगो को ठीक नहीं क्योंकि ये लोग अपने - अपने मढ़ाधीश के पास से ही संस्कृत पढ़ लेते हैं । तभी ईर्ष्यानंद चौबे जी लेखक को मिले। तब उन्होंने कहा

कि यहाँ के कितने छात्रों को अब तक आपने संस्कृत भाषा सिखाई ? तब उन्होंने कहा कि मैं गाँव - ग़ाँव जाकर कथा भागवत सुनाता हूँ । उसी से मुझे फ़ुरसत नहीं । लेखक के यह कहने पर कि सिर पर लम्बी चोटी और माथे पर तिलक क्यों लगाया हैं वे बताते हैं कि यह तो ब्राह्मणत्व की निशानी हैं । इसे देखकर गाँव के छोटे से लेकर बडे लोग पैलगी करते हैं । अर्थात ब्राह्मण लोगों के पास शास्त्र का मूल कोई ज्ञान नहीं हैं । सिर्फ मान - सन्मान प्राप्त करने के लिए समाज रुपी ब्राह्मण का चादर ओढ़ रखे हैं । यही कारण हैं कि समाज में जाति - पाँति धर्म के नाम पर आपस में लोगों को लड़ाकर मस्ती से घूमते हैं । जब लेखक ने ब्राह्मण देवता से गाँव में सामाजिक एकता स्थापित करने को कहा, कि पानी तो प्राकृतिक देन हैं जब सब खून एक रंग का हैं फिर किसी की हेठी का प्रश्न ही नहीं उठना चाहिए । लेकिन पंड़ित जी कहते हैं कि अगर मेरे जैसा ये लोग पढ़ लिख लेगे । सामाजिक बन्धन समाप्त हो जायेंगे तो मुझे पैलगी कौन करेगा ।

७. माँ की लकड़ी

'माँ की लकड़ी' कहानी में लेखक ब़ड़ौदा की पवित्र भूमि पर स्वाध्याय परिवार के अग्रणी दादा जी का प्रवचन सुनते हैं । माँ सरस्वती के लाडले सपूतों, आप सबको अपनी माँ प्यारी होंगी । जिसने आपको जन्म दिया । जिसकी गोद में खेले, जिसके आँचल के साए में पले । खेल - खाकर छोटे से बडे हुए । जिसका स्नेह आज भी आपकी रगो में बह रहा है । जिसके वात्सल्य से आपका जीवन प्रवाहित है । उस पूजनीय माँ को आप सब भूला बैठे है । वह माँ सिर्फ जनेता ही नहीं, धारित्री है । हमारी माँ भारतीय संस्कृति का प्रतीक है । किन्तु अपनी माँ के सामने सिर क्यों झुक जाता है । हमने आज तक अपनी माँ के लिए किया क्या ? यदि हम अपनी माँ की रक्षा नहीं कर सकते तो हमें सन्तान कहलाने का क्या अधिकार है । यदि माँ संस्कृति पर कोई आँच आई तो ...... । हमारी संस्कृति छिन गई तो ! यह वाक्य सुनकर लेखक की आँखे ड़बड़बाआई एक माँ अपनी भी है जो गाँव में रहती हैं । हमारी नजरों से दूर । किसी घोर अंधकार में उस माँ ने हमें बहुत कुछ दिया हैं । उसी ने सरस्वती की उपासना की सीख दी। अंगुली पकड़कर अक्षर ज्ञान कराया । उस माँ की प्रेरणा एवं आर्शीवाद से माँ सरस्वती का उपासक बना । विद्या को प्राप्त कर सका । और तो और मैं माँ की लकड़ी भी बन न सका । कल तक माँ किसी लक़ड़ी के सहारे चलती थी । आज वह स्वार्थी लकडी भी माँ का साथ छोड़ गई । इसलिए लेखक अब माँ की लकड़ी बनना चाहता

है । तो दूसरी ओर पाण्डे जी जैसे व्यक्ति जबरदस्ती अपनी लड़की की शादी दहेज देकर करना चाहते है । यहाँ पर लेखक बताना चाहते है कि शिक्षित लोग भी परम्परावादी बनें हुए है । यहाँ पर 'माँ की लकड़ी' कहानी केवल एक माँ की कहानी नहीं हैं । वरन हर एक माँ की पीड़ा और संवेदना को अपने में समेटे हुए । नई पीढ़ी के पुत्रों की दशा एवं दिशा का बोध कराती है । 'लकड़ी' मात्र लकड़ी ही नहीं बल्कि ममतामयी माँ के 'सच्चे सहारे' की द्योतक बन जाती है । लकड़ी के मूल्यों को समझना ही जीवन की सार्थकता का परिचायक हैं ।

८. कम्प्यूटर की लड़की

'कम्प्यूटर की लड़की' कहानी सूर्यदीन यादव की चित्रित नवीन कहानियाँ संग्रह से ली गई हैं । इस कहानी में लेखक आधुनिक लड़की से गाँव की घास छीलने वाली लड़की तक का यथार्थ सौन्दर्य स्वरुप व्यक्त करता हैं । वैज्ञानिक चकाचौंध और ग्रामणीय सहजता, सरलता एवं निश्छलता का यथार्थ चित्रण कहानी को नूतन गति देता हैं।

लेखक 'कच्चाघर' कहानी का कंपोज कराने के लिए जाते हैं । तभी देखते हैं कि एक लड़की कम्प्यूटर पर बैठकर बडे तेज गति से कहानी को कम्पोज करती है । लेखक बड़े ध्यान से कभी उस लड़की को कभी उसकी उँगलियों को देखते हैं । देखते ही देखते लेखक को कम्प्यूटर की लड़की एक पेज कम्पोज प्रूफ करने के लिए देती है तथा कहती है कि आपकी कहानी 'कच्चा घर' बहुत ही अच्छी है । तब लेखक उसे बताते हैं कि बाल्यावस्था में उसके साथ खेलने वाली और घास छीलने वाली सुपती की यह दर्द भरी कहानी है । तभी कम्प्यूटर की लड़की लेखक से कहती है कि संजोग से उसका नाम भी सुपती है तथा अपनी कहानी बताती है कि पिता के मर जाने के बाद उसकी माता दूसरों के घर में बर्तन मांजकर घर चलाती हैं तथा वह जो भी रुपये कमाती है । उसे संजोकर अपनी शादी के लिए रखती है । बातों ही बातों में लेखक को उस लड़की पर दया आ जाती है । तब उससे पूछते हैं कि मालिक उसे वेतन कितना देते हैं । तब वह बताती हैं । कि एक पेज कम्पोज करने का एक रुपया देते हैं । पूरे दिन में वह दस रुपये का काम कर लेती है । दस रुपये साज – श्रृंगार के जमाने में बहुत ही कम है । लेकिन वह बहुत ही किफायत से काम चलाती है । लेखक की आँखे खुली की खुली रह जाती हैं । क्योंकि लेखक कम्प्यूटर के मालिक को एक पेज कम्पोज करने का दस रुपये देते हैं जब कि वह लड़की को एक रुपया देता हैं । अर्थात् लड़की

पूरे महीने तीस हजार रुपये का काम करती है । तब कम्प्यूटर का मालिक उसे महिना का एक हजार रुपये वेतन देता है लेखक महसूस करता है कि सेठ लोग मजदूरों का कितना अधिक शोषण करते हैं । और उसे ऐसा लगता है कि इन शहर की लड़कियों की अपेक्षा तो गाँव की लडकियाँ घास छीलकर दिन में पन्द्रह रुपये का काम कर लेती है अर्थात् शोषण हर एक जगह पर होता हैं । ऐसा लेखक महसूस करते हैं ।

९. मेरी प्रारम्भिक कहानियाँ

मेरी प्रारम्भिक कहानियाँ कहानी सूर्यदीन यादव की 'चित्रित नवीन कहानियाँ' संग्रह मे से ली गई है । इस में पाठक के मन में उठते सवालों के संदर्भ में लेखक ने बताया है कि कहानी कौन बनाता है ? उसका आधार क्या होता है ? उनके लिये कच्चे मसाले कहाँ जुटाने एवं चुनने पड़ते हैं ? इन सारे सवालों का जवाब उन्होंने शान की खातिर 'कहानी' 'अपने आदमी' 'झगड़ा' आदि कहानियों का उदाहरण दे-देकर उजागर किया है कि जैसे रसोईघर में भोजन बनाने के लिए सामग्रियाँ-दाल, चावल, पिसान और मसाले लेकर किसी अनुपात में कोई नयी वानगी बना दी जाती है । उसी प्रकार से कहानी भी स्वयं निर्मित हो जाती है । 'दोस्ती कहानी' के माध्यम से लेखक ने बताया है कि कबरी बिल्ली से लेखक की कोई जान पहचान नहीं थी लेकिन जब वह मट्ठा पीने के लिए लोटे में अपना सिर डालती है और फँस जाती है तब उसे बचाने की कोशिश में देखते ही देखते कबरी बिल्ली से लेखक की दोस्ती हो जाती है तो दूसरी और 'तमाशेबाज' तमाशा कहानी में भी छोटे से बालक का तमाशा देखते-देखते जब उनकी आँखो के सामने ही एक वायरमेन बिजली के खम्भे में चिपक जाता है और लोग तमाशे की तरह देखते हैं पर कोई भी उसे बचाने की कोशिश नहीं करता है । ये सारी कहानियाँ लेखक ने अपने जीवन में जो भी देखा उसी को शाब्दिक रूप दे दिया है । रही बात आधार परिवेश की, ऐसा नहीं हो सकता है कि बिल्ली बम्बई महानगर की किसी बड़ी हवेली में फँसी हो और लेखक गाँव के किसी कच्चे घर में बैठा हो । आप देख पायेगें कि बिल्ली लेखक के कच्चे घर में ही लोटे मे फँसी है । बिल्लिया-तितलियाँ आज भी फँसती हैं । लेकिन सबकी कहानी नहीं बनती है । मेरी तरह आप भी तमाशवीन बने रहते हैं । पर मन जब उसे बचाने के लिए छटपटाने लगता है, तभी कोई नई कहानी आकार लेती हैं और कहानीकार जन्म लेता है । आगे लेखक कहते हैं कि आपके आस-पास भी इस तरह की कई कहानियाँ मिल जायेंगी उसको स्पर्श करके कहानी का रंगरूप दें ।

१०. लेरुवा

'लेरुवा' कहानी में कहानीकार सूर्यदीन यादव जी ने पशु और मानव के मध्य उपजे पवित्र प्रेम, अपनापन व चाह का सुन्दर चित्रण करते हुए कहा है कि एक छोटे से बालक का दूसरे शिशु के प्रति प्रदर्शित प्रेम, हृदय को रसमय एवं वात्सल्यमय बना देता है ।

लेखक की बाल्यावस्था में लेखक जब छोटे से बालक थे तब उनकी माता ने एक ललकी गाय पाल कर रखा था । वही ललकी गाय एक लेरुवा जन्म देती है । उसका रंग बरफ की तरह एकदम श्वेत था । लेखक इस लेरुवा को बहुत चाहते थे । जब वे पढ़ने बैठते थे तब लेरुवा को भी पढ़ाने की चेष्टा करते थे । लेकिन जब लेरुवा नहीं पढ़ता तब अपनी माता से शिकायत करते कि लेरुवा पढ़ता नही है । तब लेखक की माता लेखक को कहती कि 'पहले उसे लिखना सिखाओ । तब लेखक लकड़ी की कलम जबरजस्ती लेरुवा के मुँह में ठुस देते । लेरुवा भी खाने पीने की चीजवस्तु जानकर पहले उसे मुँह में दबाये रखता बाद में छोड़ देता और कलम जमीन पर गिर जाती है। फिर लेखक माता से शिकायत करते कि लेरुवा लिखता नहीं है । तब लेखक की माता कहती है कि ठीक है पहले लेरुवा को पढ़ना सिखाओ तब लेखक जोर से चिल्लाते 'क' से कबूतर और लेरुवा से भी पढ़वाने की कोशिश करते । उस समय लेखक पहली कक्षा में पढ़ते थे । इसलिए उन्हें पता नहीं था कि जानवर बोल नहीं सकते । धीरे-धीरे लेखक का लेरुवा के प्रति प्रेम बढ़ता गया । एकदिन लेखक की माताने लेखक को कहा कि जाकर खेत में ललकी को चरा ला । लेकिन लेरुवा को ललकी से दूर रखना नहीं तो सारा दूध पी जायेगी । लेखक भी आज्ञाकारी पुत्र की तरह माता की बात मानकर लेरुवा को ललकी के पास जाने नहीं देते । लेकिन जब गाय चराते-चराते भूख लगती तब पेड़ का पत्ता तोड़कर उसका दोना बनाकर ललकी के थन से दूध दुहकर चुपके से चोरी से पी जाते । ललकी भी लेखक के इस कार्य मे सहयोग देती और जब लेखक थन से दूध निकालकर पीते तो जरा भी लात नहीं मारती । शाम को जब माता गाय दुहती तब गाय दूध कम देती उनकी माता गाँव की परम्परा के अनुसार ओझाइन से दिखाकर ललकी की झारफूँक करवाती । ओझाइन कहती हैं कि आपके पडोसी ने मैली विद्या कर दी है इसी कारण ललकी दूध कम देती है । तब वही उपस्थित लेखक जोर से चिल्लाते है कि यह बात झूठ है । तब उनकी माता उनका मुँह दबा देती हैं । इसी बात को लेकर लेखक की माँ घर आकर पड़ोसी से खूब झगड़ा करती है तथा ओझाइन के बताये अनुसार नीबूं को काटकर तथा फूलों को लेकर चार रास्ते पर डाल आती है । एक दिन संजोगवश एक चरवाहे ने लेखक को दोने में ललकी का दूध पीते हुए देख

लिया और जाकर उसकी माता को बता दिया तभी उनकी माता को यह बात समझ में आ गई कि आजकल ललकी दूध कम क्यों देती है । शाम को जैसे ही लेखक ललकी चराकर घर आते है । लेखक से उसकी माता इस बात की पुष्टि करती है । पहले तो लेखक आना-कानी करते हैं लेकिन बाद में सच्-सच बता देते है कि जब भी उन्हें भूख लगती थी वे ललकी का दूध गारकर पी जाते थे । तब उनकी माता कहतीं है कि तुम्हें दूध पीने का इतना शौक है तो मुझे क्यों नहीं बताया ? चलो घर के अंदर मैं तुम्हें पेटभर दूध पिलाती हूँ ।

११. लीलार

'लिलार' कहानी में कहानीकार सूर्यदीन यादवजी बताना चाहते है कि कुएँ के सबसे ऊपरी किनारे को लिलार कहा जाता है लेकिन गाँववालो की संकुचित विचारधारा एवं अंधश्रद्धा के कारण कुँए की लीलार मस्तक की लीलार हो जाती हैं ।

'लीलार' कहानी में कहानीकार बताना चाहते है कि गाँव के लोग कुँए की चौखट को ऊँचा नहीं करते बल्कि उस पर लकडी की चौखट बना देते है । लीला उसको घर की चौखट समझ कर घर में प्रवेश करना चाहती है और धम् से कुए के अन्दर गिर जाती है । धम् की आवाज सुन हरखू चौंककर टीनू से पूछता है कि कुँए के अन्दर क्या फेंका है ? लेकिन तुरन्त ही मनहर काका को शंका हो जाती है वे घर में चारों तरफ लीला को ढूँढ़ने की कोशिश करते हैं । जब घर में लीला कहीं नहीं मिली तब उनकी शंका प्रबल हो जाती हैं तथा कुँए में कूदकर लीला को बचाने की कोशिश करते हैं । उस समय भी गाँव वाले सहानुभूति प्रकट करने की अपेक्षा काना-फूँसी करते है तथा हँसी मस्करी करते है । देखते ही देखते मनहर काका लीला को कुँए से निकाल बाहर लाकर उसे रजाई से ढ़ँककर पेट के अन्दर का पानी निकालते हैं तभी उसकी माता से कहते है कि लीला अभी सो रही है उसे जगाना मत । वह अपने आप जाग जायेगी। थोड़ी देर में ही लीला होश में आ जाती है तब उसकी माँ उसे गोद में उठा लेती है। तभी एक बाबा भिक्षा मांगने आते है । लीला की माँ लीला को बाबा के पास ले जाकर बाबा को आशीर्वाद देने की बात कहती है तब बाबा कहते है कि अभी-अभी आपकी लड़की भारी मुसीबत से निकलकर बाहर आई है लेकिन अब उसका भविष्य उज्जवल है यह वाक्य सुनकर लीला की माँ बाबा को सीधा (पिसान) देती है तब बाबा चले जाते हैं हरखू को जब यह बात पता चलती है तब कहते हैं कि कुँए की ऊँची सतह पर जल्दी ही लीलार बनाना पडेगा नहीं तो ऐसी कितनी ही लीलाएँ कुँए मे गिर जायेगी

और ये ढ़ोंगी बाबा लोग गाँव को अंधश्रद्धा में बाँधे रखेगे, कि उनके प्रताप से बालक या बालिका बच गयी ।

२. पहली यात्रा कहानी संग्रह १९९१

(१) जन्म :

'जन्म' कहानी सूर्यदीन यादव की 'पहली यात्रा' कहानी संग्रह से ली गई है । इस कहानी में कहानीकार ने ग्रामीण वातावरण में रह रहे मोहन और उसकी पत्नी तथा माता के जीवन की व्यथा-कथा को वाणी दी है । 'जन्म' कहानी में ढ़ाहा गाँव की तमाम असुविधाओं की ओर लेखक ने संकेत किया है । २१ वीं सदी के युग में भी गाँव आवश्यक सुविधाओं से वंचित है । वहाँ के लोग आज भी गाँव की रुढ़िगत परम्पराओं पर विश्वास करते हैं । यही कारण है कि जब मोहन की पत्नी का प्रसूति होती है । उस समय उसकी माता डॉक्टर न बुलाकर गाँव की नाउन पर अधिक विश्वास करती है । और कहती है कि डागडर से ज्यादा यहाँ की औरतें करघाँटी जानती है । तो दूसरी ओर मोहन अपना गुस्सा मन ही मन नेताओ पर उतारता हुआ कहता है कि आजादी मिले पचास साल पूरे हो गये हर चुनाव में नेता कहते है । गाँव - गाँव अस्पताल, विद्यालय व बिजली इत्यादि की सुविधा दी जायेगी । लेकिन उनके गाँव में आज तक कोई अस्पताल नहीं है । तथा दूसरी और उसकी माता डॉक्टर को बुलाने से मना करती है । माता की इच्छा न होते हुए भी मोहन जल्दी से डॉक्टर को बुलाकर लाता है । इस पर उसकी माता कहती है कि जो औरत घर के सदस्यों के सामने घूँघट करती है । अपना मुँह तक नहीं दिखाती वही औरत प्रसूति जैसे वक्त पर डॉक्टर से कैसे बेपरदा हो सकती है । लाख प्रयत्न करने पर मोहन की माता डॉक्टर को उसकी पत्नी की इलाज करने का मौका देती है । उसके बाद मोहन के घर एक होनहार बालक का जन्म होता है । ग्रामीण परम्परा के अनुसार गाँव की औरतें आकर सोहर गाती है । तब मोहन सोचता है कि मेरे जन्म होने पर भी इसी प्रकार का सोहर गीत गाया गया होगा । तथा पंडित को बुलाकर पत्रा देखकर लड़के का नाम भोलानाथ रखा जाता है ।

(२) अपने आदमी :

'अपने आदमी' कहानी में लेखक ने गाँवों में ठाकुरों के बढ़ते वर्चस्व का वर्णन किया है । इसीलिए ढ़ाहे काका कहते है कि हे राम बेगारी से कब फुर्सत मिलेगी ? इन लम्मरदारों के मारे न तो ठीक से खेती बारी हो पाती है, न सुख चैन से रहने मिलता

है । पूरे गाँवो में लम्मरदारों का दबदबा है । कोई भी काम हो संदेश भेजते ही सारे मजदूर अपना काम – धंधा छोड़कर उनके खेतों में काम करने को हाजिर है । अगर काम करने न जाये तो उन पर लम्मरदारों की लाठियाँ बरस पड़ती । यही कारण है कि आज ढ़ाहे काका लम्मरदार के खेतों में काम करने जाना नहीं चाहते लेकिन उन्हें 'कुबरा' याद आता है जिसने जाने से मना कर दिया और लम्मरदारों ने आम के पेड़ में बाँधकर उसे मारा था । तथा गाँव वाले चाहकर भी डर बस उसे बचा नहीं पाये । ये दृश्य देखकर ढ़ाहे काका की आँखे आर्द्र हो आई । लम्मरदार की आवाज सुनते ही पुरवा के सब आदमी आदमी अपने-अपने हल-बैल लेकर निकल पड़े । देखते-देखते लम्मरदार के खेतों में बाइस हल एक साथ चलने लगे । लम्मरदार एक पेड़ की छाया में चारपाई डालकर इन मजदूरो पर निगरानी रखते तथा थोड़ा भी आराम करने का मौका न देते । देखते ही देखते बारह बज गये । सबने अपने हल-बैल खड़े कर दिये । दो बीघा खेत जोतने को बाकी रह गया था । लम्मरदार अमानुषी व्यवहार करते हुए उन्हें गालियाँ देते हुए बोले जब तक पूरा खेत जुत नही जाता कोई खेत के बाहर नहीं जायेगा। डर-बस फिर बाइसी घूमने लगी बेचारे सब के सब थककर चूर हो गये । कार्तिक का घाम भी चिनगी सा लग रह था । तिस पर सूरज से ज्यादा तो लम्मरदार तप रहे थे। बैल कड़कती धूप मे किचकिचा कर हल खींच रहे थे । बदन से पसीना तर-तर चू रहा था। लेकिन लम्मरदार को दया न आती थी । तिस पर भी लम्मरदार इन मजदूरो को अपना आदमी समझते । लेकिन अपनत्व का व्यवहार न करते । वही लम्मरदार चकबन्दी होने पर खेत कम हो जाने पर तथा उनका लड़का संजय अलग हो जाने पर खेती बँट जाती है । तथा गाँव मे भी जग्गू जैसे मजदूर शहरों मे पढ़कर आने के कारण नई-चेतना आ गई है । और जब लम्मरदार संजय मजदूरी करने के लिए गाँव के मजदूर पर लाठी मारता है तब जग्गू उसकी लाठी छीनकर पलट वार करता है । तथा जैसे-तैसे संजय वहाँ से भागकर जाते है । दूसरी तरफ चौधरी का लड़का विद्यालय से आने के बाद भी पिता का हाथ बटाता देखकर लम्मरदार सोचते है कि मेरा बेटा संजय कपूत निकला । एक जमाना था । जब ये सभी मेरे आदमी थे । मेरे कदमों पर चलते थे । अब मेरे कोई नहीं है । अब ये खुद अपने – अपने घरों के, अपने परिवार के, अपने पशुओं के, अपने खेतों के, अपने गाँव और अपने देश के अपने आप में आदमी हो गये है ।

(३) ऊसर जमीन :

'ऊसर जमीन' कहानी में लेखक ने संवरकी की दयनीय स्थिति का वर्णन किया है । जिसके माता-पिता का बचपन में ही देहान्त हो गया । बाप की इकलौती सन्तान

थी । खेत-बारी, घर द्वार पट्टीदारों ने हड़प लिया । बुधुआ उसे भगाकर अपने गाँव लाता है । लेकिन अपने भाई सुधुआ के जुल्मों के कारण गाँव छोड़कर शहर भाग जाता है।

सुधुआ का भाई बुधुआ परदेश भाग गया । जिससे अब सँवरकी का कोई सहारा नहीं रहा । सुधुआ उसे डंडे से मारता रहता है । उसे कई दिनों तक भोजन नहीं दिया जाता । लेकिन सँवरकी परिवार की इज्जत के कारण किसी से कुछ भी न कहती । एक दिन सुधवा का बेटा जगत दूध-भात खा रहा था । और पेटभर जाने के कारण बचा हुआ दूध-भात उसकी माता घर की कुतिया को देकर आने को कहती है ये सारी बाते सँवरकी सुन लेती है और जब जगत कुतिया को दूध-भात देने जाता है तब उससे दूध-भात लेकर खुद खाने लगती है तथा जगत खेलने के लिए बाहर चला जाता है । उसी समय सुधुआ की पत्नी सँवरकी को दूध-भात खाते देखकर उस पर झूठा इल्जाम लगाती है कि यह जगत से दूध-भात छीनकर खुद खा रही है । खेत से काम करके थका-मादा आया हुआ सुधुआ सोचे-समझे वगर सँवरकी को डंडे से मारने लगता है । तभी रघुपत दादा आकर सँवरकी को छुड़ाते है । तब सँवरकी अपनी राम कहानी रघुपत दादा को सुनाती है उसकी रामकहानी सुनने के बाद रघुपत दादा सँवरकी को अपने घर में पनाह देते है । उसका भी सुधुआ विरोध करता है तथा अपने साले लेखपाल को संदेशवाहक के रूप में रघुपत दादा के यहाँ भेजकर संदेश भेजता है कि सँवरकी को अपने घर न रखे नहीं तो उसे मार डालेगा । यह बात सुनकर सँवरकी रघुपत दादा की जान-बचाने के लिए गाँव छोड़कर शहर भाग जाती है । और वहाँ अपने पति को खोजकर अपना सुखमय जीवन व्यतीत करती है । उसके बाद ऊसर जमीन में अंकुर फूटता है तथा सँवरकी एक पुत्र को जन्म देती है । जिसकी सूचना पत्र के माध्यम से बुधुआ रघुपत दादा को देता है । यह समाचार सुनकर रघुपत दादा फूले नहीं समाते है और बड़े उत्साह से अपने ऊसर जमीन की खुदाई जुताई करते हुए कहते है कि मैं भी इस ऊसर जमीन में फसल तैयार करुँगा ।

(४) आम्बे बहार :

'आम्बे बहार' कहानी में बसन्त के समय में आम में टिकोरे आने से बालवृद्ध कैसे प्रफुल्लित होते है ? इसका कहानीकार ने वर्णन किया है । यदि कोई एक आँख का अँधा हो जाता है तो तरह-तरह की किंवदन्ती लोग गढ़ लेते है । शूरसती भी अपने पिता की तरह कनवा को डाँटती रहती है । गर्मियों में बच्चे आम की रखवाली करते है । एक दूसरे से मिलते है । परन्तु साधु काका कनवा के पीछे पड़ जाते है । क्योंकि

कनवा बीस साल का गाँव का आवारा लड़का है । उसके पिता जी भी चोरी के जुल्म में जेल काट रहे है तथा माता भी चरित्र हीन है । यही कारण है कि साधू काका को लगता है कि कनवा के साथ खेलने-कूदने से गाँव के बच्चे भी बिगड़ जायेगे । जब कनवा छोटा था तब शीतला माता की बीमारी के कारण उनकी माता झाड़ फूक करवाती रही । डॉक्टरो से सही ढ़ंग से इलाज नहीं करवाया । तथा गाँवो में भी एक दूसरे घर में झगड़ा करवाने के कार्यो में लिप्त रहती है । यही कारण है कि गाँव के लोग इन माँ-बेटे को सम्मान की दृष्टि से नहीं देखते है तथा यही कोशिश करते है कि गाँव के अबोध बालक कनवा के साथ न खेले-कूदे न आम के बाग में जाये । लेकिन गाँव के बालक कनुआ को खूब प्रेम करते है क्योंकि कनवा आम के बाग में जाकर सीकर आम तोड़कर इन बालको को खाने के लिए देता है तथा बसन्त के गीत गाना सिखाता है । इस कहानी में लेखक ने तरह-तरह के आमों की बात विभिन्न पात्रों द्वारा करायी है । साधु काका धीरज को समझाते हुए बौर, टिकौर एवं आम की दार्शनिक पृष्टभूमि उपस्थित करके कनुआ को लासा रोग सिद्ध करते है । जिस प्रकार से आम के पेड़ पर लासा लगने पर पूरा आम का पेड़ खराब हो जाता है । ठीक उसी प्रकार से कनुआ जैसे लड़के गाँव के बच्चो को आम के लासा रोग की तरह बरबाद करते है ।

(५) कच्चा घर :

'कच्चा घर' कहानी में काका कच्चा घर बनवाना चाहते है, परन्तु लोगो को अच्छा नहीं लगता है । जिस तरह सुपतिया का विवाह कम उम्र में होने से वह बूढ़ी होकर झुक गई उसी तरह बरसात आने पर कच्चा घर भी ओदर रहा है। काका बड़े इतमिनान से कच्चा घर बनाते है । लेकिन भजन टिपोसी कसता है तब काका कहते है कि बच्चे का जन्म देने में ही माँ बहादुर नहीं समझी जाती । जन्म देने से ज्यादा बच्चे को पालना पोसना सँवार पुचकार कर शुद्ध बनाना काफी महत्वपूर्ण होता है । कुम्हार भी माटी के घड़े को ठोक-पीट कर सँवार-पुचकार कर शुद्ध बनाता है । उसी तरह माँ भी दाव-दूब, थपथपाकर डरवा-धमका कर मीज-माँज कर अपने बच्चे को शुद्ध सुन्दर बनाती है । ठीक उसी प्रकार काका कच्चा घर बनाने में माटी को होले होले थपथपाते है । फागुन बीतते-बीतते बिहारी का घर बनकर तैयार हो गया । दीवालें लिप-पुतकर लपकने लगी । मजाल नहीं की दीवालो पर मक्खी बैठ जाती । बैठने के पहले वे फिसल कर उड़ जाती । उधर सुपतिया अपने मस्त यौवन को वह सँभालकर चलती। कितने मनचलों की नजर उस पर लगी रहती कितनो की लार टपकती । कितने हाय? कहके रह जाते । पर उसके सामने ताकने की हिम्मत कम की होती । सुपतिया रुप की रानी-छोटा कसा गठा-सा

बदन । बिखरे बाल बड़ी सी सुरमई आँखे । सुरीली बोल । चाल में मीठी सी अदा। अपने सामने किसी को न समझती । तेज बारिस होने पर सबके कच्चे घर गिरने लगे। भजन कहने लगा में इस बार पक्का घर बनावाउगा काका जल भुनकर अंगार हो गये । मन में बुदबुदाये ससुरे कच्चे घर का ठिकाना तो है नहीं पक्का बनवायेगा । फिर धीरे से बोले अरे भजन भला होता तो इस कच्चे घर को ही सहेज लेता । अरे पक्के मकान भी गिर जाया करते है । भयंकर तूफान और मूशलधार बरसात में कुछ साबूत नहीं बच सकता । पानी में भीगती कमर झुकाये पति त्यक्ता सुपतिया को आती देखकर देखो तो यही सुपतिया क्या थी । मक्खियाँ बिछलाया करती थी । तब इसे कोई नहीं कहता था कि यह कभी झुकेगी । कच्चापन बचपन कब गया । कच्चे घरो का क्या ठिकाना । उनकी आयु ही क्या ? मिट्टी तो मिट्टी क्षण भंगुर सी । बनते बिगड़ते देर नहीं लगती।

(६) किसानी :

'किसानी कहानी' में लेखक ने यह बताया है कि जो व्यक्ति जो काम करता है वही उसकी किसानी है । किसान लोगों को खेतो मे काम करना किसानी है, पंड़ित लोगो का काम पाठशाला में पढ़ाना, पूजापाठ करना तथा शादी ब्याह कराना किसानी है । तो छात्रों के लिए पढ़ाई-लिखाई करना किसानी है । लेकिन गाँव के ठाकुर नहीं चाहते के पिछड़े वर्ग के लोग भी पढ़ लिखकर आगे बढ़े । यही कारण है कि जब हिम्मत काका ठाकुर से कहते है कि तुम्हारे लड़के को सारी सुविधा मिलने के बावजूद भी पढ़ाई-लिखाई में कमजोर है तथा तेजू अभावो मे पलने के बावजूद भी वर्ग में अव्वल है । वह तेजू की पढ़ाई की कद्र नहीं करता है बल्कि कहता है ये लोग कितना भी पढ़-लिख ले कलेक्टर थोडे बनेगे । अन्त में हमारे खेतो मे काम करके गुलामी ही करना है । तभी तेजू निडर भाव से ठाकुर को कहता है "कि यह सच है । गरीब आप के खेतो में तन-तोड़ महेनत करते है । भूखे रहते हैं । पर आप उन्हें पूरी मजदूरी नहीं देते । आप तोंद फुलाए लट्ठ बाँधे चेतवाई करते है । गरीब अपने बल पर जीते है । किसी के अहसान और दया पर नहीं ।"[४]

तेजू के इस वक्तव्य से पता चलता है कि पढ़-लिख लेने के कारण निम्न जाति में भी सामाजिक चेतना आ गई है और अच्छे-बुरे का फर्क वे समझने लगे है । लेकिन ठाकुर आवेश में आकर तेजू को मारते है तथा हिम्मत काका चाहकर भी उन्हें बचा नहीं पाते है । इतना ही नहीं घर जाकर तेजू के काका से तेजू की शिकायत करते है कि तेजू मनबढ़ हो गया है और पूरी बात को जाने बिना सोचे समझे बिना काका तेजू को

मारते है । तब तेजू कहता है कि हम उनकी दया पर कहाँ जीते है । हम अपनी महेनत की कमाई खाते हैं । वे हमें पूरी मजदूरी भी नहीं देते । उनके लड़के को कुछ आता-जाता नही । उलटा मुझ पर गरम हो गए । वे चाहते है । डराने-धमकाने से मैं पढ़ाई छोड़ दूँ । किन्तु मैं पढ़ाई नहीं छोडूँगा । पंड़ित जी ने फीस माफ कर दी है । अब फीस के लिए माँ को भी किसी की चिरौरी करने की जरुरत नहीं है । आप लोग भी अब ठाकुर के खेतों में गुलामी, करना बन्द कर दो । तब काका कहते है चकबन्दी होते ही हमारी जमीन हमें मिल जायेगी तब हम ठाकुरो के खेतों में काम करना बन्द कर देगें ।

(७) पहली यात्रा :

सूर्यदीन यादव की 'पहली यात्रा' कहानी अहमदाबाद जीवन के लखनऊ प्रवास से सम्बान्धित होते हुए जीवन की शहर देखने की तीव्र इच्छा तथा वहाँ जाकर अपना उपन्यास छपवाने से सम्बन्धित कहानी है । शहर जाकर उसे पता चलता है कि प्रकाशक कितने निर्मम होते हैं, फिर भी वह हिम्मत नहीं हारता उसकी यात्रा कच्ची थी । वह अनिभिज्ञ और अज्ञान था इस यात्रा से पहले शहर को लेकर उसके मन में कई प्रकार की कल्पनाएँ थी । लेकिन वहाँ जाकर उसे पता चला की शहर की अपेक्षा गाँव अच्छे होते है । क्योंकि उन्हें आज पता चला कि शहर कैसा होता है । चक्करदार गलियों में बने मकान में जीवन से साँस नहीं ली जा रही थी । दम घुटने लगा दुर्गन्ध से । गीचम-गीच बस्ती देखकर वह हैरान रह जाता है । कैसे जीते होगे लोग ऐसे घिनौनेपन और सकरी गन्दी बजबजाती गलियों के बीच इग्लूनुमा घर में । शहर को लेकर उसके मन में जो भी भ्रम था वह जाता रहा । अनेक अभावों के बीच जीवन की पहली यात्रा एक संघर्ष सी लगती है। शहर आने पर लोग, घर, गाँव, खेत, वन पहाड़ छूटते जा रहे थे । वह उन सब से दूर किसी नई अपरिचित दुनिया में चला आ रहा है । लोग शहर में उसे सामान्य व्यक्ति समझते है । तब जीवन क्रोध से तमतमा उठा और मन में आया कि उपन्यास के पन्नों को खोलकर दिखा दे, और डाँटकर कह दे कि सामान्य व्यक्ति नही सड़क छाप नहीं उपन्यास छपवाने जा रहा हूँ लेखक हूँ । साहित्य का चाहक हूँ । सड़क छाप नहीं हूँ । इस तरह लखनऊ की शैर करके जीवन घर पहुँचा । उसे लगा । जैसे कोई लम्बी यात्रा तय करके लौटा हो । उसने महसूस किया कि वह कच्चा था । उसका कार्य कच्चा था । उसका जीवन कच्चा था । उसकी यात्रा कच्ची थी । वह अनभिज्ञ था, अनजान था इस यात्रा में । तभी तो प्रकाशक ने उसके उपन्यास को छापने से इन्कार कर दिया । वह पुनः यात्रा की तैयारी करने लगा ।

(८) इस्तीफा :

'इस्तीफा' कहानी में जमीदारी प्रथा के समय लोगो को खेत जोतने - बोने के लिए दी गयी । जमीन सिकमी हो गयी । इसका लेखक ने बखूबी वर्णन किया हैं। लेखपाल नायब, कानूनगो किस तरह 'जिसकी लाठी उसकी उसकी भैंस' का साथ दे रहे हैं । तथा गाँव के लोग सल्हर के आतंक से गाँव छोड़कर भाग रहे हैं । पूरे गाँव में दो ही बहादुर योद्धा हैं नथई-भिखई, जो सल्हर के आतंक के सामने नहीं झुकते तथा अन्त में उनके नाम से चक कटते हैं । क्योंकि वे सोचते हैं कि यह धरती उनकी माता हैं जमीदार जबरदस्ती उनके खेतों का इस्तीफा मांगने लगे । गरीब किसान डर के मारे इस्तीफा देने को राजी हो गये । कुछ किसान घर - गाँव छोड़कर भाग गये । क्योंकि चकबन्दी होने से पहले ही सल्हर सबकी जमीन का इस्तीफा मांगने लगा । पूरे गाँव में सल्हर महराज का इतना बड़ा आतंक हैं कि कई लोग सरकार और सल्हर महाराज दोनों को लगान देते हैं । डर के मारे कोई कुछ बोलता नहीं हैं । सल्हर महाराज पूरे गाँव के खेत अपने नाम करवाना चाहते हैं । पर गाँव वाले राजी नहीं हैं । सबसे जबरदस्ती इस्तीफा माँग रहे हैं। नहीं तो गाँव में रहने नहीं मिलेगा । शीतल साइकिल लिए ओफिस की ओर बढ़ने लगा। उस दिन की नथई की मार उसे बार - बार याद आ जाती । इस्तीफा देना पड़ेगा । सल्हर ने घर - घर इस्तीफा देने को कह दिया हैं । गाँव के लोग घर छोड़ दिये हैं। पिता जी भी कई दिनों से मामा के यहाँ पड़े हुए हैं । सुदधू तो दिन - रात घास छीलता हैं । घर पर खाने को भी नहीं आता । वहीं पर उसका खाना पहुँचा दिया जाता हैं । दुखई भी नदी के किनारे - किनारे गोरु चराया करता हैं । रात बीतने पर घर आता हैं । सबका खाना - पीना घर में रहना दूभर हो गया हैं । डर लगता हैं । कभी मार न बैठे सल्हर महाराज । नथई और भिखई ससुराल भाग गये हैं क्योंकि उन्होंने निश्चय कर लिया हैं । किसी भी संजोग में इस्तीफा नहीं देंगे । रात देर कभी - कभी घर आते हैं । चकबंदी समाप्त हो गई । तथा सल्हर महाराज के सामने नथई और भिखई की विजय हुई । उनके नाम चक बट गये । सारा गाँव उनके चको को आँखे फाड़ - फाड़कर देखता। तथा सोचता काश ! हमने भी इन दोनों भाईयों की तरह हिम्मत दिखाई होती तो आज हमारे नाम भी चक कटते तथा हमें इस्तीफा नहीं देना पड़ता ।

(९) मंदिर और मस्जिद :

'मंदिर और मस्जिद' कहानी में लेखक ने धार्मिक रुढ़िचुस्त मान्यताओं को तोडकर मिलजुलकर रहने तथा गाँवो में अशिक्षा के कारण फैले अन्ध - विश्वास तथा जमीन के टुकडे को लेकर लोगो के मन में रही संकुचित विचारधारा का बखूबी वर्णन किया हैं।

मास्टर साहब नन्दन के घर वापस आने पर उनकी माता ग्रामीण परम्परा के अनुरुप लोटे में पानी भर कर गुड अनाज डालकर धार देती हैं । तथा जैसे ही खाट पर बैठता हैं मीर साहब के नंदन बुलाकर गाँव की कुशल क्षेम पूछता है तब मीर साहब बताते हैं कि सरकार ने डाकुओं से रक्षा हेतु गाँव के लोगों को लाइसेंसी बन्दूक दे रखी हैं। लेकिन गाँव के लोग इन बन्दूकों का दुरुपयोग करते हैं । तथा आपसी लड़ाई होने पर बात – बात में बन्दूकें तान लेते हैं । मीर साहब नंदन मास्टर को बताते हैं कि मजहबी शहरी बीमारी अब गाँव में पनाह ले चुकी है तथा दीमक की तरह पूरे गाँव को छिन्न – भिन्न कर रही है । पहले गाँव में कितनी सुलह थी । मीर साहब और भोला पंड़ित के बीच नीम के पेड़ के लिए चल रहे झगड़े में भोला पंड़ित बाल – बाल बच गये। चकबन्दी होने के कारण नीम का पेड़ मीर साहब के नाम वाली जमीन पर आ जाता है । इस नीम के पेड़ को भोला पंड़ित के पूर्वजो नें लगाया था। तब यह जमीन आबादी की थी । मीर साहब का कहना है कि जमीन पर सबका हक्क होता है । अब मीर साहब के मजहब के लोग इस नीम के पेड़ को काटकर मस्जिद बनवाना चाहते हैं । इसी बात को लेकर भोला पंडित तथा मीर साहब के बीच तना – तनी चल रही है । मास्टर नंदन जी इसका हल ढूँढ निकालते है । कि इस जगह पर मन्दिर – मस्जिद बनाकर इस झगड़े का अन्त लाया जाये । आखिर पूरे गाँव की सुलह से वहाँ पर मन्दिर – मस्जिद बनाया जाता है । थोड़े दिनों के बाद गाँव के लोगो की विचार धारा में अमूल्य परिवर्तन आता है । मुसलमान लोग मन्दिर में दर्शन करने जाते हैं । स्वयं फरहाना कहती हैं कि उसके लड़के को माता जी निकली थी वह मन्दिर जाकर माता जी से प्रार्थना की और उसका लड़का ठीक हो गया तो दूसरी और कुछ हिन्दू औरतें कहती हैं कि उनकों लड़का नहीं होता था और वह मस्जिद गई और वहाँ जाने के बाद उनको लड़का पैदा हुआ । इस प्रकार – मन्दिर – मस्जिद राष्ट्रीय एकता के परिचायक हुए । लेकिन पंड़ित भोलानाथ का फरहाना का मन्दिर में आकर जल चढाना अच्छा नहीं लगता । क्योंकि उनकी विचार धारा के अनुसार इनका खान – पान अशुद्ध हैं । इसलिए फरहाना को मन्दिर में पूजा – पाठ करने से रोकते हैं । संजोग वश उसी समय मास्टर नंदन जी वहाँ आकर नियमित पूजा – पाठ करने को कहते हैं । नंदन मास्टर पंड़ित को समझाते हुए कहते हैं कि –

'देखिए पंड़ित जी हिन्दू और मुसलमान में क्या अन्तर हैं, धर्म सबका एक ही होता हैं । हिन्दू अपनी भाषा में धर्मग्रन्थ को गीता कहते हैं । मुसलमान अपनी भाषा में उसी को कुरान कहते हैं । दोनों धर्म ग्रन्थो में एक ही बात उसी तरह से मन्दिर और मस्जिद भी हैं । मुसलमान ईंट – पत्थर से बनी दीवाल के घेरे को मस्जिद नाम दे दिये

हैं । और हिन्दू उसी घेरे को मन्दिर कहते हैं । खुदा और भगवान एक हैं । जो हिन्दू-मुसलमान दोनों का हृदय चलाते हैं । एक ही खुदा या भगवान की हम सन्तानें हैं। जैसे एक ही माँ के उदर से जन्म लेने वाले चार बेटे अलग - अलग रंग, रुप, आकार, प्रकार, आचार - विचार, अच्छे - बुरे, लायक - नालायक होते हैं । उसी प्रकार से सारी मानव सृष्टि एक खुदा था । भगवान या किसी अज्ञात शक्ति की दी हुई संताने हैं । सबका खून एक हैं तो यह भेद कैसा ? रही बात पवित्र - अपवित्र की तो कोई भी मन्दिर - मस्जिद किसी के स्पर्श से पवित्र या अपवित्र नहीं होता, कौन पवित्र हैं ? कौन अपवित्र हैं ? यह हम तुम भी नहीं जानते । क्योंकि तुम और हम कितने पवित्र - अपवित्र हैं कहा नहीं जा सकता । इसलिए हमें तुम्हें किसी को यहाँ आने देने से रोकने का कोई अधिकार नहीं है । मन्दिर और मस्जिद पर किसी का व्यक्तिगत अधिकार नहीं होता । वे सबके लिए होते हैं । इतना सुनकर पंड़ित जी का भ्रम मस्जिद मन्दिर को लेकर जो उनके मन में था । वह टूट जाता हैं ।

(१०) ठनगन :

'ठनगन' कहानी द्वारा लेखक ने समाज में फैले दहेज-प्रथा, शादी - विवाह, में झूठे दिखावे व रुढ़िगत रिवाजों पर करारा प्रहार किया हैं । तथा कुरीतियों को तोड़ने के लिए नवजवानों को ललकारा गया हैं ।

कहानी की शुरुआत रवि एवं राकेश के वार्तालाप से होती हैं । जो एक छोटे से बालक को ठनगन करते देख शुरु होती है । रवि और राकेश को अपना बाल्यकाल याद आता हैं कि बाल्यावस्था में वे दोनों भी इसी प्रकार से माता से ठनगन करते रहे होगें, और गाँव में शादी ब्याह जैसे अवसर पर नाइन, सोनी, कहारन, पंड़ित सभी लोग किस प्रकार से नेकचार में रुपये - पैसे तथा साड़ी के लिए जिद् करते हैं । तथा शादी - ब्याह जैसे अवसर पर आवश्यक खर्चे का लेखक ने बखूबी वर्णन किया हैं । गाँव की रुढ़िगत प्रणाली चार - चार सौ आदमियों को खिलाना - पिलाना उनका मान - सम्मान करना, बेटी का बाप होना भी मुसीबत हैं उसकी पूरी जिन्दगी का कमाई इसी में खफ जाये । रवि को आज पता चला कि क्यों लोग लड़की का जन्म होते ही शोक मनाते हैं । तथा दूध पीती बालिका का क्यों वध कर देते हैं । देखते ही देखते शादी की पूरी रस्म पूरी हो जाती हैं । और दूसरे दिन खिचड़ी पर दूल्हे राजा खाने बैठे । दूल्हे राजा की थाली में रुपये की बरसात होने लगी । थोड़ी ही देर में थाली रुपयों से भर गयी। फिर भी दूल्हे राजा सर झुकाये बैंठे हैं । लड़की के पिता रमाकान्त ने एक सोने की

अँगूठी लाकर दूल्हे की अँगुली में पहना दिया । अब भी दूल्हे राजा सिर लटकाये बैठे रहे । थोडी देर बाद घड़ी और साइकिल लाकर दी गई । फिर कहा गया खाने को । पर दूल्हे राजा टस से मस न हुए । बजता हुआ रेडियो भी दिया गया । बारी - बारी से सब लोग दूल्हे राजा को मनाने लगे । फुसलाने लगे । तब धीरे से दूल्हे राजा ने कहा मुझे मोटर साइकल चाहिए । इस बात को लेकर वर पक्ष एवं कन्या पक्ष के बीच में खूब झगडा हुआ अंत में कन्या पक्षने कहा कि लड़का बी.एस.सी. पूरा कर लेगा । उसके बाद मोटर साइकिल देंगे । वहीं पर खड़े रवि और राकेश को श्रीकान्त का यह हठ पसन्द नहीं आया और जाकर कहने लगे । इतना पढ़ - लिखकर भी दहेज की माँग कर रहे हैं तब श्रीकान्त के चाचा कहते है कि लड़की को पूरे पाँच हजार के जेवर दिये हैं । तथा भीड में से कोई जोर से चिल्लाता हैं कि वह अपनी पतोहु को दिया हैं । इसी ठनगन में डाकू लोग आ धमकते हैं और पूरा सामान लूटकर चले जाते हैं । तभी एक बाराती कहता हैं कि दूल्हे राजा और करो ठनगन । यदि जल्दी से खिचड़ी खा लेते तो अभी तक हम लोग आधे रास्ते पर होते तथा डाकुओं के आतंक से बच जाते ।

(११) तालाब की मछलियाँ :

'तालाब की मछलियाँ' कहानी में लेखक ने हिन्दू - मुस्लिम संस्कृति के संघर्ष तथा फजलपुर के खानजादे रामपुर के तालाब में मछलियाँ पकड़ने के साथ लड़कियों को भी सीटी मारते हैं । इन सारी बातों का लेखक ने बखूबी वर्णन किया है ।

'तालाब की मछलियाँ' कहानी में लेखक ने फजलपुर के खानजादों का इतना आतंक बताया हैं । जैसे गाँव में कोई भेड़ियाँ घुस आया हो । नूरउल्ला सबसे ज्यादा उददंड़ी वह लड़कियों को देखते ही सीटी बजाने लगतां । रामपुर के सगरा तालाब में यही खान जाते मछलियां पकड़ने जा रहे हैं । कभी यह तालाब काफी चौडा था । उत्सव त्यौहारों पर यहाँ जमघट लग जाता है । लोग नहाकर पवित्र होते हैं । बच्चों को जोगछेम और मुण्डन इसी के किनारे होता है । तैरती, छलकती फिसलती मछलियाँ उनकी शोभा में चार चाँद लगा देती हैं । आज उन्हीं मछलियों को फँसाने के लिए जाल फेंका जा रहा है । जमाल, फजलू, सलीम, अकबर, रमजान और नूरउल्ला जाल फेंककर मछली पकड़ते हैं । धरमपाल तिवारी को देखकर डर जाते हैं । क्योंकि धरमपाल तिवारी रामपुर के नामी आदमी हैं। उनको भगाने के लिए बन्दूक से गोली चलाते हैं । गोली चलते ही सभी खानजादे धरमपाल तिवारी को देख लेंगे । ऐसा कहते हुए भाग जाते हैं । धरमपाल तिवारी की पुत्री सुमती उनकी धमकी सुनकर डर जाती है । तथा पिताजी को उनसे रार न लेने को कहती है।

वही खानजादे एक दिन मौका पाकर रात को तिवारी को रस्सी से खाट में बाँधकर उसकी बेटी झुमती को अपवित्र करना चाहते हैं तभी भगवान स्वरूप तिवारी का कुत्ता शेरु तिवारी की रस्सी काटकर बन्दूक तिवारी की तरफ फेंक देता हैं । तिवारी बन्दूक से हवा में गोली चलाते हैं । गोली की आवाज सुनकर सारे डकैत भाग जाते हैं । लेकिन नूरउल्ला और उसका साथी पकड़ा जाता हैं । उसे पुलिस के हवाले कर दिया जाता है । दोनों को पाँच - पाँच साल की सजा होती हैं । जेल से छूटते ही नूरउल्ला अपने साथियों के साथ फिर से मछली पकड़ने उसी तालाब में आता है तब रामपुर गाँव और फजलपुर के लोगों के बीच लड़ाई होती है । ठीक समय पर आकर इन्स्पेक्टर पठान समाधान कराते हैं । उसके थोड़े दिन बाद ही खानजादे अरहर के खेत में अकेली विपती को पकड़कर उसे अपवित्र कर मार करके उसकी लाश उसके दरवाजे पर फेंक देते हैं । तथा तिवारी दरोगा को रुपये देकर रिपोर्ट लिखवा देते हैं कि विपती को दौरा की बीमारी थी । इसी कारण मर गई । बेचारे धरम पाल अकेले कहाँ तक धर्म की रक्षा करते । वे तालाब पर पहुंचे तो देखा किसी ने तालाब में जहर डाल दिया है जिससे तालाब की सारी मछलियां मर गई है और गंध आ रही है । विपती भी इन्हीं मछलियों में से एक थी ।

(१२) बच्चे का बाप कौन :

'बच्चे का बाप कौन' कहानी में कहानीकार सूर्यदीन यादव जी ने विधवा नईकी की समस्याओं का वर्णन किया हैं । छद्दर उसे गर्भवती करके बेटा तो देता हैं परन्तु पंचायत के सामने उसे स्वीकार नहीं करता हैं । तब नईकी नागन की तरह फनफनाती ललकारती हैं - 'डूब मरो चुल्लू भर पानी में' । धिक्कार ऐसे स्वार्थी लंपट मरदो को ।' पंचो - मैं ही अपने बच्चों का बाप हूँ । नहीं चाहिए माँ के बच्चे को बाप । ऐसी दुनिया निर्माण करें जहाँ किसी बच्चे की माँ को बच्चे के बाप को ढूँढ़ने की जरुरत न पडे ।

'बच्चे का बाप कौन ?' कहानी में कहानीकार ने विधवा नईकी के जीवन की कथा व्यथा को वाणी दी हैं । हमारे ढ़ोंगी समाज में पति मर गया तो जैसे पत्नी का सब कुछ मर गया । माथे पर सेंदूर टिकुली नहीं लगा सकती । सादे कपड़े पहनना । बालों को सजा नहीं सकती । अपनी शौक नहीं पूरा कर सकती । पति नहीं तो जैसे जीवन और शरीर का सारा शृंगार छिन गया हो । पति के मरते ही शरीर और जीवन की शोभा ही मर जाये । इतनी पाबन्दीयों के बीच नईकी को वंश चलाने के लिए लड़का चाहिए । तब नईकी सामाजिक परम्पराओं को तोड़ने के लिए तैयार हो जाती हैं । लेकिन तब वह सोचती हैं कि अगर कोई पूछेगा कि बच्चे का बाप कौन हैं ? तब - कौन

बनेगा बाप ? नईकी साँवले रंग की गँठा बदन गोल मटोल चहेरा देखने में काफी आकर्षक लगती । पति के मरने के बाद कई लोग ताक - झाँक लगाये रखते । पर वह किसी को खतियाती नहीं थी । ताकतवर इतनी कि मर्द का कलाई पकड़ ले तो मर्द जुगुरू नहीं खा सकता । वही नईकी छद्‌दर के साथ नाजायज सम्बन्ध बनाकर लड़के को जन्म देती हैं तो कमजोर बन जाती है । क्योंकि उसकी अपेक्षा से विरुद्ध छद्‌दर लड़के का बाप बनना तो दूर उसे पंचो के सामने पहचानने तक से इन्कार कर देता हैं । फिर भी नईकी घर, परिवार, गाँव समाज के लोगो का डँटकर मुकाबला करती और कहती हैं - "अपनी फूटी हाँडी कोई नहीं झाँकता । मुँहचटे घर में पत्नी होते हुए भी दूसरी औरतों के पीछे छुछुआया करते हैं । छिनारिनें घर में पति के होते हुए भी आड़ - ओटे पर पुरुषों से पेट भरती रहती हैं । और मैंने पति के न होने पर कुछ किया तो सारे गाँव की छाती क्यों फटती हैं ।"[५] छद्‌दर पंचो के सामने बच्चे का बाप बनने से इन्कार करं देता हैं । तब गाँव के प्रधान कहते हैं कि " यहाँ कोई मर्द नहीं । सबने चूड़ियाँ पहन ली हैं । मजा मारने को ही ससुरे मर्द बनते हैं । जिसका नाम लेती हैं वह स्वीकार नहीं करता ।"[६]

इसके साथ ही नईकी बच्चे को गोद में लिए तेजी से सभा के बाहर जाने लगी। और कहने लगी । चलो कहीं दूसरा समाज निर्माण करेंगे । जहाँ पर किसी बच्चे की माँ को बच्चे का बाप ढूँढने की जरुरत नहीं पडेगी । इस कथन के साथ नईकी का पितयाउत देवर दहबंगी ने दौडकर नईकी की गोद से बच्चे को लेकर चूम लिया । और बोला बच्चे का बाप मैं हूँ । मैं भांत - पाँत दे दूँगा । एक डूबती औरत को उबार लेना ही मरदानगी हैं । ऐसे नाजुक लम्हों पर दहबंगी साहस दिखाकर मर्दानगी का परिचय देता हैं ।

(१३) हमजोली :

'हमजोली' कहानी में यादव जी लल्ली एवं भोला के सम्बन्धो को लेकर पंड़ित जी एवं बच्चो के बीच संदेह पैदा करवाते हैं तथा पंड़ित जी दोनों को पीटते एवं भला - बुरा कहते हैं । जबकि अभुआती सेठाइन की चोटी पकड़कर गलतफहमी दूर करता हैं । इस कहानी में लेखक ने राधा - कृष्ण की हमजोली वाला जुमला लिखवाकर पंड़ित जी के संदेह को दूर करवाते हैं ।

पंड़ित जी की पाठशाला में शंकर एकदम भोदूँ । पढ़ने में ढ़ीला बात - बात में अकड जाता । तो लखन फेलियर वर्ग में श्रेष्ठ तथा भोला एवं लल्ली जैसी एक मात्र छात्रा

हैं । सभी बालक हमजोली उम्र में मिल जुलकर पढ़ाई - लिखाई करते । सूरज वर्ग का मोनीटर हैं । तथा गलत सवाल करने पर जब पंड़ित जी भोला को मुर्गा बनने को कहते हैं तब पंड़ित जी बात न मानकर मुर्गा बनने से इनकार करता हैं । तब पंड़ित जी आवेश में आकर भोला को सुअर कहते हैं । तब भोला कहता हैं कि मैं सुअर नहीं ब्राह्मण हूँ । तब पंड़ित जी भोला को मारने के लिए दौडते हैं तब भोला बस्ता लेकर भाग जाता हैं ।

एक दिन पंड़ित जी मेज पर गोड पसारकर सोने लगे । लल्ली और भोला प्रसन्न चित्त एक दूसरे के कन्धे पर हाथ घरे घूमते । खूब नजदीक से एक दूसरे को स्पर्श कर रहे थे । कभी मुस्कुराते आँखे चार कर लेते । गौरवर्गीय अनभिज्ञ हमजोली । आनन्द विभोर हो खिलखिला उठते । उन्हें देखकर प्रकृति भी प्रसन्न थी । बातों में मस्त हमजोली धूप से छाया की और खिसकने लगे उसके पहले पंड़ित जी की नजरें उन पर जा पड़ी । क्रोध का बाँध टूट पड़ा । पंड़ित जी भोला को मारते - मारते आँकने लगे । और फिर बोले आज के बाद फिर किसी लड़की के कन्धे पर हाथ रखकर मत घूमना । और लल्ली को लाल नेत्रो से देखकर कहाँ कल से विद्यालय मत आना । नहीं तो गाँव के लोग देखेंगे तो यही कहेंगे की पंडित जी यही पढाते होंगे । दूसरी तरफ सूरज और उसके हिम्मत बाज साथी ओझाइटिन का झोंटा पकड कर पीटने लगे । पंड़ित जी सोचने लगे । चलो बच्चो नें ठीक ही किया । अब कटरा टोला में किसी को भूत नहीं लगेगा । बच्चे डर गये । लेकिन मास्टर साहब ने आज किसी को कुछ नहीं कहा । और सूरज का जुमला सुनकर उनकी आँखे खुल गई कि राधा - और कृष्ण भी हमजोली थे । नाहक ही लली और भोला को मारा । इन हम जोलियों में क्या अन्तर ।

(३) वह रात कहानी संग्रह १९९८ :

(१) भीड़ :

'भीड़' कहानी सूर्यदीन यादव की 'वह रात' कहानी संग्रह की पहली कहानी हैं। गाँव के लोग प्राचीन परम्पराओं और लीक पर चलने के आदी हो गये हैं । चारों धाम की यात्रा करने के बाद लोग भंडारा रखते हैं । गाँव के चौधरी भी चारो धाम की यात्रा करने के बाद आसपास के गाँव के लोगों को भोजन के लिए आमंत्रित किये हैं । जगन्नाथ स्वामी की जय बोल कर लोग भोजन करना शुरु कर देते हैं । भीड़ एकता का प्रतीक हैं । यहाँ पर सभी लोग जात - पाँत, धर्म के भेदभाव की भूलकर एक ही पंगत में बैठकर भोजन कर रहे हैं । तभी डॉक्टर साहब सुरेश को बताते हैं कि इस भीड़ को

ईकठ्ठा करने के पीछे क्या उद्देश्य है । क्या भोजन खिलाने के लिए भीड इकठ्ठा की गई है । या पूण्य प्राप्त करने के लिए लेकिन नहीं, केवल कीर्ति और नाम प्राप्त करने के उद्देश्य से भीड इकट्ठा की गई हैं । गाँव के लोग मिलजुलकर - चीनी, पूडी, सब्जी, माठा, अचार इत्यादि खाने - पीने की चीजें लोगों को दे रहे हैं । तभी पंगत के बीच मे एक कुत्ता आ जाता है । सभी कंठी धारी पंड़ित बड़बडाने लगे । इतने में भीड़ से आवाज आई " वाह रे भगत ! कपड़े उतारे हैं । जूता चूतर के नीचे है । कहते हैं भरभन्ड कर दिया ।"[७] माइक से एक स्वयंसेवी व्यक्ति निवेदन कर रहा था कि कुत्ते को अन्दर आने से अटकाया जाये । उसी समय एक कौए ने जनेऊधारी एक पंड़ित जी की पत्तल में (हग) विष्टा कर दिया ।

पंड़ित जी चिल्लाये " काले कौए साले को दाग दो ।"[८] भीड़ से आवाज आई, भोजन भगवान का प्रसाद हैं । भीड़ में सब पवित्र हैं । काकभुशुंडी शास्त्र में कहा गया हैं कि हमारे पूर्वज मरने के बाद कौए के रुप में आते हैं । इसलिए इसे मारो मत। फिर मन मारकर पंड़ित जी भोजन करने लगे । डॉ. साहब सुरेश को बताते हैं कि यही ब्राह्मण जल्दी किसी अन्य बिरादरी के साथ बैठकर भोजन नहीं करते हैं लेकिन यहाँ पर सभी ब्राह्मण एक साथ बैठकर भोजन कर रहे हैं । मिठनेपुर के गुसाई, बाबा, बाभन, ठाकुर, जाति पर जाति सभी भरपेट खाये । यहाँ तक कि कई मुसलमान लोग भी इस भीड में बैठकर खा रहे थे । डॉ. साहब सुरेश से कहते हैं । लकीर के फकीर बने लोगो को अटकाना होगा । यह कुरीति और अंधी परम्परा बंद होनी चाहिए । इससे अनावश्यक खर्चा होता हैं । सुरेश डॉ. साहब को समझाते हैं कि ऐसा सिर्फ हमारे और तुम्हारे सोचने से ही क्या होगा ? पूरे समाज को ऐसा सोचना चाहिए । अकेला चना भाड़ नहीं फोडता। नेताजी बोले जन समाज को सुधारने की बात करेंगे तो लोग मारने दौडेंगे । डॉ. साहब नेताजी को कहते हैं कि हम एक समिति बनायेंगे । नेताजी कहते हैं कि समिति बनाकर चंदा वसूल करके लोगो को लूटेंगे । इसपर डॉ. साहब बोले हम उन पैंतरे बाज, राजनीतिक नेताओं और उनकी लुटेरी समिति की बात नहीं करते। हमारी समिति का उद्देश्य कुछ और होगा । लोग तीर्थ यात्रा में हजारो रुपये खर्च करते हैं। बड़ी भीड़ को खिलाते हैं। इस खर्चीली, बेबुनियादी एवं निरुद्देश्य परम्परा को बन्द करके समाज और अनपढ़ लोगो में काफी परिवर्तन लाया जा सकता हैं । ये चौधरी लोग "साले होटलों में पता नहीं किस जाति का बनाया परोसा पेलते हैं । और बिरादरी के साथ बैठकर खाने में धतुरा पांड़े बन जाते हैं ।"[९] तभी सभी लोग चौधरी लोगो की वास्तविक जीवन शैली के बारे में बात करने लगते हैं । एकता समिति बनाकर लोगों को पेट - पूजा के साथ - साथ

जीवन उपयोगी मसाले भी मिलेगे । लोग प्रभावित होगे । समाज बदलेगा । परम्परा तूटेगी। प्रगति का नया रास्ता खुलेगा ।

(२) किरण :

'किरण' कहानी में लेखक सूर्यदीन यादव जी ने मानवीय सम्बन्धो का वर्णन किया हैं । आंगन में खेलते हुए बच्चों को देखकर प्रभाकर को उनकी बेटी किरण की याद आती है । वह भी इन नन्हें बच्चों की तरह धूप में अपनी परछाई देखने के लिए दौड़ती और जब न पकड़ पाती निराश हो जाती । प्रकाश के पत्र से पता चलता है कि प्रभाकर अपनी पारिवारिक जिम्मेदारी ठीक से नहीं निभाते हैं । क्योंकि वे पत्र में लिखते हैं कि " जब तक प्रभाकर चमकता है । तब तक छायाए रहती हैं । सूर्यास्त होते ही छायाएँ मिट जाती हैं ।"[१०] मेरी बेचैनी असफल है । क्या कहूँ । दु:ख कहने से कम पर मन कुछ हल्का हो जाता हैं । अनुकूल परिस्थितियों में उत्तरदायित्व सभी संभाल लेते हैं । किन्तु प्रतिकूल परिस्थितियों में उत्तरदायित्व सँभालना ही सही उत्तरदायित्व सँभालना कहलाता हैं । आपका काम सूर्य की तरह घर भर को प्रकाश देना है । घिरते तिमिर को दूर करना आप से कोई सीखे । किरण दुनिया में आच्छादित हो चुकी हैं, फिर अंधेरे का प्रश्न ही कहाँ । पत्र पढ़कर अपनी दुनिया में प्रभाकर खोये रहते हैं । तभी दीपा के साथ थोड़ी कहा सुनी होने पर उसके पति को कालिया कह देते हैं । इस पर दीपा प्रभाकर से झगडा करती है । तभी उन्हें प्रकाश की याद आती है । उस बेचारे का क्या दोष ! मैं अपने आपको पहचान ही न सका । क्रोधावेश में जुल्म ढ़ाता रहा बच्चो पर इसीलिए मुँहलग दीपा चिढ़ियल हो गई है । जबकि किरण स्वाभिमानी थी । बचपन से ही हवाई किले बनाती थी । नये - जये सपने पालती थी । - " बापू जी मैं एल. एल. बी. करुंगी। दबी दबाई शोषित लाचार स्त्रियों के मामले हल करके उन्हें न्याय दिलाऊँगी ।"[११] नारी को समाज में मान - प्रतिष्ठा मिलनी चाहिए । इन यादों के साथ प्रभाकर की आँखे भर आई । वे जल्दी से भोजन करके उठ गये ।

(३) वह रात :

' वह रात ' कहानी चन्दा और कामिनी नामक दो हमजोली सखियों की दास्तान हैं । चंदा सात - आठ साल की थी । तभी अबोध बालिका का उसके दादा जी ने विवाह कर दिया था । चंदा सामाजिक बन्धन बनाये रखने के लिए तथा माता - पिता की ईज्जत रखने, जाति बिरादरी के लोग उन पर फब्तियां न कहे, इस भय से दादा जी की बात मानकर विवाह करने को तैयार हो जाती है । विवाह की पहली वह रात की

कहानी चंदा अपनी सखी कामिनी को बताती है । कामिनी चन्दा का साहस देखकर दंग रह जाती है । वह सोचती है कि चन्दा स्त्री जाति की परवशता को क्यों नहीं कोसती है ? उस दकियानूसी समाज को क्यों नहीं धिक्कारिती जिसने उसके साथ खिलवाड़ किया है । माँ – बाप और बिरादरी को खुश रखने के लिए इतना बडा बलिदान । वह जानती है कि चंदा बचपन से शहर में पली है । फूल की कोमल कली देहाती झोंको में कहीं टूट न जाए । गाँव की तूफानी हवाएँ जहाजी पेड़ों को उखाड़ फेंकती हैं । मोटी मजबूत दो खंभी शाखाएँ अरराकर फट पडती हैं । वहाँ कोमल कोयलों की क्या किंमत ।

चंदा कामिनी को बताती है कि पहली ही रात जैसे किसी जेल में बन्द कर दिया गया हो और रात फांसी पर चढ़ा दिया जायेगा । गाँव की औरतें नई – नवेली दुल्हन चन्दा को देखने के लिए चारों तरफ से घेर कर ऐसे बैठी हैं जैसे नए गाँव ऊँट आया हो । चन्दा मन ही मन गुस्से को पी जाती है । कई बार उसके मन में आया कि घूंघट पलटकर गाँव की औरतों को कह दे कि वह भी उनकी तरह ही औरत है । जब चन्दा को देखने के लिए गाँव की औरतें आती । तभी वहाँ पर बैठी गाँव की औरतें उनका पद बताकर चन्दा को उनकी साडी का आँचल पकड़कर रुपये, सोने का टप मांगने को कहती । तब चंदा मन ही मन हँसने लगती है और सोचती है कि वह भिखारिन थोड़े है । थानेदार की बेटी है । इसलिए किसी से कुछ नहीं माँगती । तब गाँव की औरतें चंदा को अनपढ़ और शर्मीली औरत समझती । गाँव की औरतें वही पर बैठकर बातें करती कि पड़ोस के गाँव मे नई दुल्हन आई थी । उसने घूंघट प्रथा के कारण अपने पति को नहीं देखा था जिसके कारण रात को उनके कमरे में कोई दूसरा आदमी चला जाता है । उसी को अपना पति मान लेती है । सुबह होने पर सभी को पता चलता है तब उस नई नवेली दुल्हन को घर से निकाल दिया जाता है । और अब वह कहीं की नहीं रही । इसी वजह से चन्दा अपने पति श्यामू को जल्दी से देख लेना चाहती है । इसलिए अपने सासु से अपनी इच्छा प्रकट करती है । सासू श्यामू को आवाज देकर चली जाती है । लेकिन श्यामू अपनी पत्नी को देखकर शर्माता है । क्योंकि वह सोचता है कि कोई देख न ले । चन्दा मन ही मन सोचती है कि ऐसे डरपोक पति को पकड़कर कोठरी में बन्द कर दूँ ।

(४) ईख की कहानी :

'ईख की कहानी' में कहानीकार सूर्यदीन यादव जी ने गाँव में संयुक्त परिवार के टूटने की पीड़ा का वर्णन किया है । आये दिन संयुक्त परिवार टूट कर विभक्त परिवार की परम्परा चली आती रही है । देसुई भी इससे बच नहीं पाती है । वह अपने परिवार

के सदस्यों के घर में अपना हिस्सा माँगती है । पूरा घर बट जाने के बाद जब खेत में खडे ईख बाँटने की बात आती है । तब परिवार के सभी सदस्य देसुई को ईख में हिस्सा देने से मनाकर देते हैं । इस बात को लेकर देसुई हठ करती है कि वह खेत में अपना हिस्सा लेकर ही रहेगी भले ही उसके लिए उसे कुछ भी करना पड़े । इस कार्य में उसके पति का भी छुपा आर्शीवाद उसे प्राप्त होता है । परिवार के लोग कहते है । कि रात - दिन कठिन परिश्रम करके हमने ईख बोई । तब तुम अपने पति के साथ शहर में गुडछर्रे उडा रही थी । इसलिए ईख में आपका कोई हक नहीं हैं । तब देसुई कहती हैं कि " पन्द्रह बरस हम परिवार ले परदेश रही । तब तक का हिसाब दो । नहीं तो तुम भी हमारी तरह पंद्रह बरस बाहर रहो ।"[१२] घर के अगवारे - पिछवारे चोरी - छुपे लोग कान पारे खड़े थे । कुछ लोग काफी प्रसन्न थे कि अच्छा हुआ इस घर में दो चूल्हा जला । कुछ लोग असमंजस में पड़ गये । कि दोनों भाईयों में बड़ी सुलह थी, फिर एक दम दरार कैसे पड़ी फिर भी धमका बन धमकी देने में तुला था कि वह हिस्सा नहीं देगा । देसुई भी जिद में अडकर बोली को हिस्सा तो मैं हाईकोर्ट में भी जाकर लूँगी । सभी लोग परदेशी बाबू को कहने लगे औरत को मालकिन बना दिया । परदेशी बाबू हंसकर बोले । - "मैने किसी को कुछ नहीं बनाया हैं । परिस्थितियाँ व्यक्ति को कुछ न कुछ बना देती हैं । परिस्थितियों का मुकाबला सबको करना चाहिए। क्या स्त्री क्या पुरुष ।"[१३]

परदेशी बाबू ने महसूस किया कि आज गाँव - समाज में नजर घूमाए तो यही काण्ड - प्रकाण्ड घर - परिवार में हो रहे हैं । वकीलों के दाँव पेंच के अनुयायी दीवानी में पैदा हुए लोग गाँव की मिट्टी में पले - पोसे , सीधे - सादे निर्दोष लोगो को बुला - फुसलाकर दीवानी में ले जाते हैं । चालबाज, बेईमान, अहमक लोग खुद अपनी छान - छप्पर फूँककर निर्दोष लोगो को जेल की हवा खिलाते हैं । ऐसे असामाजिक तत्वों के बीच से दीवानें पैदा होते हैं । और दीवानी की गोद भरती हैं । दीवानी के छक्के - पंजे में जानकर पेशेवर लोग अपने घर-परिवार से अटूट रुप से जुड़े ले तो दीवानी तक पहुँचा देते हैं । उन्हीं में से देसुई भी हैं । परिवार में दस सभ्यों के बीच देसुई रहती थी फिर भी नरपिशाच ने उसका जीना दूभर कर दिया था । शहर में जाने के बाद देसुई के व्यक्तित्व में निखार आ गया है । वह कभी रसांगना थी । लेकिन परिवार के लोग उसे सोरया समझ कर फेकना चाहते थे । वे नहीं जानते कि बांके से घायल होकर, कोल्हू में पिलकर, छाया में सूखकर गुडउर में जलकर और राख बनकर भी ईख नष्ट नहीं हो जाती । बल्कि उसकी राख खाद बनकर भावी ईख को ही नहीं, अन्य सभी फसलों को शक्ति प्रदान करती हैं । ठीक उसी प्रकार से देसुई भी परिवार के सभी सदस्यों को शक्ति प्रदान करती थी ।

५. - गयावार के पेड़

'गयावार के पेड़' कहानी में सूर्यदीन यादव जी ने गाँव के लोगो के पेड़ लगाने तथा उस पेड़ का नाम गयावार का पेड़ नाम देने के प्रति उनकी धार्मिक श्रद्धा भावना का वर्णन किया हैं ।

रामू काका गयावार का पेड़ लगाते हैं और अपने कन्धे पर डंडे में बंधे दो घडे लादकर वृक्षो को पानी पिलाते थे । कुएँ से पानी खींचते हुए उनके हाथ में छाले पड़ जाते थे । पशुओं और जानवरों से पेड़ की रक्षा के लिए काका ने थाल्हों को बर्हर बबूल के काँटो से रुंध दिया था । लेकिन वही आम के पेड़ को रामू काका के मरने के बाद जमीदार हथिया लेते हैं । और उस पेड़ की अपनी मालकी समझते हैं । रामू काका का बेटा अमर अपने मित्र भागल और घीमर के साथ आम खाने जाते हैं । और ढ़ेला उठाकर आम को मारते हैं । आम भद् - भद् करके जैसे ही जमीन पर गिरते हैं । पेड़ के चौकीदार मजदूर जो अपने आपको जमीदार ही समझते हैं । अमर और उनके मित्रो को आम पर ठेला मारने से मना करते हैं । और कहते है । कि जो आम जमीन पर पेड़ हो उसी को ही बिन कर खाओं । इसपर अमर कहता हैं कि ये पेड़ बाबा ने हमारे लिए लगाया है । जमीदार (लम्मरदार) ने जबरदस्ती कब्जा कर लिया है । ये बात बगिया के चौकीदार जाकर लम्मरदार को कहते हैं । लम्मरदार अमर को बाग में ही पकड़ लेने को सूचित करता है । तभी भागकर अमर अपने कुछ मित्रों के साथ लम्मरदार के घर पर हमला बोल देता हैं । लम्मरदार लड़को की टोली अपने घर की तरफ आँधी - तूफान की तरह आती देखकर, उन्हें रोकने के लिए हवा में फायरिंग करते हैं । लेकिन लड़के फिर भी नहीं रुकते तब वे दुबारा हवा में फायरिंग करते हैं । तब भी बच्चे रुकते नहीं तब जब तीसरी बार लम्मरदार हवा में फायरिंग करने की कोशिश करते हैं। इसने में दौड़कर अमर बन्दूक की नली पकड़कर लम्मरदार से बन्दूक छीन लेता है । लेकिन आवेश में आकर वहीं खड़ा रहता है । यह नहीं सोच पाता कि लम्मरदार के भाई वही पर बन्दूक लेकर खड़े हैं और वे अमर को गोलियों से भून देते हैं । जिस प्रकार से युद्ध में राजा के मरने के बाद सैनिको में भगदड़ मच जाती है । ठीक उसी प्रकार से वीर साहसी अमर के मरने के बाद उसके साथियों में भगदड मच जाती हैं । अमर की बूढी माँ आज भी अमर के नाम पर आम का पेड़ लगाती है । कहते हैं "ये पेड़ गयावार के हैं । लोग आज भी गया, बनारस, बद्रीनाथ, केदारनाथ, द्वारका जैसे तीर्थधामों के दर्शन करके लौटते हैं तो अपने पूर्वजो के नाम लगाये । आम के पेड़ गयावार के नाम से संकल्प देते हैं।"[१४]

६. बिना बाप का बच्चा

'बिना बाप का बच्चा' कहानी में कहानीकार सूर्यदीन यादव जी ने विधवा नईकी के जीवन का चरित्रांकन तथा ढोंगी समाज की न्याय प्रियता पर करारा चोट किया हैं।

अल्पायु में ही नईकी का पति मर जाता हैं हमारे समाज में सबसे उपेक्षित पात्र समाज की विधवा नारी हैं । वह अपनी बेटी के साथ रहती हैं । लेकिन सोचती हैं कि बुढ़ापे में सहारें के लिए एक लड़का चाहिए । इसके लिए वह समाज की सारी परम्परा तोडे । उससे जूझने के लिए वह मानसिक रुप से तैयार हो जाती हैं । रात - दिन यही सपना देखती है कि उसे लड़का हुआ है और उसके घर सोहर गया जा रहा है। सात - आठ साल के देवर को नईकी अपने बेटे की तरह रखती । काम करने में भी हंमेशा खेत - खलिहान में अपने ससुर के साथ लगी रहती । ससुर साठ - पैंसठ साल के हैं । गाँव के लोग बोली - बोलते कि नईकी ससुर का दिल बहला देती होगी। इस पर उसकी सासु उस पर अंकुश रखती । पहले से ही वहेमी स्वभाव की है । जब भी नईकी को गाँव के किसी भी मरद के साथ बात करते देखती उसे भला - बुरा कहती। छद्दर का घर नईकी के घर के सामने था । घास - चारे के बहाने नईकी छद्दर को अंखियाकर निकल जाती हैं । फूली घगधान सिवान वहाँ कौन देखता । छद्दर भी मेड़ी - डांडे सुंधियाता पहुंच जाता हंसिया लिए । पत्नी ताड़ जाती । तो पत्नी को मार-पीटकर ठीक कर देता। दिन-प्रतिदिन नईकी के बढ़ते पेट को लेकर भाटीपुर गाँव में कानफूसी होने लगी। सासू भुनभुनाती कि करमजली ने यह क्या मीढई लिया । मैं दुनिया में मुँह दिखाने लायक नहीं रही । सासु का भुन-भुनाना नईकी गुटुर - गुटुर पी जाती । जमादार पति - पत्नी पतोहू के कुकृत्य से कुढ़ते पर करते क्या ?

सासु जी कलकलाहट करती । हाथ जमकाकर कहती —

इस भतारकाती ने खानदान का नाम बोर दिया । अरे छिनारिन को यही मीढना था, नहीं रहाईश हुई तो दूसरा भतार कर लिया होता ।

लेकिन नईकी को इसकी कोई परवाह नहीं वह सोचती हैं कि मेरा बेटा है बुढ़ापे की लकड़ी बनेगा । जायज हो या नाजायज दूसरे का बेटा देख चरचराती हो । तुमने काहे को पैदा किया तब सासु जी चुप हो जाती । नईकी कहती हैं लोग औरतों के रहते हुए ईधर - उधर मुँह मारते हैं । मैने पति के न रहने पर ऐसा किया तो क्या गलत किया। बगल में ही लगड़ाइन का पति परदेश गया है वह दूसरों के मर्दो के साथ घूमती है उसे कोई कुछ नहीं कहता है । आखिर में पंचायत बैठी और पंचो ने ऐसा तय किया कि

लडके का बाप - और माँ दोनों आकर समाज में सबके बीच स्वीकार करें। तभी उसका बाप कौन हैं। यह माना जायेगा। क्योंकि नईकी कुछ भी बोल सकती हैं। नईकी को छद्दर पर पूरा विश्वास था। इसीलिए वह छद्दर के पास जाकर सब कुछ सच - सच बताने को कहती हैं। तब छददर उसको पहचानने से भी ईन्कार कर देता हैं। तब नईकी छद्दर को समाज में सबके सामने चाटा मारती है। तब वह अपना बचाव करता है। कि नईकी मुझे बदनाम करना चाहती है। तभी पूरे समाज में नईकी को बदनाम होता देखकर उसका पितयाउत देवर दहबंगिया खड़ा होकर कहता है। कि बच्चे का बाप वह हैं और समान के सभी लोगो को वह उस जुल्म के लिए भात खिलाने को तैयार है। ऐसा करके वह नईकी की इज्जत बचाता है।

७. - लौट आती कहानी

'लौट आती कहानी' यादव जी की गाँव की एक युवती श्यामा की कहानी है जिसे बचपन में ही कोढ़ हो गया था। उसके पिता जी परदेश में थे और परिवार वालों को श्यामा की बिमारी का इलाज करवाने के लिए महीने के सौ रुपये भेजते थे। लेकिन परिवार वाले वे रुपये खा जाते थे। इसी वजह से श्यामा का ठीक ढ़ंग से इलाज नहीं हो पाया। यहीं नहीं परिवार के लोग उसे सताते थे। घर का सारा काम करवाते थे। घर में नोंकरों की तरह उसके साथ बर्ताव करते थे। जब तक खेत जाकर चारा काटकर न ले आये तब तक भोजन नहीं मिलता था। गाँव का एक छोटा बालक दिलबहादुर ही सिर्फ श्यामा की मनोदशा को समझने की कोशिश कर रहा था। लेकिन उसके परिवार वाले कभी भी उसे श्यामा से बातचीत करने नहीं देते थे। फिर भी मौका मिलने पर दिल्लू उससे चोरी चुपके से मिलता और बातचीत करता था। तब श्यामा अपने मन की बात उसे बताती थी। कोढ़ की बीमारी के कारण डंके की चोट पर श्यामा की शादी नहीं हो सकती थी। इसलिए उसकी शादी गुप्त रखी गई। जिससे किसी को पता न चले। फिर भी गाँव के एक चुगलखोरने जाकर श्यामा के पति का कान भर दिया। यही वजह थी कि शादी के बाद श्यामा अपनी ससुराल में तीन दिन तक थी। लेकिन उसके पति ने उसके साथ बातचीत भी नहीं की। तीसरे दिन रस्म के अनुसार उसके पिता ससुराल से उसे आन ले आये। तब से लेकर आज तक श्यामा मैके में ही रहती हैं क्योंकि उसके ससुराल वालों ने दुबारा श्यामा की विदाई नहीं कराई। यही नहीं श्यामा की बीमारी के कारण उसकी छोटी बहन धरमी के साथ भी उसके ससुराल वाले बुरा व्यवहार करते हैं। शादी के पहली रात को उसका पति साड़ी उतारने को कहता हैं।

तब धरमी कुछ समझ नहीं पाती कि ऐसा क्यों कह रहे हैं वह सोचती हैं की ऐसा कोई रिवाज होगा । लेकिन थोड़ी ही देर के बाद उसका पति आकर साया उठाकर कुछ देखता है और यह कहते हुई चला जाता है । कि कही कोई दाग नहीं है । धरमी पल भर में ही सब कुछ समझ जाती हैं । लेकिन दिल्लू की बड़ी बहन को कोई रोग नहीं था। फिर भी दहेज के लालच में उसके ससुराल वाले उसे घर से भगा देते हैं । समझा-बुझाकर उसे परिवार वाले फिर से ससुराल भेज देते हैं । यहाँ से वह गायब हो जाती है तथा एक सप्ताह के बाद गाँव के एक कुएँ में से उसकी लाश मिलती है । पता नहीं कि ससुराल वाले स्वयं उसे मारकर कुएँ में फेंक दिये थे या स्वयं उन लोगो के त्रास से तंग आकर बड़की कुए में कूद गई थी ।

८. - दहशत का हथौड़ा

'दहशत का हथौड़ा' कहानीं में कहानीकार ने भारतीय गाँवो में हिन्दू मुस्लिम एकता की मिसाल कायम की है । तहमत और शिवचन अच्छे दोस्त हैं । अलग धर्म जाति के बावजूद भी वे दोनों मित्र गाँव में सांझा में खेती करते हैं । लेकिन गाँव वालों से उनकी दोस्ती देखी नहीं जाती और दुश्मनी का बीजारोपण कर देते हैं ।

खंडहा गाँव कई टोला - टोलियों में बंटकर भी अपनी एकता की मिशाल कायम किये हुए है । कुछ रिक्शेवाले, इक्केवाले कभी-कभी आपस में टकरा जाते । लेकिन उनके तर्राने - तटकाने से न तो तिल भर जमीन उठती है और न रत्तीभर आकाश झुकता है। शिवचन के मुहार के आगे सिया - सुन्नी, मुसलमानों के सात - आठ घर हैं । उनमें पहला घर तहमत मियां का है । सभी लोग मिलजुल कर रहते हैं । और इनका मुख्य पेशा खेती है । एक गाँव में कई जाति और धर्म के लोग इस तरह मिल - जुलकर रहते हैं कि उन्हें अलग करके देखना बेमानी होगी । एक पेड़ की दो शाखाओं की तरह शिवचन और तहमत आज भी पड़ोसी हैं । तहमत मस्जिद में नमाज पढ़ आते हैं । और शिवचन मुंहार पर बने देवथान्ह पर पूजा पाठ कर लेते हैं । शिवचन और तहमत की दोस्ती देखकर लोग दांतो तले उगली दबाते । कोई जल्दी से भांप नहीं पाता कि वे दोनों अलग जाति और धर्म के हैं । छंगू कोरी दोनों का हरवाहा है जो शिवचन पंड़ित के घर खेती का काम करता है । उसे शिवचन पंड़ित का बेटा नोहर पानी का लोटा थमा देता हैं । तब बगल के ही खेत में काम करते गुप्ता जी टपोसी करते हैं कि पंड़ित जी लोटा छंगुआ के हाथ में देकर धरम - करम भ्रष्ट कर दिया । तब शिवचन कहता है कि — " सेठ जी धरम कैसे भ्रष्ट होता है उसे तो आप ही जानें । मैं तो बस इतना जानता हूं कि कर्तव्यनिष्ठा और कार्य के प्रति श्रद्धा व ईमानदारी ही सच्चा धर्म है । आदमी

के स्पर्श से मिट्टी से सोना उगता है । छंगू भी आदमी है। वह खेत को जुताई, बुआई, सिंचाई, निराई, कटाई, मंड़ाई करता है ।"[१५]

अचानक ही गाँव में न जाने कैसी हवा चलती है कि लोग एक दूसरे से बातचीत करना ही बन्द कर देते हैं । अयोध्याकांड को लेकर गाँव के सभी लोग मिलकर दबाव डालकर शिवचन और तहमत के बीच बंटवारा करवा देते हैं । उनके बैलों की गोई का भी बटवारा हो जाता है । दोनों मित्र एक दूसरे के साथ ऐसा व्यवहार करते जैसे एक दूसरे को जानते ही न ही । अब खेती कैसे की जाये । इसकी समस्या खड़ी हुई । दोनों मित्र बाजार जाकर एक - एक बैल और ले आये । लेकिन झूरी के बैल की जोड़ी हीरा - मोती की तरह यह जोड़ टूट जाने के बाद ठीक से खेती न हो पाती । अब शिवचन को खेती स्वयं करना पड़ता है । पहली बार उजरके और मकरके का बंटवारा हो गया था । लेकिन छंगू का बटवारा कैसा होता। छंगू सोचता कि मनई को अपने राम और खुदा पर विश्वास नहीं रहा । वही छंगू अब धनराज सेठ का हलवाहा हो गया । शिवचन के बैल खेत में शिवचन को बहुत परेशान करते । क्योंकि गोरके-मकरके की जोड़ी टूटने पर बैल खुश न थे । वह झूरी के बैल की तरह भागकर गोरका बैल मकरके बैल के पास जाकर खड़ा हो जाता । तहमत मियाँ और शिवचन पंडित एक - दूसरे को देखते और उनके आँखो में पानी आ जाता ।

९. - परदेशी की एक रात

'परदेशी की एक रात' कहानी में कहानीकार सूर्यदीन यादव जी ने रोजी - रोटी की तलाश में गाँव छोड़कर शहर जाने वाले भोला के जीवन का विभ्रांत चित्रण किया हैं । परदेसी बाबू गाँव आए हैं । गाँव में काफी परिवर्तन हो गया है । गाँव तक पक्की सड़क बन गई है । सड़क के किनारे पक्की दुकानें बन गई हैं । परदेशी बाबू का ही मकान कच्चा है । परदेशी बाबू को गाँव में आता हुआ देखकर गाँव के बच्चे उछलने लगे । सभी लोग परदेशी बाबू को रामजोहार करके चले जाते हैं । किसी के पास भी परदेशी बाबू के पास बैठने या बातचीत करने का वक्त नहीं है । परदेशी बाबू सोचते हैं कि गाँव के लोग शहर के लोगो से ज्यादा व्यस्त हैं । दिन जैसे - तैसे बीत जाता हैं । रात होते ही पत्नी चन्दा रोने लगती है । और कहती हैं कि - "तुम्हें पाकर लगता है सारा सुख मिल गया है । तुम्हारे न रहने पर मन न जाने कैसे - कैसे हुआ करता था । बड़े निर्मोही हो जाते हो । जाने के बाद जैसे भूल जाते हो । चिट्ठी चौपाती भी नहीं भेजते कि पढ़कर जी को तसल्ली मिलती । तुम्हे क्या पता बिना पानी की मछली की तड़प ।"[१६]

चंदा बताती हैं कि गाँव का ही लड़का झगरु रास्ते में आते - जाते उसे तंग करता था । लेकिन एक दिन उसको जोर से डाँट देने के बाद अब मेरी तरफ देखता तक नहीं है । घरवालें भी चंदा को मानसिक रुप से परेशान करते हैं । वह परदेशी बाबू को बताती हैं कि घर के लोग ताना देने हैं । कि तू किसकी कमाई खायेंगी ? तेरा पति पैसा नहीं भेजता । कमाकर जमा कर रहा है । मैं रोकर चुप हो जाती हूँ । तुम्हारी चिट्ठी पर किसी को विश्वास नहीं होता । सभी पैसे के साथी हैं । इतना भी कोई नहीं सोचता कि प्रेस की छोटी - सी नौकरी, मिलता ही क्या होगा । ऊपर से पढ़ाई का खर्च । खाना - पीना कहाँ से आता होगा ? बचत ही क्या होगी ? लेकिन घरवालों को बस मनीओर्डर चाहिए । न जाने क्या लिखा हैं किस्मत में । सोचती हूँ पढ़ लिख लेते । बदा होगा तो कभी सुख मिलेगा । सब कुछ सहूँगी । तुम पढ़ाई न बन्द करना। मेरे गहने बिक जाएँ परवाह नहीं । सबको बोलने दो । कहाँ तक बोलेंगे । सब परिवार के हैं, गैर तो नहीं । पर जुल्म - सहते - सहते कभी मन उदास हो जाता है । भोला पत्नी की हिम्मत और नेक विचार देखकर दंग रह जाता है । वह सोचता है कि चंदा कितनी समझदार है। इतना त्याग, विवेक, साहस कहाँ से उसने इकट्ठा किया होगा । चंदा की बातों से घर- परिवार की सारी सच्चाई भोला को पता चल जाती है । वह इतनी सुसंस्कारी है कि जल्दी वह अपने पति का नाम तक नहीं लेती है ।

१०. झोपड़ी का झरोखा

'झोंपड़ी का झरोखा' कहानी में कहानीकार ने एक पत्रकार जो नड़ियाद से अहमदाबाद गुजरात क्वीन ट्रेन में अपडाउन करता हैं । उसने नड़ियाद से डाकोर जाने वाले मार्ग की झोंपड़ी में किये जाने वाले देह व्यवसाय का चित्रण करके उसका नाम झोंपड़ी का झरोखा रखा है । ये झोंपड़ियाँ भारत के हर शहर में कोने - अन्तरे खाली जमीनों और फुटपाथों पर दिखाई दे जाती हैं । लगता है । सभ्यता का जामा पहनकर शहर, झुग्गी - झोंपड़ियों को पीछे छोड़कर या उनसे बचकर आगे निकलता जा रहा है लेकिन उसका गंवई संस्कार इन झोंपड़ियों को आँखो से ओंझल नहीं कर पाता है । इन्हीं - झोंपड़ियों में बनारसी ठेकेदार अपनी रखैल के साथ मिलकर वेश्यावृत्ति का व्यवसाय करवाता है । झोंपड़ियों के आसपास पान की की दुकान हैं । वहाँ पर इनके दलाल बैठकर पैसा लेकर झोंपड़ी का नम्बर देकर इस प्रकार व्यवसाय करते हैं । शायद यही कारण है कि पत्रकार काफी समय से इन झोंपड़ियों को देखता आ रहा है । न झोंपड़ियों में कोई परिवर्तन होता है न झोंपड़ी में रहने वालों में । इन झोंपड़ियों को कई बार मुन्सिपालिटी वाले उजाड़कर उठा ले गये । लेकिन ये लोग पक्षियों की तरह घास तिनके बटोर ज़ोड़कर नई झोंपड़ियाँ

बना लेते हैं । इन बेघर, बेसहारा लोगों के रहने के लिए सरकार नई - नई योजनाएँ बनाती है । खाली पड़ी जमीन में नये मकान बनाये जाते हैं — उनके रहने के लिए। किन्तु शहर की ये झोंपड़ियाँ अपने घूँघटदार झरोखे से हंमेशा झांकती रहती हैं । लेकिन इनके ठेकेदार बनारसी जैसे लोगो का कद - बल बढ़ते चला जाता है । अड़ोस - पड़ोस के लोग कभी - कभी इनकी प्रवृत्तियों पर शिकायत करते हैं । तब पुलिस वाले अनसुना कर देते हैं । क्योंकि सरकार जितना वेतन देती हैं उसका दो गुना हप्ता वसूली करते हैं । तभी तो एक पुलिसवाला एक वेश्यावृत्ति में जुडी औरत को कहता हैं कि " तू किसी की बीबी नहीं है । तेरा धंधा मेरे डंडे पर चलता है । अभी दो डंडे चूतड पर पड़ेगें...... । निकाल रुपये, नहीं तो तेरी झुग्गी उजड़वाकर तुझे अन्दर करवा दूँगा । साली झूठ बोलती है । मुझे मालूम है इन झोंपड़ियों में क्या होता है ? देती है या डंडे मार कर अन्दर करुँ । इसके साथ पुलिस वाले ने झोंपड़ी पर डंडा फटकारा ।"[१७]

इन लोगों की कमाई का कुछ हिस्सा पुलिस वाले कुछ दलाल लोग खा जाते हैं। लड़की कहती है कि अरे, जिन्हें ऊँची अट्टालिकाओं में सन्तोष नहीं मिलता, उन्हें इन झोंपड़ियों में तृप्ति मिल सकती है । हाथ में लड़कियाँ पर्स लेकर चलती हैं जो यहाँ का फैशन है । इसी लड़की को ठेकेदार बनारसी भ्रष्ट करता है और ऐसा आश्वासन देता है कि उसका लड़का करन उसके साथ विवाह करेगा । ऐसा कहकर अपने साथ रखता है लेकिन उसका लड़का उससे ज्यादा भ्रष्ट निकलता है । एक दूसरी लड़की से शादी करके भाग जाता है । लड़की की आप बीती सुनने के बाद पत्रकार दूसरे दिन अखबार में बड़े अक्षरों में 'झोंपड़ी का झरोखा' । शीर्षक से उसकी कहानी छाप देता हैं । अखबार में अपने कारनामों को सुनकर बनारसी ठेकेदार झोंपड़ी में आग लगाकर अपने बेटे करण तथा पत्नी शान्ति के साथ भाग जाता हैं ।

११. जगत जहाँ गीता रचना

कथाकार सूर्यदीन यादवजी की कहानी 'जगत जहाँ, गीता, रचना में गीता और रचना दोनों जेठानी-देवरानी हैं । इस कहानी में दोनों के जीवन का वृतांत चित्रण किया गया है । जगत और गीता का प्रेम देहाती सामाजिक सम्बन्धों को पकड़कर आगे चलता है।

जगत और जहाँ दोनों भाई हैं । जहाँ की पत्नी का नाम रचना हैं और जगत की पत्नी का नाम गीता हैं । दोनों जेठानी - देवरानी हैं । घर का काम पूरा करने के बाद दोनों एक दूसरे के जीवन में कैसे आई ? इस बात को लेकर बातचीत कर रही होती हैं । रचना, गीता को कहती हैं कि तू जगत के जीवन में पहले आई । इसलिए आप

बताओ कि दोनों का मिलन कैसे हुआ ? गीता बताती है कि वे और जगत एक साथ ही स्कूल में पढ़ते थे । पंडित दातादीन तिवारी उन्हें पढ़ाते थे । तब से जगत मेरे ऊपर लट्टू हो गया था तथा हम दोनों एक दूसरे को चाहने लगे थे । पंडित जी ज़ब भी पढ़ाते रहते, जगत, मेरी ओर ताकता रहता था । मैं भी पानी में मछली की तरह सर्र - सर्र सरकती, छलकती रहती थी । फिर भी जगत को परेशान किया करती थी और उसको देखकर भाग जाया करती थी । जगत मुझको बुलाने के लिए आम के बगीचें में जाकर गीत गाया करता था, लेकिन मैं सब कुछ जानते हुए भी समाज की बेड़ियों को तोड़ न पाती । बचपन में मुझे कोई सुपती, दुरपती तो कोई श्यामा, फूलकली कहकर पुकारता, लेकिन जब जगत ने मुझे गीता कहकर पुकारा, तब मुझे यह नाम बहुत पसंद आया । तब से मैं इसी नाम से जानी जाने लगी । उसके बाद एक दिन पंडित जी ने मुझे जगत के साथ शादी के फेरे घुमाकर सदा के लिए बाँध दिया । तब से मैं यहाँ खुश हूँ । तब रचना अपनी प्रेम कहानी जहाँ को लेकर गीता से बताती है । वे और जहाँ भी गाँव से पैदल पढ़ने जाया करते थे । तब से जहाँ और मैं एक दूसरे को बहुत चाहते थे, लेकिन रचना की माता हंमेशा बताया करती थी कि बेटा रास्ते में आते - जाते समय किसी भी लड़के से बात चीत मत करना । इस डर से जल्दी वह जहाँ से बातचीत नहीं करती थी जहाँ को कविता, कहानी लिखने का विशेष शौक था । इसलिए छात्र जीवन में वह काफी प्रसिद्ध था । रचना गीता को बताती हैं कि उसका असली नाम करमी था, लेकिन जहाँ ही प्रेम से उसे रचना कहकर बुलाया करता था । बाद में करमी को यह नाम काफी अच्छा लगा । फिर धीरे - धीरे वह करमी से रचना बन गई । बाद में रचना की शादी जहाँ से हो जाती हैं । तब से वह जहाँ के साथ रहती हैं और काफी खुश हैं । जेठानी - देवरानी एक दूसरे की प्रेम कहानी सुनकर खुश होती हैं ।

१२. - फाटक खुलने के इन्तजार में

'फाटक खुलने के इन्तजार में' कहानीकार सूर्यदीन यादव जी रोजी - रोटी की तलाश में गाँव छोड़कर शहर की तरफ पलायन कर जाते हैं और शहर में जाकर चाली के मकान में एक साथ दस - बीस लोग के साथ रहने लगते हैं वहाँ शौच जाने के लिए सार्वजनिक शौचालय का उपयोग करते हैं । वहाँ पर शौच में जाने के लिए सुबह चार बजे से ही कतार लगी हुई रहती है और बाहर खड़े सभी लोग फाटक खुलने का इन्तजार कर रहे होते है । इन्हीं में से एक जगन्नाथ भी है जिसे नौकरी जाने की जल्दी है । वह मील में बदली भरता है । काम मिले या न मिले, लेकिन बदली भरने वाले

कारीगर को मील तक जाना जरुरी होता है । यहाँ काफी समय से वह कतार में खड़ा है, लेकिन उसका नम्बर ही नहीं आता हैं । तब वह सोचता है कि गाँव में प्रकृतिदत्त संड़ास के बारे में जहाँ कभी लाइन लगाना ही नहीं पड़ता। इस नारकीय जीवन से कब छुटकारा मिलेगा ? इस सार्वजनिक शौच के चारों तरफ सुअर घूमते रहते है । सुअर पवित्रता एवं एकता के प्रतीक कहे जाते हैं, क्योंकि पूरे शहर की एक जुट होकर सफाई करते हैं । कतार में खड़े लोगों के बीच कभी-कभी आपस में मार भी हो जाती है । एकबार चमार के लड़के को उच्चवर्ग का एक लड़का मार देता है । वह जमीन पर गिर पड़ता है । वहाँ पर खड़े लोग कहते हैं, "इसके मर - जाने पर गाँव - गाँव घूमकर भिक्षा माँगकर प्रायश्चित करना पड़ेगा ।"[१८] वहाँ पर खड़ी एक काकी बताती है । परसाल भलहा दूबे ने जमीन के झगड़े में कलुआ चमार को मार डाला था । बिरादरी वालों ने भलहा पर बरमदोख लगाया था । बाद में पेट्टू लोग खा - पीकर भलहा को पक्का कर दिया था, तो इन छोटे लोगो को मारने से कुछ पाप नहीं लगता । जगन्नाथ फाटक खुलने के इन्तजार में खड़ा है । फाटक खुलते ही कोई दूसरा आदमी घुस गया । वहीं खड़ी लछिमियां एक हमजोली से अपनी आप बीती बताती है कि उसके पति रेलवे में नौकरी करते थे, लेकिन भरी जवानी में उसका साथ छोड़कर स्वर्ग सिधार गये । लछमिया दूसरी शादी करना चाहती थी, लेकिन घरवाले सोचते कि यदि लछमिया की दूसरी शादी कर दी गई तो पेंशन बन्द हो जायेगी और उनको पैसा मिलना बन्द हो जायेगा । जेठ और देवर गाँव वालों के साथ मिलकर लछमिया के चरित्र पर कीचड़ उछालते हैं । किसी ने पुलिस के कानों में फूँक दिया कि लछिमिया हरदासपुर के लौंडो को बिगाड़ती हैं, जिससे गाँव की बदनामी होती है । पुलिस वाले आते । धाक - धमकी देकर कुछ वसूल ले जाते । मेरे पास जिस्म के सिवा था ही क्या ? कभी मुझे थाने पर बुला ले जाते और सुबह में छोड़ देते। घर और गाँव वालों के कारण पुलिस ने भी मेरा जीना हराम किया । जिन लोगो ने मुझे भ्रष्ट किया था, उन्हीं लोगों ने मुझे पुलिस के हवाले कर दिया । बाद में यही लोंग बहला - फुसलाकर अहमदाबाद लाकर मुझसे धंधा करवाते हैं । दूसरी तीसरी रात नये - नये दोस्त आते । पता नहीं किस नाम - जाति के । कोई हड़ियारा, तो कभी कोई तिलक धारी, कोई मुच्छड़ तो कोई सफाचट । उन हन्सियों के हवस पूरा करती। तंग आकर एक दिन गुस्से में कह दी, — "मुझे रंड़ी बनाने लाया था ।"[१९] अचानक ही कुछ दंगाई लोग आकर भूखल को मारते हैं । भूखल अल्लाह की सौगन्ध खाकर कहता हैं कि वह मुसलमान हैं शौच में बैठे जगन्नाथ यह सारी बातें सुन रहा है । वह भूखल की आवाज पहचान गया और सोचने लगा कि कल तक यही भूखल माइक में बोलता

था कि हिन्दुस्तान हिन्दुओं का हैं । आज खुद वह प्राण बचाने के लिए खुदा का बन्दा बन गया है । मरने के डर से मुल्ला बन गया है । जीवन की ख्वाहिश में आदमी अपनी जाति, अपना धर्म बदल देता हैं जगन्नाथ मारे डर के शौच का फाटक नहीं खोलता हैं तथा उसी के अन्दर बैठा रहता हैं लोग फाटक खुलने का इन्तजार करते हैं ।

१३. भैया

"भैया" नामक कहानी में कहानी कार सूर्यदीन यादव जी ने भाषा दोष या भाषा की समझ न होने के कारण होने वाली गलत फहमियों का वर्णन किया हैं । भगवान भाई पटेल स्वाध्याय परिवार वालों के साथ कुंभ मेला में स्नान करने के लिए अपने संघ के साथ त्रिवेणी संगम इलाहाबाद जाते हैं । वहाँ एक कॉलेजियन लड़की भगवान भाई को भैया जी कहकर संबोधन करती है । तब वे लड़की को कहते हैं कि मैं भैया जी नहीं हूँ मैं तो पटेल हूँ । लड़की गुस्सा होती हैं । लेखक वहीं पर खड़े दोनों की बात सुनकर भगवान भाई को समझते हैं, भगवान भाई ! आप लोग गुजरात से आये हैं । मैं भी दो - तीन साल वहाँ रह चुका हूँ । दरअसल भाषा - बोली को न समझ पाने के कारण आप दोनों एक दूसरे को गलत समझ बैंठे । 'भैया जी' कोई जाति नहीं होती है । भैया जी का अर्थ होता है 'भाई साहब' । पहले मैं भी गुजरात के लोगों को भैया जी का अर्थ समझा नहीं पाया था । लेकिन किसी दूसरी भाषा को न समझकर उसकी अवहेलना नहीं की जा सकती । बाद में एक ही बस में बैठकर पटेल और वह युवती आगे की यात्रा करते हैं । लड़की स्वाध्यायी लोगो को कहती हैं कि अपने घर में परिवार के सदस्य बेटों की सही मार्ग दर्शन नहीं देते हैं वे लोग राह - भटके हुए हैं और आप लोग भगवान की खोज में इधर - उधर भटकते रहते हैं । भगवान से अटूट रुप से जुड़ा भक्त भक्ति करता हैं । भगवान तुम्हारे - हमारे सबके पास सदा रहते हैं । भक्ति के माध्यम से आत्मा और परमात्मा का दिव्य मिलन होता है । जिससे हमारे सम्बन्ध - रिश्ते मजबूत बनते हैं । स्वाध्यायी कोई सम्प्रदाय नहीं हैं । एक पुरुष किसी का बेटा, किसी का पति और किसी का पिता हो सकता हैं । भगवान के साथ हम अटूट रुप से जुड़े हुए हैं। हम एक ही पिता की सन्तानें है, लेकिन हमने अपने - आप को अपने स्वार्थ के लिए हिन्दू-मुस्लिम, सिक्ख और ईसाई में बाँट लिया हैं । सबसे पहले हम मानव हैं । अपने पेट के लिए कुत्ता तथा पशु - पक्षी सभी लोग जाते हैं, लेकिन जो मनुष्य, मानव, समाज, राज्य, देश के लिए जीता हैं, वही सच्चा मानव है, यदि मनुष्य भी पशुओं की तरह सिर्फ अपना ही पेट भरता हैं तो मनुष्य और पशु में कोई अन्तर नहीं हैं। देखते ही देखते स्वाध्यायी लोग को जिस जगह रुकना था, वह जगह आ गई और छोटी - सी लड़की फिर से

भगवान भाई को भैया जी संबोधित करती हैं । तब वे कहते हैं कि वे भगवान भाई हैं । गुजरात से आये हैं । तब वह कहती हैं कि उसके भैया ने बताया कि डाकोर में भगवान रहते हैं । उन्हीं की मेरी माता पूजा करती हैं । मेरा पैर ठीक हो जाने के लिए। तो भगवान भाई मेरा पैर ठीक कर दोंगे न । सभी लोग बालिका की मासूमियत पर हँसते हैं । भगवान भाई भी हँसकर हाँ में मुँह हिला देते हैं ।

(४) दूसरा सफर कहानी संग्रह २००५

(१) पूजा :

'दूसरा सफर' कहानी संग्रह से ली गई है । पूजा इस कहानी में कहानीकार ने 'पूजा' ढोंग-पाखंड पर करारा व्यंग्य प्रहार किया है । लेखक विश्वास दिलाना चाहते हैं कि मनुष्य का हृदय जहाँ पर श्रद्धा करे, विश्वास करे ऐसी हर एक जगह पर पूजा की जा सकती है । 'पूजा एक धार्मिक कहानी है ।' इस पूजा कहानी में लेखक ने स्वाध्याय परिवार की परम्परागत पूजा करने का ढ़ंग इत्यादि बातों का वर्णन किया है । स्वाध्याय परिवार के शिविर में सभी लोग जा रहे हैं और एक शिष्य आत्मीयश्री, रामदासजी से प्रश्न करता हैं कि ''क्या यथार्थवादी, मानवतावादी, समाजवादी व्यक्ति नास्तिक हो सकता है ?''[२०] आत्मीयश्री रामदास बताते हैं कि ऐसा व्यक्ति आस्तिक और नास्तिक दोनों ही हो सकता हैं । तभी गाड़ी में एक व्यक्ति एक औरत का बटुआ मार लेता है लेकिन वही पर खड़ा पुलिसवाला व्यक्ति अपना कर्तव्य ठीक ढ़ंग से नहीं निभाता और औरत से पूछता है कि ये बटुआ क्या होता है ? तभी औरत व्यंग्यात्मक स्वरूप में कहती है कि बटुआ अर्थात् लाल । औरत की बात सुन गाड़ी मे मौजूद सभी लोग खिलखिलाकर हँसने लगते हैं । वहीं पर एक कोने में बैठा मौलवी नमाज पढ़ रहा है । एकाएक ट्रेन का झटका लगा और ट्रेन में खड़े लड़के मौलवी के ऊपर जा गिरे । वह धक्का लगने से लुढ़क गया । शीघ्र ही मौलवी फिर से बैठकर खुदा का नाम लेने लगा । लेकिन बच्चे खिलखिलाकर हँसने लगे । जैसे ही उनकी नमाज पूरी हुई, हँसते हुए बच्चों को देखकर बोले, ''आप सभी इसी तरह क्यों हँस रहे । धन्य है ऐसे माता-पिता, जिन्होंने ऐसे नवयुवकों को जन्म दिया ।''[२१] देखते ही देखते दिल्ली शहर आ गया तथा लेखक ट्रेन से उतरकर डॉ. रामचन्द्रन के घर मैले-कुचैले कपड़े पहने हुए संकोच करते हुए पहुँच गये । डॉ. साहब ने उनके पी.एच.डी. का शोधकार्य कहां तक पहुँचा, पूछकर उनको चाय पिलाया । चाय पीने के बाद लेखक महोदय स्नान करके फिर से ताजगी महसूस करने

लगे । शाम को ही एक ही कमरे में डॉ. रामचन्द्रन के पूरे परिवार के साथ बैठ करके पिक्चर देखा । पिक्चर देखने के बाद उनके मन का यह भ्रम दूर हो गया कि पिक्चर देखने से बच्चे खराब हो जाते हैं क्योंकि यहां पर तो पूरा परिवार एक साथ बैठकर पिक्चर देख रहा था । करीब दस बजे भोजन ग्रहण करके शोधार्थीने डॉ. साहब से डरते-डरते पूछा कि 'आप पूजा-पाठ करते हैं कि नहीं ? तभी डॉ. रामचन्द्रन कहते हैं, "जो ईश्वर हमें दिखाई नहीं देता उस ईश्वर की पूजा-पाठ कैसा ?"[२२] इसीलिए लेखक भी उनके घर पर पूजा पाठ चुपके से कर लेते थे, क्योंकि लेखक ऐसा सोचते थे कि कहीं उन्हें पता चलेगा कि मैं पूजा पाठवाला व्यक्ति हूँ तो मेरे शोध कार्य में विघ्न उत्पन्न होगा । 'पहली मुलाकात' कहानी में नायक और नायिका का वार्तालाप दिल्ली महानगर और महान साहित्यकार की मुलाकात में परिवर्तित हो जाती है । कथा संस्मरणात्मक होने के बावजूद एक जीवंत अनुभव संपदा बन गई है । वह लेखक अर्थात् एक शोधार्थी की दिल्ली महानगर की पहली यात्रा की यथार्थ कथा-यात्रा है । किसी नये महानगर एवं नये साहित्यकार से प्रथम मिलन की संस्मरणात्मक कथा नवोढ़ा पत्नी के लिए एक कौतुहल बन जाती है । जबकि लेखक उस प्रथम मुलाकत से सर्जनात्मक मौलिक सामग्री से बेहद खुश होता है ।

(२) पहली मुलाकात

'पहली मुलाकात' कहानी में लेखक ने बताया है कि नवोढ़ा नीरज और शोभा का गौना आये दो साल हुए । लेकिन यह उनका प्रथम मिलन है । तभी नीरज अपनी पत्नी को, जब पहली बार शोध कार्य करने के उद्देश्य से दिल्ली गये वहां जाकर रियाज ड़ोमनपुरी का घर ढूंढने में जो दिक्कत होती है, उसका वर्णन अपनी पत्नी से करते हैं। साथ ही उनकी माताजी ने पेटी में गुड़ और सेतुवा जैसे सामान आवश्यक्ता से अधिक दे देने के करण पेटी खूब वजनदार हो गई है । उस पेटी को लिये हुए नीरज दिल्ली शहर में रियाजड़ोमनपुरी का घर ढूँढ़ते-ढूँढ़ते वे थककर चूर हो जाते हैं, किन्तु उद्देश्य एवं लक्ष्य तक पहुँचने की प्रबल इच्छा लेखक को आगे तक ले जा रही थी । लेखक अपनी पत्नी से बताते है कि दिल्ली जैसे अजनबी शहर में रियाजभाई ने जो सेवा की, वह आज भी विस्मरणीय है । उन्हीं की मदद से डॉ. सुदर्शन का पता दिल्ली युनि. जाकर ढूँढ़ते हैं तथा उन्हें बताते है कि आपके क्षीर सागर के इण्टरव्यू के प्रतिद्वन्द्वी शीलभद्र आपका सख्त विरोध करते हैं । वे नहीं चाहते कि आपके ऊपर शोधकार्य हो । इसलिए बार-बार कहते रहते हैं कि जीवित व्यक्ति के ऊपर शोध कार्य नहीं हो सकता । लेकिन ऐसे समय में देवीशंकर शुक्ल हंमेशा मेरा हौसला बढ़ाते रहते हैं कि आपका विषय बहुत ही

अच्छा है शीलभद्र जैसे व्यक्ति खुद तो कुछ लिखते नहीं है, इसीलिए दूसरे लेखकों से ईर्ष्या भाव रखते है कि उनकी रचनाओं पर कोई भी व्यक्ति शोध-कार्य न करे । लेखक की 'पहली मुलाकात' मे ही लेखक के मुँह से इस प्रकार की बातें सुनकर उनकी पत्नी ऊब जाती है, लेकिन लेखक का मन बीते दिनों के सुखद क्षण को याद करके उनका मन प्रफुल्लित हो जाता है ।

(३) चरण स्पर्श :

'चरण स्पर्श' कहानी में कहानीकार सूर्यदीन यादवजी ने चरण-स्पर्श की महिमा का गुणगान किया है कि नम्र व्यक्ति हर एक व्यक्ति का आदर्श बन जाता है । इसलिए नम्र एवं विवेकी बनकर अपनो से बडों का चरण-स्पर्श करके अपनी संस्कृति को जीवंत रखना चाहिए । कहानी की पटकथा लेखक ने नड़ियाद जैसे छोटे कस्बे से उठाकर लिखा है। बच्चे रविवार के दिन विद्यालय नहीं गये, किन्तु मन्दिर गये हैं । मंदिर में भगवान की श्रद्धा के कारण बच्चे नहीं गये है, बल्कि प्रसाद पाने के उद्देश्य से गये हैं । लेकिन जब से इस गाँव मे योगेश्वर परिवार का वर्चस्व बढ़ता जा रहा है तब से लोग मन्दिर में प्रसाद चढ़ाना और रुपये-पैसे डालना बन्द करते जा रहे हैं, जिससे मन्दिर के पुजारी को ऐसा लगता है कि स्वाध्याय परिवार के कारण उनका धंधा चौपट हो जायेगा । इसीलिए पंडित जी घनश्याम से कहते हैं, "मास्टर साहब, योगेश्वर और कृष्ण दोनों एक हैं । अलग पंथ बनाने की क्या जरुरत ? अरे, हर एक आदमी अपने नाम को बढ़ाना चाहता है । नया पंथ बनाकर उस पर लोगो को ले जाना चाहता है । जब भगवान एक है, फिर उसे बांटने की क्या जरुरत है ?"[२३] इस गांव में बड़ी पंथ बाजी चलती है । धर्म के साथ यहाँ जातिवादी, कौमवादी, गलीवादी, गाँववादी, विलायतवादी, स्वार्थवादी, ईर्ष्यावादी, शिक्षितवादी, लिंगवादी, वर्णवादी, खेती और नौकरवादी अपनत्ववादी और न जाने कौन-कौन से वादी हैं । इसीलिए घनश्याम इन लोगो के बीच घुलमिल नहीं पाते, लेकिन स्वाध्याय में बैठने के कारण लोग उन्हें स्वाध्यायी समझते हैं । घनश्याम माइक से आती हुई आवाज मातृदेवो भव:, पितृदेवो भव: सुनने को कहता है । उनकी पत्नी कालिंदी कहती है कि उन्हें संस्कृत नहीं आती । तब घनश्याम कहते हैं कि उसका अर्थ है कि माता-पिता का चरण-स्पर्श करना चाहिए क्योंकि वे देवता के समान हैं । तब कालिंदी कहती है कि मन्दिर का पुजारी रोज मातृदेवो भव: पितृदेवो भव: चिल्लाता है, लेकिन अपनी माता को जैसे नौकरानी हो उस प्रकार तुकार कर बुढ़िया कहकर पुकारता है अर्थात् उसकी कथनी और करनी में अन्तर है । लेखक नौकरी की तलाश में प्रोफेसर कृपांश से मिलने जाते हैं । उन्होंने स्वप्न में भी नहीं सोचा था कि एक प्रोफेसर इतना अच्छा वादक एवं दुकानदार हो सकता

है । क्योंकि प्रोफेसर कृपांश ग्राहक से बड़ी नम्रता से बात करते हैं और जाते - जाते लेखक प्रोफेसर कृपांश को अपना गुरु मानकर उनका चरण-स्पर्श करते हैं । जब वे बी.ए. में पढ़ते थे, तब भूगोल के प्रोफेसर डॉ. श्रीवास्तव वर्ग मे पढ़ाते समय अक्सर कहा करते थे, "बेटा झुक के चलो ।"[२४] पर आज अपने ही माता-पिता के सामने कम ही लोग झुकते हैं ।

(४) दूसरा सफर :

'दूसरा सफर' कहानी लेखक की जन्मभूमि सुल्तानपुर (उ.प्र.) से अहमदाबाद गुजरात तक की यात्रा कराती है । उसका नायक चलती ट्रेन में बैठकर अपने बचपन के दिनो को स्मरण करता है । गाँव के प्रति बेहद लगाव होते हुए भी रोजी-रोटी की तलाश में शहर को अपनी कर्मभूमि बनाता है । लेखक सोचते हैं कि शायद यहीं से इनकी जिन्दगी क दूसरा सफर शुरु हो रहा है । दूसरे देश का सफर लोग गाँव - देश छोड़ परदेशी बन जाते हैं । यह गाड़ी सबको खींचते हुए चली जाती है । बेवश, निर्बल, बेसहारा गरीब लोग मूक बने खिंचते चले जा रहे हैं । घर - परिवार, गाँव - देश - काल, खेत, सिवान, सब कुछ छुटते जा रहे हैं । लेखक ने ट्रेन में उठाये किल्लत का वर्णन किया है । गाड़ी में काफी भीड़ है । इतनी भीड़ है कि लोग साँस नहीं ले सकते, हिल-डुल नहीं सकते। ऐसी स्थिति में एक बुढ़िया का छोटा सा बालक एक बाबा का पतलून बिगाड़ देता है। बाबा बुढ़िया के ऊपर चिल्लाते होते हैं । तब बुढ़िया बाबा को समझाती है कि "जब आप भी छोटे थे, तब आपने भी किसी की पतलून बिगाड़ी होगी । ये तो नैसर्गिक प्रक्रिया है, तो फिर पेशाब से इतना धृणा क्यों ? तभी एक दाढ़ी रचे बुजुर्ग बुढ़िया पर चिल्लाते हैं कि ऐ बुढ़िया, चुपचाप बैठ । बक-बक क्यों करती है । तब बुढ़िया कहती है कि पागल हूँ इसलिए बक-बक करती हूँ । तुम्हारे लड़के नहीं होगे इसलिए तुम पेशाब की कीमत क्या जानो ।"[२५] भूल गये वो दिन, जब अम्मी की गोद में पड़े - पड़े छर्रा मारते थे । अम्मी के कपड़े भीग जाते थे । बड़े हो गये तो पेशाब से नफरत करते हो । ऐसे कहते हुए बच्चे को दूध पिलाने लगती है । देखते ही देखते लखनऊ शहर आ गया । गाड़ी रुकते हुए फ्लेट फोर्म पर पानी, बीड़ी, सिगारेट, सीट चाहिए सीट की कोलाहल सुनाई देने लगी । लेखक ने लोगों की मानसिकता का बखूबी वर्णन किया है । एक बूढ़ा व्यक्ति सुल्तानपुर से सीट में बैठकर आता है, लेकिन लखनऊ स्टेशन आते ही पेशाब करने जाता है और आकर देखता है कि उसकी सीट पर कोई दूसरा व्यक्ति आकर बैठ गया है । शादी हो जाने के बाद भी लेखक अभी भी पढ़ाई-लिखाई में जुटे हैं, जिसके

कारण उनकी भाभी और परिवार के लोग उनकी पत्नी को मानसिक रूप से परेशान करते हैं । उनकी भाभी बात – बात पर ताने मारती "किसकी कमाई खायेगी ? भतार कमाता नहीं । पढ़कर मुंशी दरोगा बनेगे । तुम पलंग पर बैठी पान कूँचोगी । खाओ, बची-खुची सूखी रोटियाँ । पहनो फटे-पुराने कपड़े सिल टाँककर ।"[२६] लेखक अपनी पत्नी को सात्वना देते पत्नी भी समझदार ! कहती, "तुम पढ़ो-लिखो मैं सारे दुःख सह लूंगी ।"[२७]

इन्हीं ख्यालों में लेखक डूबे रहे हैं । क्या देखते हैं, अहमदाबाद शहर आ गया। लेखक के लिए यहाँ पर सभी लोग अपरिचित । दूसरी भाषा दूसरी संस्कृति, दूसरा परिवेश तथा दूसरा सफर शुरु होता है ।

(५) चूहे बने साँप :

'चूहे बने साँप' कहानी में लेखक ने अपनी पारिवारिक घटनाओ का वर्णन किया है कि वे रोजी-रोटी की तलाश में वतन छोड़कर परदेश में आकर बसते हैं । वहीं पर उन्हें तार मिलता है कि उनकी बहन दिव्या का गांधीनगर में देहांत हो गया है । लेखक इस दुर्घटना से किसी तरह उभर कर बाहर आते हैं । अभी घर आकर घर का ताला खोलते ही हैं कि उनके चाचा बताते हैं कि घर से तार आया है । उनकी भाभी का दुःखद अवसान हो गया है । वे जल्दी से विद्यालय जाकर छुट्टी मंजूर कराकर घर के लिए रवाना होते हैं । तीसरे दिन अपने गाँव पहुँचते हैं । लेखक को देखते ही उनकी मां और बहन छाती पीटकर रोने लगी । उनको रोता देखकर लेखक को ऐसा महसूस हुआ, जैसे पूरा परिवेश रो उठा हो और उन लोगों के साथ लेखक भी जोर-जोर से रोने लगे। लोगों ने उन्हें शान्त किया । घर जाकर देखा तो मोहनी की बेटी गुड्डी नहीं रो रही है, क्योंकि उसको नहीं बताया गया हैं कि उसकी माता का देहांत हो गया है । जब भी वह माता के बारे में पूछती, घर-परिवार के लोग यही कहते, अस्पताल गई है, आ जायेगी। पाँच वर्षीय अबोध बालिका को क्या पता कि परिवार के लोग उससे झूठ बोल रहे हैं। लेखक के पिता जी लेखक को बताते हैं कि लेखक की भाभी को साँप काट लिया था, इसी वजह से वह मर गई । लेकिन पिताजी की बातों पर लेखक को विश्वास नहीं होता । क्योंकि इसके पहले भी मोहनी भाभी को दो बार साँप ने काटा था, वह बच गई थी । इस बार कैसे मर गई ? उसके पिता जी भी कहते हैं कि मै और शंकर यहां पर नहीं थे । इसलिए सचमुच क्या हुआ ? यह हमें भी नहीं पता । घर के लोगों ने ही हमें बताया कि बहू को साँप ने काट लिया और वह मर गई । बाद में लेखक घर में उपस्थित मोहन काका को पूछते है कि मोहिनी भाभी को क्या हुआ था ? मोहन काका मुँह घुमाकर कहते हैं कि मोहिनी बहू ने स्वयं मुझे कहा कि उसे चूहे ने काटा है ।

SMT. HANSA MEHTA LIBRARY
THE M.S. UNIVERSITY OF BARODA

बाद में रुम में जाकर सो गई। बाद में उनका पूरा शरीर काला पड़ गयी और अस्पताल ले जाते-जाते उन्होंने अपना दम तोड़ दिया । वास्तव में मोहिनी भाभी चूहा या साँप काटने से कम, घर-परिवार की बेदरकारी के कारण मर गई । क्योंकि उनका रहन-सहन परिवार वालों को पसन्द नहीं आता । इसी बात को लेकर परिवार में झगड़ा होता । परिवार के लोगों ने मोहिनी भाभी को घर से निकल जाने तक को कह दिया, लेकिन मोहिनी भाभी कहती थी कि इस घर में मेरा भी हिस्सा है । इसलिए मैं यहीं रहूँगी । इन्हीं बातों का रंज मन में रखकर परिवार के लोग योग्य समय पर मोहिनी भाभी का इलाज नहीं करवाते और वह मर गई है उनके मरने का दोषारोपण दूसरों के ऊपर थोप देते हैं ।

(६) पलभर का सफर :

'पलभर का सफर' मनोवैज्ञानिक कहानी का नायक अपने निजमन के द्वारा दिल्ली के लाल किला में पत्नी के साथ घूमता है । पत्नी आकर जब उससे बातचीत करती है तब वह कहता है कि आपने आकर मेरा सपना तोड़ दिया । अभी-अभी आपको लेकर मैं दिल्ली शहर लाल किला देखने गया था । वहाँ जाकर मैं आपसे कुछ खरीदने को कहता हूँ, तब आप आलू-भाटा खरीदने को कहती हैं । मैं आपको डाँटते हुए आलू-भाटा नहीं बल्कि रसगुल्ला खा लो, कहता हूँ । इसी समय आप आकर मुझसे बाते करके मेरा स्वप्न तोड़ देती हैं ।

लेखक की पत्नी लेखक से कहती है कि मुझे यकीन नहीं होता । क्योंकि जो व्यक्ति गाँव के रामलीला में मुझे चाट नहीं खिला सकता, वह व्यक्ति रसगुल्ला कैसे खिला सकता है ? मैं न होकर मेरी सौत होगी, तभी लेखक अपनी पत्नी पर क्रोधित होते हैं। लेखक इसके साथ उनकी पत्नी को उनकी भाभी किस तरह से मानसिक रूप से परेशान करती है, इसका भी वर्णन किया है । क्योंकि शादी हो जाने के बाद भी लेखक पढ़ाई करने तथा गाँव की खेती में परिवार वालों की मदद भी करते । फिर भी उनकी काम की कद्र न होती और उन्हें अनेक प्रकार के कष्ट झेलने पड़ते । उसी समय पवनपुत्र हनुमान के दूत उनके चाचा जी गुजरात से गाँव आकर कुछ दिन रहकर फिर से गुजरात आने की तैयारी करते । लेखक भी घर के लोगों को बताये बिना उन्हीं के साथ गुजरात आने की तैयारी करने लगे । उनको कपड़ा धोता देखकर भाभी जी पूछने लगी कि देवर जी कहीं जाने वाले हैं ? तब भी उन्हें यही कहते हैं कि नहीं भाभीजी, कपड़े गन्दे हो जाने के कारण उन्हें धो रहा हूँ । और एक दिन जब उनके चाचाजी गाँव से गुजरात आने के लिए रवाना हुए, तब वहाँ आकर चुपके से उनके कान में धीरे से कहते है, कि मैं भी आपके साथ चलूँगा और गुजरात आकर उनका यह पलभर का सफर जीवनभर का सफर हो गया । तब से लेकर अब तक लेखक यहीं के अंचल परिवेश में रहने लगें।

(७) बिना माँ का बच्चा :

'बिना माँ का बच्चा' कहानी मे कहानीकार ने हमारे समाज की बिड़म्बनाओं का वर्णन किया है । वह भी समाज ऐसा जो पढ़ा-लिखा शिक्षित वर्ण है । रामू और प्रभा के जीवन की कथा को लेखक ने यहाँ पर वाणी दी है ।

प्रभा के पिता एक बहुत बड़े वकील हैं, लेकिन प्रभा के जन्म के बाद ही उनके वकील पिता को पता चलता है कि उनकी पत्नी ने विवाह के पहले भी एक बालक को जन्म दिया था । जिसे लोक-लाज के कारण कहीं जाकर फेंक दिया था । यह जानकारी मिलते ही प्रभा की माँ को घर से बाहर निकाल देते हैं तथा प्रभा को अंग्रेजी माध्यम के विद्यालय में नाम लिखाकर एक होस्टेल में रखते हैं । यहीं से पढ़-लिखकर प्रभा बड़ी हुई और रामू नामक इंजीनियर से विवाह होकर मुन्ना नामक एक होनहार बालक को जन्म देती है लेकिन जन्म देने के बाद भी बालक को अपना दूध नहीं पिलाती तथा रसोई का काम नहीं करती । इसी बात को लेकर रामू और प्रभा के बीच में अक्सर लड़ाई होती रहती है । जबकि प्रभा की सास हमेशा प्रेमपूर्वक प्रभा को समझाती रहती है । कि "स्तनपान कराने से यौवन मिलता है । बच्चे को अपना दूध पिलाने से कुछ बिगड़ता नहीं बेटी । खाना बनाना हर स्त्री का धर्म है । अपना धर्म निभाने से कोई नौकरानी नहीं बन जाता । तू भी तो किसी की बेटी है । तू भी कभी दूध-पीती बच्ची थी । तेरी माँ ने अपना दूध पिलाकर तुझे इस लायक बनाया है । उस माँ के उपकारो को भूल जाना ना इन्साफी होगी बेटी । ले इसे दूध पिला ।"[२८] फिर भी प्रभा के समझ में कुछ नहीं आता । रामू क्रोधित होकर कहता है, मैंने आप लोगों को कितनी बार कहा कि मुझे बैरिस्टर की लड़की नहीं चाहिए । तुम लोग मेरा कहना नहीं माने । मैं पढ़ा-लिखा इंजीनियर हूँ । मुझे कोई भी लड़की मिल जाती । लेकिन अब हालात ऐसे हैं कि कहा भी न जाये सहा भी न जाये । रामू की माँ, रामू से कहती है कि बेटा धीरज रखो एक दिन अवश्य प्रभा बदल जायेगी । आखिरकार वह दिन भी आ गया । प्रभा एक वकील के पास गई थी । उन्होंने समझाया कि "जहाँ बिन बच्चे की माँ-माँ बन जाती है वहाँ तुम जैसी जनेता निज बच्चे के प्रति इतनी कठोर कैसे बन सकती है । सद्भाग्य से स्त्री माँ बनती है । तुम वापिस जाओ । प्रभा वकील चाचा की बात मानकर लौट आई । प्रभा अपने किये पर दुःखी होती है । माँ मुझे माफ कर दो ।"[२९] ऐसा कहकर वह मुन्ने को गोद में लेकर अपना दूध पिलाती है । तभी रामू की माँ प्रभा को बताती है कि वह रामू की जनेता नहीं है । अरहर के खेत में रामू को पड़ा पाई थी । वह बिना माँ का बच्चा है लेकिन मैंने अपना वात्सल्य देकर उसे पाल पोष कर बड़ा किया

था। तब प्रभा के आँखो में आँसू आ जाते हैं और रामू घर आकर देखता है कि प्रभा मुन्ना को दूध पिला रही है । उसकी खुशी का ठिकाना नहीं रहता । तभी प्रभा रामू को कहती है कि आपकी माँ आपकी जनेता नहीं है यह सुनकर वह आश्चर्य में पड़ जाता है । क्योंकि जनेता माता से भी आधिक प्यार उसकी माँ ने उसे दिया था।

(८) सिंह के बेटे उर्फ इण्टरव्यू एक नाटक :

'सिंह के बेटे उर्फ इण्टरव्यू एक नाटक' कहानी में कहानीकार ने हमारे समाज में नौकरी देते समय की इण्टरव्यू प्रथा में किये गये करारे चोट पर व्यंग्य किया है । यहाँ पर बकरी, गधा, गजराज इत्यादि इन्टरव्यू लेने बैठे है । तथा जंगल का राज्य अच्छी तरह से चला सके, ऐसे योग्य उम्मीदवार की तलाश है । सभी जंगली प्राणी बारी-बारी से अपना इन्टरव्यू देने आते हैं । सभी प्राणियों से अनेक प्रकार के प्रश्न पूछे जाते हैं, लेकिन एक प्रश्न सभी के लिए सामान्य है कि जंगल में सूखा पड़ा है, इसलिए आप पानी बिन जंगल में कैसे रहेगे ? लोमड़ी कहती है कि मैं शीत चाटकर जी लूँगी । भालू जी ने कहा मैं अपनी टपकती लार चाटकर जी लूँगा, तभी कालू बकरे का चितकबरी बकरी के लिए सिफारिश फोन आता है कि "मेरी 'बेटी चितकबरी बकरी भी इन्टरव्यू देने आ रही है, उसका ख्याल रखना ।' बन्दर महोदय से पूछा गया कि आप पानी विहीन जंगल मैं कैसे रहेगे"?[३०] बन्दर ने कहा, जी मैं फलाहार और पत्तियों से काम चला लूँगा । फिर चितकबरी बकरी का नम्बर आया । उससे पूछा गया । आप पानी बिहीन जंगल में कैसे रहोगी ? चितकबरी बकरी ने कहा कि मैं जंगल में कुआँ खुदवा दूँगी । सभी प्रसन्न हुए, लेकिन गजराज ने बकरी से पूछा कि क्या तुम्हे कुआँ खुदवाने का तर्जुबा है ? क्योंकि कुआँ वही खुदवा सकता है जिसे तर्जुवा हो । अन्त में फिर से बाघसिंह का नाम पुकारा गया और उनसे पूछा गया कि पहली बार उनका नाम पुकारा गया, तब कहाँ थे ? बाघ बताता है कि मैं बाथरुम गया था । इस वजह से आपका इन्टरव्यू रद्द भी कर सकते हैं, लेकिन बाघराज कहते हैं कि मैं इन्टरव्यू खत्म होने के पहले हाजिर हो गया हूँ । इसलिए मेरा इन्टरव्यू लिया जाये । बाघ सिंह से पूछा गया कि अभी आप क्या कर रहे है ? तब उन्होंने बताया कि जंगली समाज और विशिष्ट जंगली जातियों पर शोध कार्य कर रहा हूँ । इस रिक्तस्थान के लिए दो बार इन्टरव्यू दे चुका हूँ । इसलिए मुझे आशा है कि इस बार मेरा ही चयन होगा । लेकिन जब गधे ने वाघ से पूछा कि तुम्हारे पिताजी क्या करते हैं ? तब उसने बताया कि वह भी दूसरे जंगल के राजा हैं और उनका नाम शेर सिंह है । बकरा तुरन्त ही सम्भल गया । क्योंकि कुछ साल पहले इसी शेर सिंह को बकरो के साथ मिलकर जाल साजी से हराकर बकरा जंगल का राजा

बना बैठा था । तभी से ये बकरो की बिरादरी राज्य कर रही है । गजराज के द्वारा पूछे गये प्रश्न का उत्तर की जंगल पानी बिहीन जंगल में आप कैसे रहेंगे ? बाघ सिंह ने बताया कि पिछले बीस साल से पानी बिहीन जंगल में वह उसी गुफा में रह रहा है। तभी गजराज जी बाघसिंह का नाम घोषित करते हैं कि सभी उम्मीदवारो में जंगल का राजा बनने की क्षमता बाघसिंह में है । और सबसे ज्यादा अंक बाघसिंह को ही मिले हैं । तभी बकरा विरोध करता है कि जंगल का राजा ऐसा व्यक्ति होना चाहिए जो हमारी सुने, हमसे सक्षम न हो । इसलिए बाघसिंह के अंक घटाकर चितकबरी बकरी को जंगल का राजा बनाया जाय। जब गजराज विरोध करते हैं, तब बकरा कहता है कि इन्टरव्यू कमिटी में हमारे सदस्य अधिक है । इसलिए मैं जो चाहूँगा वही होगा और अन्त में खुशामद बाद चितकबरी बकरी को वह जंगल का राजा बनाता है ।

(९) अधूरी डायरी :

डायरी पद्धति में 'अधूरी डायरी' कहानी में लेखक ने दीप्ति और सिद्धान्त नामक पात्र उठाकर हमारे समाज में चल रहे बाल विवाह का कड़ा विरोध किया गया है । इन पात्रों के माध्यम से लेखक ने बताया है कि जब उनको किसी भी बात की कुछ समझ भी नहीं थी, ऐसे समय में गोद में उठाकर उनकी भँवरी कराकर उनकी शादी करा दी गई । आज ये दोनों बालक-बालिका समझदार होने पर खुद ही इस प्रकार के विवाह का विरोध कर रहे हैं । बड़े होने पर नौकरी की तलाश में इधर-उधर भटकते हैं, लेकिन कहीं भी नौकरी नहीं मिलती । उनके चाचा मील में मुकरदम थे । वे चाहते तो सिद्धान्त को मील में नौकरी पर रखवा सकते थे, लेकिन उन्हें मील में रखवाकर मजदूर बनाना नहीं चाहते थे । रेलवे की नौकरी का इन्टरव्यू देने दिल्ली गये । वहाँ पर भी जालसाजी एजन्टो ने तीन - चार सौ रुपये ले लिये । भाड़े के पैसे भी नहीं थे । भाई को तार करके वापस अहमदाबाद आये । अंग्रेजी अच्छी होने पर रोड़वेज में अप्लाई किया और ट्राफिक कन्ट्रोलर की नौकरी मिली और वे हिम्मतनगर रहने लगे। अन्त में पदोन्नति होने पर इंस्पेक्टर बन गये । पत्नी पढ़ी-लिखी न होने के कारण उसे बात-बात में डाँटते थे, जिससे पत्नी स्वभाव से गुस्सेबाज (गुस्सैल) हो गयी थी। वह अपना गुस्सा बच्चों पर उतारती । वह डायरी के पन्ने पलटकर पिछले जीवन को पढ़ने की कोशिश कर रहा है, लेकिन उसकी पत्नीं सत्या लाइट बन्द कर देती है । सिद्धान्त का पत्र आया है । वह पढ़-लिखकर अध्यापक बन गया । पी.एच.डी. का भी रजिस्ट्रेशन करवा दिया है और ऐसी आशा रखता है कि सत्या की बेटी दीप्ति भी एम.ए. प्रथम श्रेणी में पूरा करने के बाद पी.एच.डी. पूरा करेगी । लेकिन सिद्धान्त को शायद पता नहीं की दीप्ति इस दुनिया को ही छोड़कर

चली गई है और उनकी जीवन रूपी यह डायरी अधूरी ही रह गई । अधूरी डायरी एक अपूर्ण कथा है । कहानी पढ़ चुकने के बाद लगता है कि हम अभी कहानी पढ़ रहे हैं । वह आमतौर पर हम सबके जीवन की अधूरी कथा है । जो डायरी के माध्यम से अभिव्यक्त हुई है ।

(१०) काफी कुछ :

'काफी कुछ' कहानी के लेखक के संकोची, सर्जनात्मक व्यक्तित्व की पहचान है। संकोचनात्मक संवेदना काफी कुछ प्राप्त करा सकती है । इसके नायक को पेट की भूख की अपेक्षा साहित्य सृजन के लिए सामग्री पाने की दीर्घाकांक्षा है । कुछ समय साहित्यकार के साथ अहमदाबाद में रहकर वह काफी कुछ पा लेता है । पेट नहीं वह साहित्य का क्षुधातुर है ।

'काफी कुछ' का पात्र पी.एच.डी. का शोधार्थी छात्र है, जो वह अपने शोध कार्य के लिए अपने गुरुजनों के साथ साहित्य इकट्ठा करने के लिए भटकता रहता है । वह स्वभाव से बहुत ही नम्र विवेकी, उदार और संकोची किस्म का व्यक्ति है । वह डॉ. दर्शन को लेकर अलग-अलग साहित्यकारो एवं युनि. में साहित्य इकट्ठा करने के लिए घूमता रहता है तथा उनके साथ विचारो का आदान-प्रदान करता है । वे साहित्यकारों से पूछते है । कि "सर ! हिन्दी उपन्यास में गुजराती शब्दों का प्रयोग किया जा सकता है ?"[३१]

साहित्यकार बताते हैं कि उसके पात्र सजीव लगेंगे तथा भाषा के खिचड़ी होने का भय है, पर खिचड़ी होने के भय से साहित्य को निष्प्राण बना देना ठीक नहीं । यथार्थ को उभारने के लिए भाषा को मौलिक होना चाहिए । भाषा छीन लेने से पात्र कठपुतली और परिवेश से जुड़े हुए प्रतीत होने लगते हैं । बातो-बातों में पालडी आ जाता है और वहाँ डों. साहब के यहाँ तीनो सज्जन बैठकर भोजन करते है । भोजन करने में भी शोधार्थी संकोच का अनुभव करते हैं कि एक वे लोग है जो डटे रहते है खाने के लिए, और एक तुम हो कि आग्रह करने पर भी बहाने बाजी करते हो । लेकिन आपको क्या पता कि मैं तन जलाकर, भूखा रहकर वह काफी कुछ पा लेता हूँ, जो आप के साथ भोजन करके शायद गवाँ बैठता ।

(११) बदला :

हमारे गाँव समाज के साथ को जीवंत करनेवाला 'बदला' कहानी में सूर्यदीन यादव जी ने गांवों में दूध पीती बच्ची का वध किस प्रकार किया जाता है, उसका बखूबी वर्णन किया है ।

भूखल और दियाली पति पत्नी हैं । दियाली चार पुत्री को जन्म देती है । उनमें से चौथी का गला दबाकर मार दिया जाता है । इस कार्य को अंजाम स्वयं भूखल की माँ बुधुनी और भकुनी मिलकर करते हैं । उस समय कथनी बहुत ही छोटी थी । इसलिए वह चाहकर भी वह अपनी बहन के हत्यारों का कुछ करा न पाई । इतने से ही बुधुनी और भकुनी को सन्तोष नहीं हुआ । उन्होंने अपने बेटे की बहू दियाली को भूखी मार डाला । जब भी वह भोजन माँगती उसे मार-गाली के सिवाय कुछ भी न मिलता, और इसी भूख के कारण दियाली ने भी एक दिन दम तोड़ दिया । इसके बाद भी इन अत्याचारियों का जुल्म जारी रहा। ये लोग छोटी से बालिका कथनी और उसकी बहनों को भी परेशान करने लगे । अन्त मे ऊब कर कथनी अपने बहनों को लेकर अपने नाना राम सिंह के यहाँ चली चाती है और वहीं से इन्टर, बी.ए. तथा आज वकालत कर रही है । वकालत करते-करते वह अपनी माँ और बहन के हत्यारों से बदला लेना चाहती है । इसलिए अपने पिता भूखल, दादी, बुधुनी और बुआ भकुनी पर अपनी माता दियाल और बहन चौथी की हत्या का आरोप लगाकर मुकदमा-चलवाती है । उसका वकील अधिक पैसों के कारण कातिलों से मिल जाता है और मुकदमा ठीक ढंग से पैरवी नहीं करता है । तब कथनी स्वयं जज साहब से प्रार्थना करती है कि वह स्वयं अपनी माँ और बहन के कातिलों के खिलाफ मुकदमा लड़ना चाहती है । इजाजत मिलते ही वह पेशेवर और चतुर वकील के सामने अपनी माता के हत्यारों के कातिलो को सजा नही दिलवा पाती है । क्योंकि वकील बड़ी चतुराई से यह सिद्ध कर देते है कि दियाली की मृत्यु बीमारी के कारण हुई थी, लेकिन अपनी बहन चौथी की जब हत्या हुई थी, तब उसकी सौतेली बहन सपना और रचना वहाँ पर मौजूद थी । ये दोनों बहन अदालत में अपनी गवाही देती है कि चौथी के मरने से पहले उसके मुँह से खून निकल रहा था। इसलिए न्यायाधीश ने फैसला सुनाया कि "तमाम बयानात एवं गवाहों की जुबानी सुन अदालत इस नतीजे पर पहुँची है कि बुधुनी, भकुनी और भूखल पर दियाली की हत्या करने के लगायें गये आरोप बेबुनियादी थे, इसलिए इन तीनों को बाइज्जत बरी किया जाता है । किन्तु एक मासूम निर्दोष, अबोध बच्ची चौथी का गला दबाकर उसकी हत्या करने के जुर्म मे बुधुनी और भकुनी को पाँच साल की सजा सुनाई जाती है । चौथी का गला दबाकर उसकी हत्या कर देने का सुझाव देने के जुर्म में भूखल भी उस हत्या में समान कसूर वार है । इसलिए भूखल को भी अदालत पाँच साल की कैद की सजा सुनाती है ।"[३२]

इस प्रकार से अन्त में कथनी कातिलों को सजा दिलाकर बदला लेती है ।

(१२) आँखे :

'आँखे' कहानी में कहानीकार ने अलिन्द्रा गाँव का यथार्थ चित्रण किया है । गाँव वालो को गुलाबी की माँ ने अपने मोहपाश में कई लोगों को फंसाया था । आँखो के इशारे से ग्राहकों को आकर्षित करने का कार्य अब उसकी बेटी गुलाबी करती है । इसका कहानीकार ने बखूबी वर्णन किया है ।

रोशन अपनी पत्नी शशी के साथ अलिन्द्रा गाँव में रहता है तथा पी.एच.डी. के शोधकार्य हेतु लेखन कार्य भी करता है । तभी वह देखता है कि दूसरी मंजिल से गुलाबी जोर-जोर से चिल्ला रही है कि रास्ते मे जाते हुए एक साइकिल चालक ने उसे आँख मारी है । उसका पिता चुन्नीलाल दरजी बेटी का चिल्लाना सुनता है, तो सबसे पहले उसकी जीभ बेकाबू हो जाती है और भद्दी-भद्दी गालियाँ देने लगता है । गालियाँ इतनी भद्दी होती हैं कि रोशन अपने कानों में हाथ रख लेता है, लेकिन आँखे, सब कुछ देख रही हैं । चुन्नीलाल दरजी साइकल चालक को कहता है कि दोबारा इस रास्ते से निकले और मेरी लड़की को आँख मारी तो तुम्हारी आँखें फोड़ दूँगा । साइकल सवार समझता है कि मैंने नहीं तुम्हारी बेटी गुलाबी मुझे ही नहीं यहाँ से आते-जाते सभी लोगों को छत पर बैठ कर आँखे मारती रहती है । इसलिए सबसे पहले अपनी बेटी गुलाबी की आँखे फोड़ो। रोशन ये सारी बातें सुनकर लेखन कार्य भूलकर सपनों की दुनिया में खो जाता है । बीती घटनाओं को देखता है । बदलू भौंरे की तरह कांकरिया गार्डेन में तितलियों के घेरे में फँस गया था । बदलू ने किसी लड़की को आँख मार दिया था । कॉलेज की लड़कियों ने बदलू को चप्पल से मारा था । तबसे बदलू कांकरिया बगीचे में घूमने नहीं जाता था। शशी से प्रेम के बारे में बड़ी-बड़ी बाते करता है । तब रोशन सुनकर कहते हैं कि "बदलू, मैं सारी दुनिया को प्यार करता हूँ, सबको प्यार करता हूँ, पर किसी छोकरी के चप्पल को प्यार नहीं करता हूँ । बदलू मुँह लटकाये चला गया था ।"[३३]

लिखते-लिखते नायक रोशन देखता है कि फिर से बाहर से जोर-जोर से आवाज सुनाई दे रही हैं तभी शशी बताती है कि सुबह में साइकिल वाले ने रुपये की जगह अंगूठा दिखा दिया था, तभी गुलाबी ने पप्पा को पुकारा था । 'आज फिर माँ - बेटी साइकिल को जोर से पकडी है और उसे जाने नहीं देती हैं । चुन्नीलाल दरजी साइकिलवाले से झगड़ा करता है । तब वह कहता है कि आँखे मैंने नहीं, तुम्हारी बेटी गुलाबी ने मुझे मारी थी । यह बात सुनकर गुलाबी साइकिल सवार व्यक्ति को जोर-जोर से गालियाँ देने लगती है साईकलवाला गुलाबी की आँखो को देखकर तुरन्त ही दस रूपये की नोट गुलाबी

को देकर चलता बना । गुलाबी दस रूपये की नोट लेकर सीढ़ियो चढ़ने लगी। देखनेवाले झेंपते रह गये । साइकिलिस्ट कहता है कि कुछ नहीं सिलाई के पैसे बाकी थे । चुन्नीलाल माँ-बेटी के पेशे से बेखबर था । वह तुरन्त कमरे के अन्दर जाता है और माँ-बेटी को खूब पीटता है । उनके रोने की आवाज बाहर तक सुनाई देती है । ग्राहक बेचारे आखिर जाये कहाँ । पूरे गाँव में एक ही तो दरजी है । नये दरजी को चुन्नीलाल लड़ झगड़कर भगा देता है । दूसरी तरफ गुलाबी सज-सवर कर रोज दूसरी मंजिल की लाइन में बैठकर आने-जाने वालों को आँखो के इशारे से तकाजा करती है । उसकी सुन्दरता को देखकर कुछ लोग तो काम न होने पर भी दरजी के यहाँ एक चक्कर लगा जाते हैं। रोशन जब इस गाँव में रहने आये थे, तब यहाँ के कई लोगों के मुँह से सुना था । कि "गुलाबी की माँ ने अपने मोहपाश मे कई लोगों को फँसाया था ।"[३४] आज स्वयं सब कुछ रोशन ने अपनी आँखो से देख लिया ।

(१३) फर्ज :

उत्तरदायित्व की महिमा पर बल देते हुए 'फर्ज' कहानी में कहानीकार सूर्यदीन यादव जी ने बताया है कि माता-पिता के द्वारा बालक को जन्म देने के बाद उनको योग्य शिक्षा देना भी उनका एक विशेष उत्तरदायित्व होता है । कर्तव्य या फर्ज का पालन करना हमारा धर्म हैं । इस परम सत्य को लेखक इस कहानी में अभिव्यक्त करता है ।

लेखक का पुत्र दीपक गाँव के अवारा लड़कों के साथ गढ़ही के तट पर बबूल के पेड़ पर बैठे बन्दर को ढेला फेंकने से बन्दर अहदंक उठता है और अंग्रेजी की तरह मुँह फैलाकर सासें निपोड़कर कोई बड़ी गाली बक देता है । बन्दर को खीस निपोड़ते देख बच्चों को मजा आता है । बच्चे भी बन्दर की नकल उतारते हैं । यह सब देख लेखक खींझ उठते हैं । अपने पुत्र दीपक को बुलाकर खूब डाँटते-फटकारते हैं तथा अपने ही पड़ोस में रहते वहराजी का लड़का घुमना अवारा घूमता है । उसकी खराब आदतों का प्रभाव गाँव के सभी लड़कों पर पड़ता है बहरा की आँखें पैसे की गर्मी से बन्द हैं । नौकर है, पैसा है, ऊपरी आमदनी, भी लेकिन परिवार के प्रति बिल्कुल लापरवाह। उसके बड़े बेटे की शादी हो जाने के बाद भी कुछ करता-थरता नहीं और बेटा - बहू बैठकर खाते है । घुमन को डांटते सुनकर उसका पिता बहरा बाहर आता है । तब लेखक उसे बताते हैं कि पढ़ाई - लिखाई में भी थोड़ा ध्यान दो । घुमना सातवीं में पढ़ता है किन्तु शुद्ध मातृभाषा भी नहीं लिख पाता । लेखक का सुझाव सुनकर बहरा क्रोधित हो जाता है । तब लेखक कहते हैं कि यदि पढ़ेगा-लिखेगा नहीं तो भीख मांगेगा । तब बहरा

कहता है कि तुम अपने लड़के दीपक की चिन्ता करो । मेरा लड़का भले भीख मांगेगा, लेकिन तुम्हारे घर भीख माँगने नहीं आयेगा । लेखक बहरा को समझाते हैं कि हमारे घर नहीं आयेगा, लेकिन हमारे जैसे ही किसी के घर भीख माँगने जायेगा । फिर भी पैसे की गर्मी के कारण बहरा लेखक की बात न मानकर अपने बेटे को सुधारिये की रट लगाता है । लेखक दीपक को समझाता है कि पढ़ाई-लिखाई करो, घूमने से बालक बिगड़ जाते हैं। तब दीपक अपने पिताजी से कहता है, ''लेकिन स्कूल में पंड़ित जी कह रहे थे, घुमक्कडी जीवन निरोगी होता है । बैठाकू जीवन रोगिष्ट होता है ।''[३५] तब लेखक दीपक से कहते हैं कि घूमो, लेकिन अच्छे मित्र के साथ घूमना लाभप्रद होता है । बुरे मित्रों से बचना चाहिए ।

(१४) नशा :

हमारे गाँव समाज के घरेलू यथार्थ को चित्रित करती 'नशा' कहानी में कहानीकार ने आज की गिरती इन्सानियत को पारिवारिक सदस्यों के माध्यम से उभारा है । गाँव-घर छोड़कर परदेश में रहते परदेशियों की अकेली पत्नियाँ अमाननीय तत्वों के कितने झोड़े-झटके सहन करती है, उसका चित्र 'नशा' कहानी की नायिका संगीता एक रात में वर्षो बाद मिले अपने पति-परदेशी से कह सुनाती है । यह कहानी हर परदेशी की पत्नी की सच्ची दास्तान बन गयी है ।

शायद इसीलिए लेखक ने समाज के लोगों को आगाह किया है कि नशा चाहे जिस चीज का हो वह नशा हमारे समाज के लिए घातक है । नशे की धुन में मग्न होकर लोग रात-दिन भजन-कीर्तन गाते रहते हैं । संगीता को तम्बाकू खाने का नशा चर्राता है । किसी को जुए खेलने का नशा चढ़ता है तो सारी रात दाँव लगाते रहते हैं । सिनेमा देखने का नशा लोगों को दीवाना बना देता है । कुछ लोग एक नशे से बचने के लिए दूसरे नशे का सहारा लेते हैं । जवानी के नशे को उत्तेजित करने के लिए शराब के नशे में धुत होना प्राणघातक हो सकता है । मदिरा जवानी के नशे को उत्तेजित करने के बदले युवावस्था के तन्तुओं को इतना वेगवान बना देती है कि वे नाजुक तन्तु बिजली के तार के फ्यूज की तरह उड़ जाते हैं । शराब पीने से जवानी ढ़ीली पड़ जाती है । शक्ति घट जाती है । नशे में मनुष्य नरवस, नि:काम, बो-बो अपनाता रहता है । शराब का नशा हर नशे को मात देता है । यही कारण है कि शराब पीने के बाद संगीता का जेठ संगीता के साथ नाजायज सम्बन्ध स्थापित करने की कोशिश करता है । वह शराब के नशे में इतना धुत है कि सामाजिक परम्पराओं, मर्यादाओं तक का उसे ख्याल नहीं है । वह

क्या करने जा रहा है, इसका भी उसे आभास नहीं है और इस पाप की कोठरी में येन-केन प्रकारेण संगीता को भी घसीटना चाहता है । तब संगीता अपनी इज्जत बचाने के लिए अपनी सास के पास भाग जाती है तथा सास अपने छोटे बेटे राजन को अपनी पत्नी संगीता को भी परदेश ले जाने के लिए पत्र लिखती है । जब राजन संगीता को लेने के लिए आता है तब पहली रात में ही संगीता राजन के बड़े भाई का कलंकित इतिहास बताती है । पहले तो राजन संगीता की बातों पर विश्वास नहीं करता, लेकिन जब संगीता कहती है कि जाकर अपनी माता जी से पूछ लो, बड़े भाई के लड़के को पूछ लो या धीरज को जाकर पूछ लो । क्योंकि परिवार के सभी सदस्य इस घटना को जानते हैं। तब अपने बड़े भाई की करतूतों को सुनकर दंग रह जाता है और संगीता को भी अपने साथ परदेश ले जाता है ।

सूर्यदीन यादव की कहानियों का तात्विक विवेचन :

"तत्वहीन कहानी से चाहे मनोरंजन भले ही मिल जाय, मानसिक तृप्ति नहीं मिलती। यह सच है कि हम कहानियों में उपदेश नहीं चाहते, लेकिन विचारो को उत्तेजित करने के लिए मन के सुन्दर भावों को जाग्रत करने के लिए, कुछ न कुछ अवश्य चाहते है।"[३६]

कहानीकार कहानी लिखने के लिए अपने और अपने आस-पास के जीवन से प्रेरणा लेता है । वह किसी भी संवेदनशील घटना को चुनकर उसे शब्दों में अत्यन्त सूक्ष्मता एवं कुशलता से बाँटने का यत्न करता है । इसके लिए उसे कई उपकरण जुटाने पड़ते है, जिनका समावेश कहानी के शिल्प में स्वयं ही हो जाता है । यद्यपि कहानी के लिए तत्व सम्बन्धी कोई विशेष नियम बनाये नहीं जा सकते किन्तु कथानक, भाषा शैली, उद्देश्य आदि कहानी शिल्प के प्रमुख तत्व माने जाते हैं । किन्तु यदि किसी कहानी में कोई तत्व अपूर्ण है या नहीं तब उसे कहानी न मानना भी अनुचित है ।

सूर्यदीन यादव की कहानियों का कथानक :

कथावस्तु कहानी की रीढ़ है । कहानी में कथावस्तु अनिवार्य रूप से होता है । कहानी में विस्तार का स्थान नहीं होता है । अतः जो भी विषय चुना जाय वह कम विस्तार में अपनी सम्पूर्णता के साथ अभिव्यक्त हो सके, ऐसा प्रयत्न होना चाहिए । कहानी के कथानक के लिए सुस्पष्टता व संतुलितता अनिवार्य गुण है । कहानी के कथानक में नाटकीयता का गुण होना चाहिए । कहानीकार अपने जीवन के गहन अनुभवों और दूसरो की तुलना में अधिक विशाल ज्ञान के आधार पर जीवन के किसी एक यथार्थ को प्रस्तुत करता है । हमारे सामने मर्मस्पर्शी स्थितियाँ उत्पन्न करता है व क्रमशः अपने लक्ष्य की

ओर बढ़ता हुआ चरम सीमा तक पहुँचता है । इस सीमा तक पहुँचते हुए कहानीकार को अधिक रोचकता बनाये रखनी पड़ती है । अन्यथा कहानी नीरस हो जाती है । सामान्य रूप से कहानीकार अपने आसपास के जीवन से यथार्थ का टुकड़ा उठाता है । अतः कहानी पर युग जीवन भी प्रभाव डालता है । हमारा आज का जटिल जीवन व विलक्षणित है, फलतः कहानियों के कथानक में भी जटिलता व बिखराव का आना स्वाभाविक है । कहानी में संघर्ष का होना आवश्यक समझा गया है ।

प्रो.किशोर गिरड़कर कहानी के कथानक में आदि मध्य और अन्त को वस्तु विन्यास की दृष्टि से अत्याधिक महत्वपूर्ण मानते हैं । उनका मत है कि "कहानी का आरम्भ नाटकीय, कुतूहलपूर्ण इतिवृत्तात्मक होता है । कहानी का अन्त प्रभावोत्पादक होना चाहिए । कुछ विद्वान कहानी के मध्य को महत्वपूर्ण मानते हैं किन्तु आरम्भ और अन्त का सम्पूर्ण सौन्दर्य मध्य की प्रसार पर निर्भर है ।"[३७]

'लीलार कहानी में कहानीकार ने गाँव के लोगों को मानसिकता का चित्रण किया है । गाँव के लोग कुएँ की चौखट को ऊँचा नहीं करते बल्कि उस पर लकड़ी की चौखट बना देते है । 'पूजा' कहानी में कहानीकार ने ढोंग, पाखण्ड पर करारा व्यंग्य प्रहार किया है । लेखक विश्वास दिलाना चाहते हैं कि मनुष्य का हृदय जहाँ पर श्रद्धा करे. विश्वास करे, ऐसी हर एक जगह पर पूजा की जा सकती है । तो पहली मुलाकात कहानी में लेखक ने बताया है कि नवोढ़ा नीरज़ और शोभा का गौना आये दो साल हुए, लेकिन यह उनका प्रथम मिलन है । 'चरण स्पर्श' की महिमा का गुणगान किया है कि नम्र व्यक्ति हर एक व्यक्ति का आदर्श बन जाता है । इसलिए नम्र एवं विवेकी बनकर अपने से बड़ों का चरण-स्पर्श करके अपनी संस्कृति को जीवंत रखना चाहिए । 'दूसरा सफर' कहानी में लेखक ने बताया है कि गाँव के लोगो को अपने गाँव से बेहद लगाव है फिर भी वे लोग रोजी-रोटी की तलाश में गाँव छोड़कर शहर की तरफ पलायन करते है । तो 'चूहे बने साँप' कहानी में लेखक ने अपनी पारिवारिक घटनाओं का वर्णन किया है । 'पलभर का सफर' कहानी में लेखक ने पति-पत्नी के विचारों का वर्णन किया है। तो 'बिना माँ का बच्चा' कहानी में कहानीकार ने हमारे समाज की बिड़म्बनाओं का वर्णन किया है । वह भी समाज ऐसा जो पढ़ा-लिखा शिक्षित वर्ग है । 'सिंह के बेटे उर्फ इन्टरव्यू एक नाटक' कहानी में कहानीकार ने हमारे समाज में नौकरी देते समय की इन्टरव्यू-प्रथा में किये गये करारे चोंट पर व्यंग्य किया है । तो 'अधूरी डायरी' कहानी में लेखक ने दीप्ति और सिद्धान्त नामक पात्र उठाकर हमारे समाज में चल रहे बाल-विवाह प्रथा का कड़ा विरोध किया गया है । 'काफी कुछ' कहानी में लेखक ने नायक को पेट की भूख

की अपेक्षा साहित्य सृजन के लिए सामग्री पाने की दीर्धाकांक्षा है । पेट नहीं वह साहित्य का क्षुधातुर है । 'बदला' कहानी में यादव जी ने गाँवो में दूध पीती बच्ची का वध किस प्रकार किया जाता है, उसका बखूबी वर्णन किया है ।'आँखे' कहानी में कहानीकार ने अलिन्द्रा गाँव में गुलाबी की माँ ने अपने मोहपाश में कई लोगो को फँसाया था । आँखो के इशारे से ग्राहको को आकर्षित करने का कार्य अब उसकी बेटी गुलाबी भी करती है । इसका कहानीकार ने बखूबी वर्णन किया है । तो 'फर्ज' कहानी में कहानीकार ने बताया है कि माता-पिता के द्वारा बालक को जन्म देने के बाद उनको योग्य शिक्षा देना भी उनका एक विशेष उत्तरदायित्व होता है । कर्तव्य या फर्ज क पालन करना हमारा धर्म है । इस परम सत्य को लेखक ने इस कहानी में अभिव्यक्त किया है । तो 'नशा' कहानी गाँव - घर छोड़कर परदेश में रहते परदेशियों की अकेली पत्नियाँ अमाननीय तत्वों के कितने झोड़े-झटके सहन करती है । यह कहानी हर परदेशी की पत्नी की सच्ची दास्तान बन गयी है । 'जन्म' कहानी में लेखक ने बताया है कि २१ वीं सदी में भी गाँव के लोग आवश्यक सुविधाओं से वंचित हैं तथा आज भी गाँव की रूढ़िगत परम्पराओं पर विश्वास करते है । इसका चित्रण किया है । तो 'अपने आदमी' कहानी में लेखक ने गाँवो में ठाकुरों के बढ़ते वर्चस्व का वर्णन किया है । 'ऊसर जमीन' कहानी में लेखक ने संवरकी की दयनीय स्थिति का वर्णन किया है, जिसके माता-पिता का बचपन में ही देहान्त हो गया । बाप की इकलौती सन्तान थी संवरकी । उसके जीवन का वर्णन किया है । 'आम्बे बहार' कहानी में बसन्त के समय में आम के टिकोर आने से बाल वृद्ध कैसे प्रफुल्लित होते हैं इसका कहानीकार ने वर्णन किया है । 'कच्चा घर' कहानी में काका कच्चा घर बनवाना चाहते हैं परन्तु लोगों को अच्छा नहीं लगता, इसका वर्णन किया है । 'किसानी' कहानी में लेखक ने यह बताया है कि जो व्यक्ति जो काम करता है, वही उसकी किसानी है । किसान लोगों को खेतों में काम करना किसानी है । पंडित लोगों का काम पाठशाला में पढ़ाना, पूजा-पाठ करना तथा शादी-ब्याह कराना किसानी है तो छात्रों के लिए पढ़ाई-लिखाई करना किसानी है । तो 'इस्तीफा' कहानी में लेखक ने जमीदारी प्रथा का वर्णन किया है । 'मन्दिर-मस्जिद' कहानी में लेखक ने धार्मिक रूढ़िचुस्त मान्यताओं को तोड़कर, मिल जुलकर रहने तथा गाँवों में अशिक्षा के कारण फैले अंध-विश्वास तथा जमीन के टुकड़े को लेकर लोगों के मन में रही संकुचित विचार धारा का लेखक ने बखूबी वर्णन किया है । तो 'ठनगन' कहानी में लेखक ने समाज में फैले दहेज-प्रथा, शादी-विवाह में झूठे दिखावे व रूढ़िगत रिवाजों पर करारा प्रहार किया है । तथा कुरितियों को तोड़ने के लिए नवजवानों को ललकारा है । 'तालाब की मछलियाँ' कहानी में लेखक ने हिन्दू-मुस्लिम संस्कृति के संघर्ष तथा फजलपुर के खानजादे रामपुर

के तालाब में मछलियाँ मारने के साथ लड़कियो को भी सीटी मारते हैं, इसका वर्णन किया है । 'बच्चे का बाप कौन' कहानी में कहानीकार ने विधवा नईकी की समस्याओं का वर्णन किया है । तो 'हमजोली' कहानी में यादवजी लल्ली एवं भोला के सम्बन्धों को लेकर पंडित जी की संदेह पूर्ण भावना का वर्णन किया है । 'दोस्ती' में लोटे में फँसी बिल्ली की छटपटाहट मात्र एक जीव की घबराहट और खटपटाहट न होकर बाल कथाकार करण के पूरे परिवार की छटपटाहट बन जाती है । लेखक ने इसका बख़ूबी वर्णन किया है । तो 'तमाशा' कहानी में गरीब लोग पापी पेट के लिए क्या-क्या नहीं करते इसका इस कहानी में लेखक ने बखूबी वर्णन किया है । 'झगड़ा' कहानी में मानवीय मूल्यों के अवमूल्यन का सुन्दर चित्रण हुआ है । सताये जा रहे किसी निर्दोष और असहाय के रक्षार्थ बाल कथाकार की विवशता लाचारी का सुन्दर निरुपण इस कहानी में लेखक ने किया है । 'शान की खातिर' कहानी में विद्यालय में छात्र अपनी हैसियत बढ़ाने के लिए क्या-क्या नुक्शे आजमाते हैं, इसका लेखक ने वर्णन किया है । तो 'विद्यार्थी और अध्यापक' कहानी में लेखक ने एक और आचार्यत्व का अवमूल्यन और दूसरी तरफ सच्चे शिष्य को महिमा का सांगोपांग वर्णन किया गया है । यह कहानी आज के विद्यार्थी और अध्यापक को नई राह, नई रोशनी देने में सक्षम है । 'हेठी' कहानी में कहानीकार ने सामाजिक और मानवीय सम्बन्धों के टूटने तथा उसका बिखरने का वर्णन किया है। 'माँ की लकड़ी' कहानी में लेखक ने संस्कार नगरी बड़ौदा की पवित्र भूमि पर स्वाध्याय परिवार के अग्रणी दादा जी के प्रवचन का वर्णन किया है। 'किसानी' कहानी के मर्मस्पर्शी कथोपकथन अनंत साल तक याद रखने के लायक है । गरीब को क्षुद्र समझने वालों की आँखे खोलती यह कहानी जबरों, शोषितों को चेतावनी देती है । 'कम्प्यूटर की लड़की' कहानी में लेखक आधुनिक लड़की से लेखक गाँव की घास छीलनेवाली लड़की तक का यथार्थ सौन्दर्य स्वरूप व्यक्त किया है । वैज्ञानिक चकाचौंध और ग्रामीण सहजता, सरलता एवं निश्छलता का यथार्थ चित्रण कहानी को नूतन गति देता है । 'भीड़' कहानी में गाँव के लोग प्राचीन परम्पराओं और लीक पर चलने के आदी हो गये हैं, इसका वर्णन किया है । तो 'किरण' कहानी में मानवीय सम्बन्धों का वर्णन है । 'वहरात' कहानी चंदा और कामिनी नामक दो हमजोली सखियों की दास्तान है । तो 'ईख की कहानी' में गाँव तथा शहर में संयुक्त परिवार के टूटने की पीड़ा का वर्णन किया है । तो 'गयावर का पेड़' कहानी में गाँव के लोगों के द्वारा पेड़ लगाना तथा उसका नाम गयावर का पेड़ देने के प्रति उनकी धार्मिक श्रद्धा भावना का वर्णन किया है । तो 'बिना बाप का बच्चा' कहानी में कहानीकार ने विधवा नईकी के जीवन का चरित्रांकन तथा ढ़ोगी समाज की न्याय प्रियता पर करारा चोट किया है । 'लौट आती कहानी' गाँव की कोढ़ के रोग से जूझती श्यामा की कहानी

है । 'दहशत का हथौड़ा' कहानी में कहानीकार ने भारतीय गाँवो में हिन्दू मुस्लिम एकता की मिशाल कायम की है । तो 'परदेशी की वह रात' कहानी में कथाकार ने रोजी-रोटी की तलाश में गाँव छोड़कर शहर जाने वाले भोला के जीवन का वृतांत चित्रण किया है । 'झोपड़ी का झरोखा' कहानी में एक पत्रकार जो नड़ियाद से अहमदाबाद अप-डाउन करके पत्रकारत्व का दायित्व निभाता है उसकी दास्तान है । तो 'जगत जहाँ गीता रचना' मे कहानीकार ने गीता और रचना जेठानी-देवरानी हैं । दोनों के जीवन का वृतांत चित्रण किया है । जगत और गीता का प्रेम देहाती सामाजिक सम्बन्धों को पकड़कर आगे चलता है । 'फाटक खुलने का इन्तजार' में कहानी में रोजी-रोटी की तलाश में गाँव छोड़कर शहर आकर एक ही खोली में दस-बीस लोग रहते है तथा सुबह-सुबह संडास जाने के लिए संडास के फाटक खुलने के इन्तजार में पड़े हैं । इसका चित्रण किया है । 'भैया' कहानी में कहानीकार ने भाषा दोष या भाषा की समझ न होने के कारण होने वाली गलतफहमियों का वर्णन किया है ।

आधुनिक कहानी कला की दृष्टि से देखें तो आज की कहानियों में कथानक का हास हुआ है । कहानीकार कथा कहने की अपेक्षा जीवन के लघु प्रसंग, खंड विचार या विशिष्ट व्यक्ति का ही अंकन करता है । किन्तु यह परिवर्तन यादव जी की सभी कहानियों में नहीं मिलता । उनकी कहानी कुछ नई विचार धारा की ओर कुछ पुरानी मानी जा सकती है ।

''यादवजी वाकई एक उत्तम कहानीकार हैं । उनकी दृष्टि जहाँ पड़ती है, उन्हें कहीं एक नई कहानी मिल जाती है । ये ऐसे खास कथाकार है कि पानी स्वतः बहकर उन्हें तृप्त करने आ जाता है । वे मृगजल के पीछे नहीं भागते ।''[३८]

यादव जी के कहानी के पात्र व चरित्र-चित्रण :

किसी भी कथानक का आधार शिला उसके पात्र हैं । अतः पात्र व चरित्र-चित्रण कहानी कला में महत्वपूर्ण स्थान रखते है । एक सफ़ल कहानी के लिए पात्र वास्तविक, स्वाभाविक व सजीव होने चाहिए । पात्रों की संख्या उतने ही होने चाहिए कि जिससे कथानक की आवश्यकताएँ व लेखक का उद्देश्यपूर्ण हो सके । आज के युग में कहानियों के पात्र हमारे आस-पास के परिवेश से ही लिये जाते हैं ।

यादव जी की कहानियों का अवलोकन करने पर यह स्पष्ट होताा है कि उनकी कहानियों में गतिशील एवं सामान्य पात्रों की संख्या अधिक है । उनकी कहानियों के कुछ पात्र नितांत व्यक्तित्व प्रधान है और कुछ वर्गगत हैं । कुछ ऐसे भी पात्र हैं, जो स्वतन्त्र

व्यक्तित्व के वाहक होते हुए भी एक वर्ग विशेष का प्रतिनिधि करते हैं । अतः उन्हें भी वर्गगत श्रेणी में ही गिना जा सकता है । उदाहरण के रूप में 'लेरुवा', 'लिलार, 'दूसरा सफर', 'पहली मुलाकात', 'चूहे बने साँप', 'बिना माँ का बच्चा', 'अधूरी डायरी', आँखे इत्यादि । वर्गगत पात्रों में आँखे की गुलाबी 'बदलू' कहानी का पात्र बदलू तथा जगत, जहाँ, गीता, रचना के गीता और रचना के पात्र वर्गगत माने जायेगें क्योंकि वे किसी वर्ग विशेष का प्रतिनिधि करते हैं ।

यहाँ यादव जी के पात्र - निर्भाव की विशेषताएँ भी उल्लेखनीय हैं । उनके पात्र निर्माण की सबसे बड़ी विशेषताएँ यह है कि वे किसी कल्पना लोक के निवासी नहीं किन्तु वास्तविक अनुभवों के संसार के पात्र हैं । दूसरे शब्दों में कहे तो उनके पात्रों में हमें अपना ही प्रतिबिम्ब दिखाई देता है । क्योंकि वे अपने परिवेश से संयुक्त है । उनके पात्र साधारण मानव ही लगते हैं । जिनमें न तो आदर्शो की डीगे है न अति यथार्थता का भ्रमजाल । उनके पात्र तथाकथित बौद्धिकता के भार से दबे हुए नहीं हैं । किन्तु 'बिना बाप का बच्चा' तथा 'बदलू' पाठ का बदलू पात्र भावना के संसार में जीने वाले पात्र हैं । यादवजी के अधिकांश पात्र परिस्थितियों से जन्म लेने वाली कुष्ठाओं और ग्रंथियों के शिकार हैं । उनमें सम्बन्धो के बनने का उल्लास कम, सम्बन्धो के टूटने की पीड़ा अधिक है । 'पूजा का रामचन्द्रन आँखे की गुलाबी 'बिना बाप का बच्चा' की प्रभा 'अधूरी डायरी' के दीप्ति और सिद्धान्त 'ऊसर जमीन' की संवरकी जैसे पात्र परिस्थितियों को अनुकूल न कर पाने से मनोग्रंथियों की विकृति का शिकार बने हैं । किन्तु यादव जी की विशेषता यह है कि इस प्रकार की विकृतियों का निरुपण साहित्यिक सुरुचि को भंग नहीं करता, एक शिष्टता सर्वत्र दिखाई देती है । फलतः उनके पात्रों के प्रति घृणा नहीं सहानुभूति होती है।

यादव जी के अधिकांश पात्र मध्यम वर्ग के हैं । उनके पात्र सवर्ण/साहूकार के शोषण से मुक्त होकर स्वतन्त्र रूप से जीनेवाले हैं । सामान्य वर्ग, मध्यम वर्ग स्वतन्त्र तभी हो सकता है, जब वह आर्थिक रूप से स्वावलंबी हो ।

अतः उनके सामान्य पात्र शिक्षित होकर अपने वर्ग का उद्धार करते हैं । 'अपने आदमी' कहानी का ढ़ाहे काका इसका यथार्थ उदाहरण है । इसके साथ-साथ नारी शोषण की बात भी उनकी कहानी में उभर कर आयी है । आज की नारी के लिए यह अनिवार्य नहीं है कि वह पुरानी रुढ़ियो का आँख मूँदकर पालन करती जाय । 'अपने आदमी' में नम्बरदारों के जुल्म से त्रस्त गाँव वाले दबे हुए भयभीत है कि जुल्म के सामने सर ऊँचा करने का साहस ही नहीं करते, फिर भी हर कहानी में एक पात्र अवश्य ऐसा उभरकर सामने आया हैं जो अदम्य उत्साह, साहस से अत्याचार करने वाले को ललकारता है । यही बहुत बड़ी उपलब्धि है और लेखकीय महाशक्ति है ।

सूर्यदीन यादव की कलम के सामने कहानी का कोई भी पात्र कुछ भी अपने गुह्य क्षेत्र में छुपाकर भेद या रहस्य नहीं रख पाता हैं । उनके सामने पारदर्शक स्फटिक की तरह पात्र से मनोभार पाठक के मन पर भी आरपार उतर जाते हैं ।

डॉ. सूर्यदीन यादव आँचलिक परिवेश, भाषा, वेशभूषा एवं मानसिकता से गहरा परिचय रखते हैं । कहानीकार अपने यात्रों को ग्राम्य परिस्थितियों के जात में फंसा, अपने आपको तिल-तिल विकसित होते हुए देखने को विवश है, फिर भी प्रकृति की गोद में रहने के कारण श्वेत-इम्तिहान, बाग, तालाब, वृक्ष, फल-फूल, आम, महुवा, करौदां सकया स्वाद उन्हें पुनः नवपल्लवित करता हैं । उस गँवई जीवन की कँसन, टूटन एवं मिटन में जीने का आनंद है ।

यादवजी मन के भेदी हैं । उनसे किसी पात्र को कुछ भी छुपाकर रखना असम्भव है । 'भीड़' कहानी में ग्राम्य जीवन एवं शोषण द्वारा संचित घनसा दंभ दर्शित ग्राम्य भोज-निरर्थक धन व्यय करने के बावजूद कुछ सार हाथ नहीं आता 'भीड़' भीड़ ही है । उसमें व्यक्ति खो जाता है । एक रेला आया और आगे निकल गया । वह क्या कहता गया उसकी आवाज आगे या पीछे की भीड़ नहीं सुनती । आज की नारी धार्मिकता के नाम पर बलिदान नहीं चाहती । 'बच्चे का बाप कौन' की नईकी एवं 'हमजोली' की लल्ली सहज मानव अधिकार के लिए शोषण के विरुद्ध आवाज उठाती है । 'ऊसर जमीन' कहानी की सँवरकी की अपने व्यक्तित्व विकास में बाधक समाज की रूढ़िवादी परम्परा का सहजता से त्याग करती है । पति आज के नारी के लिए ईश्वर नहीं हैं । घर से व पति से अलग नारी का अपना स्वतन्त्र व्यक्तित्व है । इसका यथार्थ उदाहरण 'बच्चे का बाप कौन' कहानी दहवंगी के पात्र द्वारा बताया गया है । अपने आदर्शों एवं सिद्धान्तों के लिए 'हमजोली' कहानी की लल्ली पंडितजी को डाँट का तिरस्कार करती है ।

यादव जी के नारी व निम्नवर्गीय पात्र वैयक्तिक चेतना से युक्त है । समाज द्वारा थोपी गई नैतिकता को ध्वस्त करने का प्रयत्न स्पष्ट है । उदाहरण के रूप में 'अपने आदमी' कहानी का नायक-जमीदारो के खेत पहले जोतने का विरोध करता है । 'तालाब की मछलियाँ कहानी मे धरमपाल तिवारी खानजादे के जुल्मों से गाँव के लोगों को बचाते है । 'दोस्ती' कहानी में कबरी दिल्ली और करण के बीच रही दोस्ती का वर्णन है ।

यादव जी की कहानियों में पात्र योजना जितनी आकर्षण हैं उतना ही उनका चरित्रांकन भी ध्यानाकर्षक हैं । यादव जी ने मानवीय वृत्तियों अर्न्तविरोधियों, व्यक्तित्व की बुनावट का सहज अंकन किया है चरित्रांकन के माध्यम से पात्र का समूचा व्यक्तित्व उभरता है।

इस दृष्टि से यादव जी एक सफल कहानीकार हैं। उन्होंने अपनी कहानियों में चरित्रांकन की नूतन प्रविधियों को अपनाया है। उदाहरण के रूप में 'बच्चे के बाप कौन' कहानी चरित्रांकन एवं 'आँखे' कहानी में गुलाबी का चरित्रांकन परिचयात्मक शैली में किया गया है। शैली की दृष्टि से उन्होंने मुख्यतः वर्णात्मक शैली अपनायी है। प्रभावपूर्ण वर्णन् किसी भी साहित्यकार की सफलता की कसौटी होता है। उनके कथा साहित्य में वर्णन कौशल का उत्कृष्ट उदाहरण देखने को मिलता है। जैसे - 'आँखें कहानी' में उन्होंने चुन्नीलाल दरजी की बेटी जो रास्ते में आते-जाते सभी लोगो को आँखे मारकर साइकल चालक कहता है, कि सबसे पहले गुलाबी के आँखे फोड़ो।

मनोविश्लेषणात्मक ढ़ंग से भी चरित्र-चित्रण किया गया है। जैसे- 'किसानी' कहानी में "तेजू निडर भाव से ठाकुर से कहता है कि यह सच है। गरीब आपके खेतो में तनतोड़ महेनत करते है। भूखे रहते है। पर आप उन्हें पूरी मजदूरी नहीं देते। आप तोंद फुलाएँ लट्ठ बांधे खेतवई करते है। गरीब अपने बल पर जीते है। किसी के अहसान और दया पर नहीं।"[३९]

संक्षेप में हम कह सकते है कि जीवन की परिस्थिति के अनुकूल पात्रों की आंतरिक स्थितियों का मनोवैज्ञानिक चित्रण यादव की कहानी कला का सर्वाधिक आकर्षक अंग हैं।

यादव की कहानियों में कथोपकथन :

कथोपकथन आधुनिक कहानी शिल्प का एक महत्वपूर्ण अंग है। कथोपकथन के माध्यम से कथानक सूत्र का विकास, चरित्र-चित्रण अन्तर्द्वन्द्वों आदि की अभिव्यक्ति होती है। कथोपकथन के माध्यम से वातावरण का निर्माण भी होता है। कथोपकथन में अनुकूलता, सरलता, रोचकता, तर्कसंगतता, संक्षिप्तता, यात्रानुरुपता, भावानुरुपता व स्वाभाविकता और सरलता आदि गुण होने चाहिए। 'लेरुवा' कहानी में सूर्यदीन यादव की लेखनी का चमत्कार सोलहवो कलाओं मे निखरा है। परिवेश, कथ्य, कथोपकथन, पात्र परिस्थिति संख्या एवं मनोभाव सभी कुछ प्रभावशाली ढ़ंग से मन को छूते हैं।

'लौट आती कहानी' का कथ्य वजनदार नहीं लगता। जब लड़की ससुराल में संवादिता नहीं बना पाती तब उसे माँ-बाप के घर के सिवा कहाँ ठिकाना मिलेगा। वो 'बिना बाप का बच्चा' कहानी में कथ्य में सामान्य है। युगों से नारी के साथ ऐसा ही होता रहा है। नारी को वासना तृप्ति के बाद माँ बनते ही धिक्कारा जाता है। कोई मर्द स्वीकार नहीं करता कि वह उसमे बच्चे का बाप है। स्वार्थी मर्दो की करतूतों का इल्जाम नारी सहन करती है। तो 'झोपड़ी का झरोखा' कहानी नड़ियाद शहर परिवेश का

सत्य चित्र है । यह एक विशाल वर्ग की दयनीय एवं यथार्थ जीवन का ब्यौरा देता दस्तावेज है । तो 'फाटक खुलने के इंतजार में' अहमदाबाद की चाली का घिनौनापन एवं विषाप्त प्रदूषित वातावरण का जिक्र है । यादवजी कुछ समय वहाँ रहे और अपनी प्रतिक्षण अवलोकन शक्ति द्वारा चाली का वर्णन किये है । तो वही पर 'दूसरा सफर' कहानी कम रेल के सफर का चश्मदीद यथार्थ वर्णन साथ ही बीच-बीच में माँ, गाँव, पत्नी सबका संस्मरण है । यादवजी झूले में हिलकोचे खाते नजर आते है । एक पैर गाँव परिसर में दूसरे पैर में ट्रेन का कम्पार्टमेन्ट, तो वहीं पर 'पलभर का सफर' कहानी में यादवजी पलभर में कल्पना लोक में विचरण करते-करते श्वेताम्बर योबाकार से बाह्य व्यक्तित्व एवं हरसी भाषा सुनकर संदिग्ध मन से दुःखी होते हैं । तो वहीं पर 'बिना माँ का बच्चा' जरा कुछ हटकर कथ्य में आधुनिकता का सच दिया है । यह एक पढ़ी-लिखी आधुनिक युग माँ की कहानी हैं । जो माँ बनकर भी माँ नहीं बनती और गृहिणी पत्नी बनकर भी गृहिणी के गुण नहीं अपनाती । तो 'अधूरी डायरी' यादवजी को एक यथार्थ भरी, वेदनापूर्ण, अपूर्ण अभिलाषा का दर्द लिए तब युवक की कहानी है । तो 'काफी कुछ' कहानी में यादवजी जिज्ञासु द्वारा उनके संवाद रोचकता स्वाभाविकता यात्रानुरुपता व तर्कबद्धता पूर्ण गुणों से ओतप्रोत है । संवादो का स्वच्छ प्रयोग यादवजी ने किया है । कुछ संवाद कथानक को गति प्रदान करते हैं तो कुछ पात्रों का चारित्रिक उद्घाटन करने में सहायक सिद्ध होते हैं । जैसे 'तमाशा' कहानी में भूख के कारण डमरु की ताल पर दस वर्षीय बालक के नाचने का दृश्य लेखक को झकझोर देता है । तो कुछ संवाद पाठक के मन में कौतूहलता उत्पन्न करके कहानी को पढ़ने के लिए आकर्षित करते है । जैसे किरण कहानी में लेखक ने बताया है कि जब तक प्रभाकर चमकता है, तब तक छायाएँ रहती हैं । सूर्यास्त होते ही छायाएँ मिट जाती हैं । तो वही पर 'ईख की कहानी' ''आये दिन संयुक्त परिवार टूटकर विभक्त परिवार की परम्परा चली आती रही है । देसुई भी इससे बच नहीं पाती है । वह अपने परिवार को सदस्यों से घर में अपना हिस्सा माँगती हैं ।''[४०]

इस प्रकार यादवजी ने अपनी रचनाओं में गाँवो और शहरों और गरीब लोगों के जीवन की सशक्त झाँकियाँ प्रस्तुत की है । इस प्रकार संवाद कला की दृष्टि से यादव जी की गणना बेहतरीन यथार्थवादी कथाकार के रूप में की जा सकती हैं ।

यादव जी ने प्रेमचन्द के बाद गाँव के जीवन की जितना प्रभावपूर्ण और प्रमाणिक चित्रण किया है, उतना शायद किसी ने नहीं । इसके साथ-साथ नई सभ्यता के प्रति आकर्षण के बाद हुए आत्मग्लानि का वर्णन 'बिना माँ का बच्चा' कहानी में वकील साहब के जुबान से कुछ इस प्रकार व्यक्त किया है-''जहाँ बिन बच्चे की माँ, 'माँ' बन जाती है, वहाँ तुम जैसी जनेता निज बच्चे के प्रति इतनी कठोर कैसे बन सकती है ।''[४१]

सद्भाग्य से स्त्री माँ बनती हैं । तुम वापिस जाओ । मैं वकील चाचा की बात मानकर लौट आयी । मैं अपने किये पर दु:खी हूँ । माँ मुझे माफ कर दो । तो 'परदेशी की एक रात' कहानी में चंदा-भोला से कहती हैं कि –

"तुम्हें पाकर लगता हैं सारा सुख मिल गया हैं । तुम्हारे न रहने पर मन न जाने कैसे-कैसे हुआ करता था । बड़े निर्मोही हो जाते हो जाने के बाद, जैसे भूल जाते हो। चिट्ठी - चौपाती भी नहीं भेजते कि पढ़कर जी को तसल्ली मिलती । तुम्हें क्या पता बिना पानी की मछली की तड़प ।"[४२] बहुत कुछ कहलाना चाहते हैं । औपचारिक संवादों की भरमार लगती है । कथ्य का तथ्य नहिवत् है । तो वहीं पर 'फर्ज' कहानी-एक उत्तम हेतु को रखकर लिखी गई है । आरंभ ही अरण्यकांड़ की तरह प्राकृतिक वर्णन से शुरू किया गया । इस कहानी में नशे के दुष्परिणाम की चर्चा कर एक सुहेतु को पूरा करना लेखक की सफलता है ।

यादव जी की कहानियों में देशकाल और वातावरण :

कहानी शिल्प का एक महत्त्वपूर्ण तत्व उसका वातावरण भी होता हैं । कहानी में वर्णित घटनाओं की सत्यता का विश्वास दिलाने के लिए कहानीकार अपने कथानक के अनुरुप सजीव वातावरण का निर्माण करता है । आज की कहानियों में वातावरण सज्जा की वस्तु नहीं हैं । वर्तमान कहानियों में यथार्थ परिवेश से सम्बन्ध मानव जीवन की संवेदनशील परिस्थितियों का निरुपण अधिक होता हैं । आज की कहानी में व्यक्ति चित्रण प्रमुख हैं, फलत: व्यक्ति से जुड़े हुए परिवेश का यथार्थ निरुपण हुआ हैं ।

यादव जी ने अपनी कहानियों में पात्र के अनुरुप परिवेश योजना की हैं । व्यक्ति अपने विशिष्ट परिवेश की उपज होता हैं । जिस परिवेश में वह जीता हैं उसी के अनुसार उसकी मानसिकता और व्यवहारिकता का विकास होता हैं । 'दोस्ती' सही घटनाओं पर आधारित कहानी है "बिना बताये ज्ञात हो जाता हैं कि देश गाँवों का हैं । पात्रों की कमी होते हुए भी कहानी निर्दोष हैं । पशुओं को पात्र रुप में लिया गया हैं । बिल्ली की इसमें अहं भूमिका हैं ।"[४३] 'परदेशी की एक रात' में स्त्री-पुरुष स्वभाव की एक दूसरे के लिए समर्पण को तुलनात्मक चित्रण उल्लेखनीय हैं –

"चंदा को लगा जैसे चोरी करते रंगे हाथों पकड़ ली गई हो । झट से आँचल से आँसू पोछ लिया और चिपकती हुई बोली-हाँ, जी चाहता हैं आज जी भरकर रोऊँ। ऐ खुशी के आँसू हैं । बादल न जाने कब से मरे-मरे-तुम्हारी बाट देखते रहे । बरसना चाहते रहे । आज ये अपने आप छलक पड़े । तुम्हें पाकर लगता हैं । सारा सुख मिल

गया हैं । तुम्हारे न रहने पर मन न जाने कैसे-कैसे हुआ करता था । बड़े निर्मोही हो जाते हो । जाने के बाद भूल जाते हो । चिट्ठी-चौपाती भी नहीं भेजते कि पढ़कर जी को तसल्ली मिलती । तुम्हें क्या पता बिना पानी की मछली की तड़प । तड़पने के साथ और भी यातनाएँ झेलती । मेरा घूमना-फिरना दूभर हो गया था । लोग मुझे सुनाकर गाने गाते-परदेशी न आए नयना तरसे......।"[४४]

'तमाशा' कहानी वातावरण प्रधान हैं । कहानी पाठक के मन को छूती हैं और आत्म चिंतन हेतु सजाग भी करती हैं ।

"पूरा संसार किसी न किसी रुप में दर्शक हैं । हर दर्शक अपने-अपने तौर तरीकों में एक तरफ खेल और मौत का तमाशा देखते हैं । दूसरी तरफ तमाशा का मुख्य पात्र बना वह व्यक्ति समाज के समक्ष अपनी मजबूरी और लाचारी को भी दर्शाता है । पापी पेट का सवाल है ।"[४५]

'भीड़' कहानी संस्कृति और सभ्यता को जाहिर करती है – " वाह रे भगत! कपड़े उतारे हैं । जूता चूतर के नीचे हैं । कहते हैं भरभ्रष्ट कर दिया ।"[४६]

'तमाशा' रोजी - रोटी की तलाश में जोखमी कार्य करते व्यक्ति की एक बिल्कुल भिन्न तरह की कहानी हैं – "बस तमाशा देखने के लिए भगवान ने हमें बनाया हैं । भगवान ने ही कहा तू ऐसा कर-मर ! भगवान ने ही उसे रोक दिया होगा कि तू हाथ में रबड़ दस्ताने पहनकर मत चढ़ना । क्या पता उसने भगवान की मरजी से वैसा किया था अपनी मरजी से । उसने जो भी किया, पर तमाशाबीन बने जो लोग देखते रहे, वो किसकी मरजी से देखते रहे ।"[४७]

'दोस्ती' कहानी में रानो की माँ कहती हैं कि – " घर में बिल्ली का मरना बड़ा पाप माना जाता हैं ।"[४८] लेकिन राजो खुशी से नाच रही थी । उसे मजा आ रहा था। सच ही कहा हैं चिरई का जीव जाये बच्चों का खिलौना ।

'विद्यार्थी और अध्यापक' में लेखक ने अध्यापक की मानसिकता का वर्णन किया हैं । वे छात्रों से पाठ्यपुस्तक देने के लिए पैसे लेते हैं, लेकिन देते नहीं । समय अपने गति से बीतता रहा । तिमाही परीक्षा हो गई । छमाही परीक्षा भी समाप्त हो गई । छात्र आँखे बिछाये बैठे थे कि अब वर्षा होगी, तब वर्षा होगी, पर मास्टर साहब ने कापियाँ नहीं माँगा । मास्तर साहब जैसे कापियाँ देना ही भूल गये थे ।

'झगड़ा' कहानी में 'अरे मैं तो उसे अपना सम्बन्धी समझकर छोड़ दिया वरना .... देखना कल उससे बदला लूँगा और मजा चखाऊँगा । लड़के उसकी खोखली बात पर खड़खड़ाकर हँस पडे । क्योंकि मार का पीछा अक्सर सूना होता हैं । अब वह उस शरारती का बाल भी बाँका नहीं कर सकेगा । जब हम लोगों के रहते हुए वह उसे एक तमाचा मार नहीं सका तो अकेले क्या करेगा ।' तो, 'शान की खातिर' कहानी में "राजन मारे शर्म के जमीन में धँसा जा रहा था। उसकी सारी शान मिट्टी में मिल गई । नरेश चाहता तो राजन को चोट पहुँचा सकता था। किन्तु उसने वैसा कुछ नहीं किया । चाकू ले जाकर आफिस में प्रिंसिपल के पास जमा कर दिया "[४९]

शहरी परिवेश की कहानियों के साथ न तो कोमलता हैं और न कार्य-व्यवहार में किसी तरह की ठिठकन । वहाँ व्यक्ति अकेला है, तो उसके निर्णय में अकेली सोच, अकेली मान्यता और अकेली जरुरतें हैं । उसके त्वरित निर्णयों और परिवर्तनों में उस आदिम भूख की भूमिका सर्वोपरि हैं जो उसे आदमी से जोड़ने और एक व्यवस्थित जिन्दगी पाने के लिए भीतर ही भीतर तड़पाती हैं । उसका गुस्सा, बिखराव, खुरदुरापन, आक्रोश तथा अमर्यादित व्यवहार उस तृष्णा की अतृप्ति के कारण हैं । उसके व्यवहार प्रदर्शन में उसकी कुठाएँ भी हैं, और उन व्यवस्थाओं के खिलाफ उसका एकाकीपन वाला विद्रोह भी जो उसकी ऐसी स्थिति के लिए जिम्मेदार है । सेक्स और गालियाँ-चलायमान अर्थो में अश्लीलता, उसकी स्वाभाविक दैहिक भूख से तो उत्पन्न हैं ही, सभ्य समाज उसे फूहड़पन ही कह लें, वह उसके विरोध का तरीका भी हैं । क्योंकि अश्लील गालियाँ अपने गुस्से को ही व्यक्त नहीं करती, जिसको दी जा रही, उसकी अस्मत पर हमला बोल देने का सन्तोष भी देती हैं । निरीह प्राणी गाली को हथियार के तौर पर इस्तेमाल करता है ।

ग्रामीण परिवेश यादवजी का अपना था । अपने खून और सांसो में रचा-बसा। एक ऐसा वातावरण जिसे वे जन्म से ही जानते थे । निश्चित रुप से उसमें उनकी अपेक्षाएँ भी रही होंगी, तो कुछ पूर्वाग्रह भी रहें होंगे । उस परिवेश की रचनाओं के उनसे पार पाने का एक प्रयास-एक आग्रह भी दिखाई देता हैं । शहर के मील-कारखानें उन्होंने बहुत बाद के एक रचनात्मक दृष्टि पा लेने के बाद देखा । उसे नजदीक से देखा ही नहीं भोगा भी । उसने उन्हें चौकाया । एक ऐसी दुनिया के दर्शन कराये जहाँ भूख थी, अपमान था, तिरस्कार था । उसे आदमियों का समाज मानने की परपाटी ही नहीं थी । यहाँ उनका कहानीकार ज्यादा सजाग हो गया । उन अधूरे प्रसंगों और प्रश्नों को उठाकर एक तरह से वे अपनी कहानियों के माध्यम से उस वर्ग की वकालत करने लगे । उन्होंने लिखा

भी हैं– "आंचलिक घटनाओं को कही इस जीवंत चित्र का अनुभव करते है, तो कहीं कारुण्य जीवन की स्थितियों के स्वयं गवाह बन जाते है, और प्रान्त का पूर्वी प्रदेश आज भी वैसी स्थिति में है जैसा आजादी के पूर्व था । इस सत्य का प्रतिपादन कहानियों के चरित्रों के जरिये यादवजी ने बखूबी किया है ।"[५०]

यादव जी की कहानियों का उद्देश्य :

कहानी शिल्प का महत्त्वपूर्ण भाग है । कहानीकार का जीवन दर्शन जिसे हम कहानी का उद्देश्य भी कह सकते हैं, यह निर्विवाद रुप से माना जाता हैं कि कहानियाँ कभी उद्देश्यहीन नहीं हो सकती हैं । वे किसी न किसी उद्देश्य को सामने रखकर लिखी जाती हैं । कहानीकार का उद्देश्य समाज – सुधार, मनोरंजन, सिद्धांतों का प्रचार या फिर किसी यथार्थ का परिचय कराना, किसी चरित्र का विश्लेषण करना या वातावरण का निर्माण आदि हो सकता हैं । समाज के स्त्री – पुरुष, उनके आपसी सम्बन्धों, विचारों, अनुभवों, इच्छाओं, सफलता, संघर्ष या उपलब्धियों का निरुपण कहानीकार करता हैं । आधुनिक कथाकार के लिए ये स्थितियाँ कल्पनात्मक नहीं हैं, किन्तु स्वयं की भोगी हुई हैं या देखी हुई हैं । सामाजिक परिस्थितियों से कहानीकार प्रभावित होता हैं । अपने अनुभवों से निष्कर्ष निकालता हैं और विचार या उद्देश्य का रुप, निर्धारित करता हैं, जिसे हम जीवन दर्शन कहते हैं। बिल्कुल उसी तरह जैसे-कुम्हार मिट्टी को गुंढ़ता हैं, उसे चाक पर चढ़ाता हैं और अपने हाथों से मन में छिपी आकृति को साकार करता हैं ।

यादव जी की कहानियों का उद्देश्य हैं – विभिन्न मानसिक ग्रंथियो से कुंठित चरित्रों का विश्लेषण करना, गाँव के अपने अनुभवों और गुजरात में अपने जिए भोगे की रचनात्मक रुप दिया, वे घर – परिवार एवं सन्निकट सदस्यों के बीच से कहानी संरचना के लिए मसाले चुनते हैं । उनकी कहानियों के कई पात्र ऐसे हैं जो किसी प्रकार के वैयक्तिक पारिवारिक या आर्थिक दबाव तथा सामाजिक विसंगतियों के कारण कुंठित हुए हैं । जैसे– 'कच्चा घर' के काका, 'हमजोली' का भोला, 'बच्चे का बाप कौन' का दहबंगी 'इस्तीफा' का शीतल, चंदन आदि । विभिन्न प्रकार की कुंठाओं से ग्रस्त हैं । उनके कुठाओं से युक्त व्यक्तित्व का मनोवैज्ञानिक निरुपण हुआ हैं । ईख की कहानी की नायिका देसुई अपने हक के लिए संघर्ष करती है । वह सीधे पति को दबाकर उसका हिस्सा, जमीन, घर-द्वार लेने के लिए लोभिष्ट स्वार्थी सगों के सामने आवाज बुलंद करती हैं । नारी को अपने हक के लिए लड़ने के लिए मनोबल एवं निष्ठा और सत्य का सम्बल लेना पडता हैं । यही इस कहानी का उद्देश्य हैं । देसुई की दृढ़ता, वीरता मन को उत्तेजित एवं प्रफुलित करती है ।

यादवजी ने अपनी कहानियों के माध्यम से पारिवारिक, सामाजिक, राजनैतिक, दाम्पत्य जीवन सम्बन्धी तथा सामान्य जीवन से सम्बन्धित समस्याओं का निरुपण किया हैं। कथा साहित्य में सामान्य समाज को 'शोषण का प्रतीक' के रुप में ही देखा गया हैं । किन्तु यादव जी ने उसे स्वाभाविक मानव के रुप में निरुपित किया हैं । यहाँ सामान्य पात्र के मन की गहराई में जाकर भाव सत्यों को खोजकर अंकित किया गया हैं । उनकी कहानियों में धार्मिक, सामाजिक, राजनैतिक व पारिवारिक विसंगतियों पर कसकर व्यंग्य किया गया हैं तथा हमारे जीवन के वर्णो की सड़न की निर्भय आलोचना हुई हैं ।

जो गाय विष्ठा भी खा लेती हैं, उसका हम पूजन करते हैं । प्रहरी के रुप में बड़े-बड़े क्षत्रिय स्वानों को पालते हैं । चूहों को खाने के पश्चात बिल्ली मुखमार्जन कर हमारा दूध, दही नहीं खाती ? उसे भगाकर, रखा हुआ दूध, दही उसका उच्छिष्ट हम खाते हैं । पर मनुष्य..... मनुष्य को हमने पशुओं से निकृष्ट ऐसे-वैसे पशुओं से नहीं निकृष्ट से निकृष्ट पशु-कुत्ते बिल्लियों से भी निष्कृष्ट मान लिया हैं । इस बात का चित्रण यादव जी ने 'दोस्ती' और 'हेठी' कहानी में बताया हैं ।

उसका मानना हैं कि साहित्य और कला अन्ततः ये मानव जीवन के संवाहक हैं। जितने संश्लिष्ट और गहरे मानवीय संवेदन, संघर्ष तथा विचारों को हम सम्प्रेषित करना चाहते हैं, उस कोटि की भाषा और शिल्प को भी हमें अर्जित करना होता हैं । अपनी पडताल स्वयं करने की बात करते हुए मेरा यह मन्तव्य कतई नहीं हैं कि व्यक्ति दूसरो से न सीखे । अपने आपको तौलने में गड़बड़ी जहाँ हुई, वहीं आदमी दूसरों की धारणाओं का भी आखेट हो जाता हैं । जिस उम्र में बुद्ध, बुद्ध हो गये, उतनी उम्र तक बाबा तुलसीदास भाड़-झोक रहे थे । और जिस उम्र में बाबा तुलसी ने रचना की उससे भी ज्यादा उम्र तक असंख्य लोग सिर्फ भाड़ ही झोंकते रहते हैं ।

" कागज आदमी का खुला खेत हैं । इतिहास साक्षी हैं कि आदमी की नस्ल का सबसे प्रामाणिक दस्तावेज साहित्य रहा हैं । दुनिया के श्रेष्ठत्तम आदमी वे हैं, जिन्हें कवियों के द्वारा कागज पर उगाया गया हैं ।"[५१] 'पल भर का सफर' कहानी मनोवैज्ञानिक शैली में लिखा गया हैं । मात्र बातों ही बातों मे लेखक सुपरमैन की तरह पंख लगाकर मनोवैज्ञानिक शैली द्वारा लालकिला, कांकरिया तालाब, प्राणी संग्रहालय भी पत्नी को घुमा लाता हैं ।

'सिंह के बेटे उर्फ ईन्टरव्यू एवं नाटक' कहानी एक व्यंग्यपरक यथार्थ हैं जो नाट्यात्मक शैली द्वारा अभिव्यक्त हुई हैं । अहमदाबाद महानगर में हुए एक साक्षात्कार की जीवंत कथा हैं।

आज साहित्य समाज और राष्ट्र में साक्षात्कार के नाम पर जो नाटक, सोदेबाजी, धोखेबाजी की जा रही हैं, उसका यथार्थ चित्र इस कहानी में नाटकीय ढ़ंग से प्रस्तुत किया हैं ।

'लीलार' कहानी काव्यात्मक शैली में लिखी गई हैं । यह कहानी कला का नया रुप हैं । यथा- "कुंए की लिलार ऊँची हो तो लोग कुंए में न गिरे, व्यक्ति का लीलार ऊँचा हो तो वह कठिनाइयों का सामना बहादुरी से कर लेता हैं ।"[५२]

यादव जी के कहानियों की भाषा - शैली :

भाषा व शैली कहानी के प्राण तत्व हैं । शैली लेखकीय व्यक्ति का प्रतिबिम्ब होती हैं । शैली मुख्यतः वर्णात्मक, आत्म-कथानक, डायरी, पत्र, फ्लेशबेक, नाट्यात्मक, मनोविश्लेषणात्मक, संवादात्मक, काव्यात्मक आदि इन सभी शैलियों का समुचित उपयोग किया जाता हैं । यद्यपि वर्णात्मक पद्धति सर्वाधिक प्रयुक्त हुई हैं । उनकी भाषा के सौन्दर्य मे उपमाओ का प्रयोग बेजोड़ है, जो रचना के अर्थ में दोहे जैसी गहराई भर देते हैं । जैसे — "डागडर - फागड़र न जाने कैसे हो । पैसा आकर मांगे । न मिले तो जिन्दा मार दे ।"[५३]

यादव जी की कहानियों की एक और खासियत हैं, उनकी बेहद संवेदनशील भाषा। उनके पास एक ऐसी समर्थ भाषा हैं, जो कहीं अटकती नहीं हैं । किसी भी भाव का चित्रण करने में भाषा बहती चली जाती हैं । यह एक ऐसी भाषा हैं, जिसमें उन्होंने जीवन के मीठे-तिक्त अनुभवों से सीधे - सीधे कमाया हैं । इसलिए ऐसा कहीं नहीं लगता कि जो वह कहना चाहते हैं, कह नहीं पाये । बल्कि अक्सर वह हमारे समक्ष बहुत थोड़े ही शब्दों में पूरा दृश्य उपस्थिति कर देते हैं जैसे एक कहानी में किसान के जीवन का चित्र उन्होंने यों खींचा हैं—

"खेती भगवान की देन हैं । भगवान की दी हुई जमीन, पानी, हवा, प्रकाश पर किसी का हक नहीं होता । जब तक शरीर में प्राण हैं, यह जमीन अपनी हैं । खेती हमारा जीवन हैं । जीवन का इस्तीफा नहीं देना चाहिए ।"[५४]

भाषा-शैली की जीवंतता परिवेश के साथ जुड़े रहना माटी के प्रति अगाद्य प्रेम ही उनकी कहानियों को प्रवाहमय एवं जीवंत बनाता हैं ।

श्रीमती कांति अय्यर के शब्दों में कहे तो— "यादव जी भाषा-भावों के डॉक्टर हैं, यह मानना पड़ेगा ।"[५५]

'दूसरा सफर' कहानी में यादव जी झूले में हिचकोले खाते नजर आते हैं । एक वैग में गाँव परिसर, दूसरे वैग में ट्रेन का कम्पार्टमेन्ट । समग्र रुप से देखें तो यह कहानी दिलचस्य और भाषा - शैली इतनी रोचक लगने लगती हैं कि पाठक भी उसी कम्पार्टमेंट में बैठा सफर करते हुए वह सब देख रहा होता है ।

'दूसरा सफर' कहानी मानव-जीवन की संवेदनात्मक अनुभूतियों को स्पर्श करते हुए अपनी अलग एक पहचान व शैली को मिशाल हैं । शहर और गाँव के बीच आज के इँसान की जिंदगी खण्डित बिम्ब का आकार धारण कर चुकी हैं । वह गाँव का अतीत छोड़ नहीं सकता । शहर परदेश लगता हैं । अतः जीवन सफर दूसरा सफर लगता हैं ।

यादवजी की भाषा चित्रात्मक, अर्थबोधक, प्रभावात्मक, अलंकृत व मुहावरों तथा प्रवलता से युक्त हैं । उनकी भाषा-शैली में कसावट और नयापन हैं । किन्तु कहीं कहीं अश्लील और गाली-गलौच वाली भाषा का प्रयोग किया गया हैं । जटिल से जटिल अनुभूति को भी शिष्ट व साधारण भाषा में अभिव्यक्त किया गया हैं ।

शैली की दृष्टि से यादव जी ने मुख्यतः वर्णनात्मक शैली अपनाई हैं । प्रभावपूर्ण वर्णन किसी भी साहित्यकार की सफलता की कसौटी होता हैं । उनके कथा साहित्य में वर्णन-कौशल का उत्कृष्ट उदाहरण देखने को मिलता हैं । आवश्यकता अनुसार इस शैली में विश्लेषणात्मक रिपोर्ताज एवं कमेंट्री का पुट दिया हैं । जहाँ भावुकता की प्रधानता हैं वहाँ शैली संस्मरण के निकट चली गई हैं । कहीं - कहीं आत्म कथानक, कथन पद्धति से पाठकों को सहज आत्मीयता स्थापित की हैं । नये शैली रुपों में पत्रात्मक, पूर्व दीप्ति, चेतना प्रवाह एवं मनोविश्लेषणात्मक आदि शैलियों का सफल निर्वाह किया हैं । बात को प्रभावी बनाने एवं उसमें व्यंजना लाने के लिए व्यंग्यात्मक शैली का स्पर्श किया हैं। कहानी कथन में गीत-शैली का प्रयोग करके उन्होंने अपनी प्रयोग धार्मिकता सिद्ध की हैं। उनकी शैली को किसी एक ढाँचे में बाँधकर रखना कठिन हैं । वास्तव में उन्होंने मिली जुली संश्लिष्ट शैली का प्रयोग किया हैं ।

इस प्रकार तात्विक विश्लेषण के उपरांत हम कह सकते हैं कि कहानी कला की दृष्टि से यादव जी की कहानियों सशक्त और सफल बन पड़ी हैं । कहानीकार के रुप में उनकी प्रतिभा सूझबूझ और योगदान को प्रायः सभी विद्वान-आलोचकों ने बार-बार सराहा हैं । प्रेमचन्द के बाद सबसे बड़ा कथा संसार इन्हीं के पास हैं । डॉ. माया प्रकाश पाण्ड़ेय यादव जी के बारे में लिखते हैं कि –

"यह कहना तनिक मुश्किल होगा कि वे पहले कवि हैं या कथाकार । क्योंकि दोनों क्षेत्रों में उन्होंने इतनी समृद्ध रचनाएँ प्रदान की हैं कि उन्हें किसी एक कोटि में रख पाना कठिन हैं । इसलिए मैं उन्हें कवि, कथाकार की श्रेणी में न रखते हुए साहित्यकार की कोटि में रखना चाहूँगा ।"[५६]

यादवजी वाकई एक उत्तम कहानीकार हैं । उनकी दृष्टि जहाँ पड़ती हैं, उन्हें वही एक नई कहानी मिल जाती हैं । ये ऐसे प्यासे कथाकार हैं कि पानी स्वयं बहकर उन्हें तृप्त करने आ जाता हैं । वे मृग जल के पीछे नहीं भागते हैं ।

श्रीमती कांतिजी ने ठीक ही कहा हैं –

"यादवजी की संवाद योजना और प्रभावात्मक स्वर – तयकर संयोजनबद्ध हैं । यादवजी की वर्णनात्मक कौशल्य भी दाद देने योग्य होती हैं । ऐसा हू-ब-हू चित्रांकन करने की क्षमता बहुत कम रचनाकार रखते होंगे ।"[५७]

हिन्दी कहानी के क्षेत्र में प्रेमचन्द की कहानियों में जिस प्रकार का विकास दिखाई पड़ता हैं । आजादी के बाद के कथाकारों में विकास का यह सूत्र केवल यादव जी में नजर आता हैं । अपनी भेंट वार्ता में जितेन से स्वयं यादव जी कहते हैं कि –

"आँचलिक उपन्यास यथार्थ दस्तावेज ही होता हैं । रही बात भाषा की तो मात्र भाषा से ही आँचलिकता आती हैं ।"[५८]

हिन्दी में सामान्य जीवन पर वगैर किसी शोर-शराबो के कलम चलाने वालों में यादव जी बहुत कम लेखको में से एक हैं ।

डॉ. कु. माया शबनम यादव जी की भाषा शैली के बारे में लिखती हैं कि–

"सूर्यदीन जी भाव व्यंजना के सशक्त कवि हैं । उनकी भावाभिव्यक्ति में भाषा कहीं बाधक नहीं बनती । आँचलिक और खडी बोली से संयुक्त भाषा जगह - जगह पाठकों को बाधा अवश्य पहुँचती हैं । किन्तु यथार्थ की अंजलि में भावों का उमड़ता सागर बरबस खींचकर उन्हें अपने में डुबो लेता हैं ।"[५९]

कहानीकार के रुप में उनकी प्रतिभा, सूझबूझ और योगदान को प्रायः सभी विद्वान-आलोचकों ने बार-बार सराहा हैं । डॉ. कुमारी माया शबनम लिखती हैं कि–

"इस सन्दर्भ में मुझे अनायास हजारी प्रसाद द्विवेदी की वह उक्ति याद आती हैं, जिन्होंने सन्त कबीरदास को भाषा का डिक्टेटर कहा हैं । भाई सूर्यदीन भाषा के डिक्टेटर

तो नहीं किन्तु भावानुभूति की अभिव्यक्ति के डिक्टेटर अवश्य कहे जा सकते हैं । अपनी कच्ची - पक्की, खट्टी-मीठी भावानुभूति से पाठक को घेर लेने में सक्षम हैं, भले ही वह घेरा कच्ची मिट्टी का ही क्यों न हो ।"[६०]

पात्रों ने अंतर्मुखी व्यक्तित्व के साथ-साथ उनके बाह्य कार्य व्यापारों को समतुल्य महत्त्व देने के कारण नये कहानीकारों की तुलना में यादव जी की कला को उत्कृष्ट समझा गया हैं । अपने अंचल के सहज सम्पूर्ण तथा काव्यात्मक प्रस्तुतीकरण के लिए ही प्रसिद्ध समीक्षक डॉ. माया प्रकाश पाण्डेय जी ने कहा हैं कि –

" डॉ. सूर्यदीन यादव हिन्दी साहित्य के जाने-माने साहित्यकार हैं । उन्होंने हिन्दी साहित्य को जो योगदान दिया उसे इतिहास कभी विस्मृत नहीं कर पायेगा ।"[६१]

यादवजी के पास अनुभव, कहानी कहने की कला, लोक कथाओं को गूँथने का मुहावरा कहीं भी रेणु से कम नहीं हैं। बल्कि रेणु में जहाँ कलात्मक तलाश और मध्यमवर्गीय समनीयत को रास आने वाली सौंदर्य चेतना हैं, वहाँ यादव जी में जमीनी ऊर्जा और चरित्रों की बीहड़ जीवंतता हैं । प्रेमचन्द के बाद ऐसे कथा लेखक हमारे यहाँ उंगलियों पर गिने जा सकते हैं, जिनका लेखन सीधे-सीधे उनके निजी संघर्षो और ताप से निकला हैं । और ऐसे तो और भी कम हैं, जिन्होंने कहानी और उपन्यास दोनों ही लिखे और दोनों ही विद्याओं में पूरी ताकत और उस्तादाना कला सामर्थ्य के साथ मौजूद हैं । सच तो यह हैं कि –

यादव जी ने ग्राम्य जीवन को बहुत नजदीक से देखा - परखा और उस वातावरण को आत्मसात भी किया हैं, ग्रामीण जीवन को भरपूर जिया हैं । यही कारण हैं कि इनकी रचनायें यथार्थ को उजागर करने में समर्थ हैं । श्रीमती कांति अय्यर इनके बारे में लिखती हैं कि "यादवजी लोकमानस यानी ग्रामीण जीवन शैली के गहन अध्ययनसायी लेखक हैं। उनमें मनोविज्ञान का ज्ञान पात्रों में गूहय मर्म को भेदने की शक्ति हैं । यही कारण हैं कि पात्रों के संवाद स्वाभाविक मानव स्वभाव को प्रभावित करते हैं ।"[६२]

सुदर्शन मजीठिया, अशोक शाह नागर, सुधा श्रीवास्तव, शर्मा और पंडित के बाद यादव जी जैसे-संवेदनात्मक विस्तार वाले शक्तिशाली रचनाकार के जोड़ के लेखक शैली और भाषा की दृष्टि से बहुत कम नजर आयेंगे ।

कथा साहित्य में पात्रों के माध्यम से यथार्थ सजीवता एवं जीवंतता निर्माण की जाती हैं । यादव जी अपने चरित्रों को बहिरंग, अंतरंग एवं नाटकीय शैली के समन्वय

से जीवंत बनाया हैं । वह इस तथ्य से भली-भांति परिचित थे कि व्यक्ति का ब्राह्य आचरण उसकी आंतरिक तृप्तियों से संचालित होता हैं । अतः उन्होंने आत्मविश्लेषण एवं अन्तर्द्वन्दों का भी विश्वसनीय चित्रण किया हैं ।

भाषा की दृष्टि में उनका साहित्य खड़ी बोली में लिखा गया हैं किन्तु उसमें तत्सम शब्दों का गाम्भीर्य, तद्भव, देशज, आँचलिक, प्रांतीय एवं विदेशी शब्दों की स्वाभाविकता, सहजता एवं सरलता हैं । मुहावरों, लोकोक्तियों और सूक्तियों का सहज उपयोग करने में उनकी कुशलता सराहनीय हैं । उनकी भाषा सहज प्रतीकों और संकेतो के सहारे सूक्ष्माति सूक्ष्म भावों एवं विचारों को कलात्मक ढंग से रुपायित करने में समर्थ हैं । दृश्य बिम्बों के प्रयोग से उसमें चित्रात्मक्ता आ गई है । उसमें काव्यात्मक्ता हैं और आलंकारिक सौन्दर्य देखते ही बनता हैं । उन्होंने अपनी सधी हुई लेखनी, एवं मझी हुई भाषा द्वारा साहित्य को नई गति एवं दिशा प्रदान की हैं । उनकी भाषा शैली में जो प्रवाह, शक्ति एवं नुकीलापन हैं, वह कम ही देखने को मिलता हैं ।

• • •

<u>**संदर्भसूचि**</u>

कृति का नाम		पृष्ठ सं
१.	आँचलिक कथासर्जक सूर्यदीन यादव सं. श्रीमती कांति अय्यर	१०३
२.	चित्रित नवीन कहानियाँ सं. डॉक्टर सूर्यदीन यादव	०१२
३.	चित्रित नवीन कहानियाँ सं. डॉक्टर सूर्यदीन यादव	०२९
४.	पहली यात्रा कहानी संग्रह सं. डॉक्टर सूर्यदीन यादव	०६०
५.	पहली यात्रा कहानी संग्रह सं. डॉक्टर सूर्यदीन यादव	१२१
६.	पहली यात्रा कहानी संग्रह सं. डॉक्टर सूर्यदीन यादव	१२१
७.	वह रात कहानी संग्रह सं. डॉक्टर सूर्यदीन यादव	०१०
८.	वह रात कहानी संग्रह सं. डॉक्टर सूर्यदीन यादव	०१०
९.	वह रात कहानी संग्रह सं. डॉक्टर सूर्यदीन यादव	०१४
१०.	वह रात कहानी संग्रह सं. डॉक्टर सूर्यदीन यादव	०१७
११.	वह रात कहानी संग्रह सं. डॉक्टर सूर्यदीन यादव	०१८
१२.	वह रात कहानी संग्रह सं. डॉक्टर सूर्यदीन यादव	०२८
१३.	वह रात कहानी संग्रह सं. डॉक्टर सूर्यदीन यादव	०२९
१४.	वह रात कहानी संग्रह सं. डॉक्टर सूर्यदीन यादव	०३७

१५.	वह रात कहानी संग्रह सं. डॉक्टर सूर्यदीन यादव	०५४
१६.	वह रात कहानी संग्रह सं. डॉक्टर सूर्यदीन यादव	०६१
१७.	वह रात कहानी संग्रह सं. डॉक्टर सूर्यदीन यादव	०६८
१८.	वह रात कहानी संग्रह सं. डॉक्टर सूर्यदीन यादव	०८४
१९.	वह रात कहानी संग्रह सं. डॉक्टर सूर्यदीन यादव	०८४
२०.	दूसरा सफर कहानी संग्रह सं. डॉक्टर सूर्यदीन यादव	०११
२१.	दूसरा सफर कहानी संग्रह सं. डॉक्टर सूर्यदीन यादव	०१३
२२.	दूसरा सफर कहानी संग्रह सं. डॉक्टर सूर्यदीन यादव	०१६
२३.	दूसरा सफर कहानी संग्रह सं. डॉक्टर सूर्यदीन यादव	०२५
२४.	दूसरा सफर कहानी संग्रह सं. डॉक्टर सूर्यदीन यादव	०२९
२५.	दूसरा सफर कहानी संग्रह सं. डॉक्टर सूर्यदीन यादव	०३३
२६.	दूसरा सफर कहानी संग्रह सं. डॉक्टर सूर्यदीन यादव	०३५
२७.	दूसरा सफर कहानी संग्रह सं. डॉक्टर सूर्यदीन यादव	०३८
२८.	दूसरा सफर कहानी संग्रह सं. डॉक्टर सूर्यदीन यादव	०५८
२९.	दूसरा सफर कहानी संग्रह सं. डॉक्टर सूर्यदीन यादव	०६२
३०.	दूसरा सफर कहानी संग्रह सं. डॉक्टर सूर्यदीन यादव	०६७
३१.	दूसरा सफर कहानी संग्रह सं. डॉक्टर सूर्यदीन यादव	०८०

३२.	दूसरा सफर कहानी संग्रह सं. डॉक्टर सूर्यदीन यादव	०९५
३३.	दूसरा सफर कहानी संग्रह सं. डॉक्टर सूर्यदीन यादव	१०२
३४.	दूसरा सफर कहानी संग्रह सं. डॉक्टर सूर्यदीन यादव	१०४
३५.	दूसरा सफर कहानी संग्रह सं. डॉक्टर सूर्यदीन यादव	११२
३६.	साहित्यिक समस्याएँ सं. प्रेमचन्द	०४५
३७.	साहित्यिक निबंध सं. स्वामी शरण	३२२
३८.	आँचलिक कथा सर्जक सूर्यदीन यादव सं. श्रीमती कांति अय्यर	०७७
३९.	पहली यात्रा कहानी संग्रह सं. डॉ. सूर्यदीन यादव	०६१
४०.	वह रात कहानी संग्रह सं. डॉ. सूर्यदीन यादव	०३०
४१.	कथाकार सूर्यदीन यादव सं. डॉ. मायाप्रकाश पांडे/डॉ. दयाशंकर त्रिपाठी	०३६
४२.	वह रात कहानी संग्रह सं. डॉ. सूर्यदीन यादव	०६२
४३.	वह रात कहानी संग्रह सं. डॉ. सूर्यदीन यादव	०६१
४४.	कथाकार सूर्यदीन यादव सं. डॉ. मायाप्रकाश पांडे/डॉ. दयाशंकर त्रिपाठी	०२०
४५.	कथाकार सूर्यदीन यादव सं. डॉ. मायाप्रकाश पांडे/डॉ. दयाशंकर त्रिपाठी	०२४
४६.	वह रात कहानी संग्रह सं. डॉ. सूर्यदीन यादव	०१०
४७.	चित्रित नवीन कहानियां सं. डॉ. सूर्यदीन यादव	०२२
४८.	चित्रित नवीन कहानियां सं. डॉ. सूर्यदीन यादव	०१२

४९. चित्रित नवीन कहानियां सं. डॉ. सूर्यदीन यादव ०३४

५०. कथाकार सूर्यदीन यादव सं. डॉ. मायाप्रकाश पांडे/डॉ. दयाशंकर त्रिपाठी ०३१

५१. सृंजन मूल्यांकन पत्रिका सं. स्वामीशरण १८६

५२. चित्रित नवीन कहानियां सं. डॉ. सूर्यदीन यादव ०८०

५३. पहली यात्रा कहानी संग्रह सं. डॉ. सूर्यदीन यादव ००९

५४. पहली यात्रा कहानी संग्रह सं. डॉ. सूर्यदीन यादव ०८२

५५. आँचलिक कथा सर्जक सूर्यदीन यादव सं. श्रीमती कांति अय्यर ०७६

५६. लोकजीवन के कवि सूर्यदीन यादव सं. ईश्वरसिंह चौहान/अरुण आर्य ०८३

५७. आँचलिक कथा सर्जक सूर्यदीन यादव सं. श्रीमती कांति अय्यर ०८४

५८. आँचलिक कथा सर्जक सूर्यदीन यादव सं. श्रीमती कांति अय्यर ११२

५९. लोकजीवन के कवि सूर्यदीन यादव सं. ईश्वरसिंह चौहान/अरुण आर्य ०३४

६०. लोकजीवन के कवि सूर्यदीन यादव सं. ईश्वरसिंह चौहान/अरुण आर्य ०३४

६१. लोकजीवन के कवि सूर्यदीन यादव सं. ईश्वरसिंह चौहान/अरुण आर्य ०६२

६२. साहित्य परिवार पत्रिका अंक-२ सं. सूर्यदीन यादव ०६५